हिंदी

कक्षा – 7

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

www.rajteachers.com

संस्करण : 2016

© राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

मूल्य :

पेपर उपयोग : आर. एस. टी. बी. वाटरमार्क
80 जी. एस. एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशक : राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
2–2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।
- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोगः
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

www.rajteachers.com

प्राक्कथन

बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन होना जरूरी है, तभी विकास की गति तेज होती है। विकास में सहायक कई तत्वों के अलावा शिक्षा भी एक प्रमुख तत्व है। विद्यालयी शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ्यचर्या को समय–समय पर बदलना एक आवश्यक कदम है। वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण क्रियाओं में 'विद्यार्थी' केन्द्र के रूप में है। हमारी सिखाने की प्रक्रिया इस प्रकार हो कि विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर समझ कर ज्ञान का निर्माण करे। उसके सीखने की प्रक्रिया को ज्यादा से ज्यादा स्वतंत्रता दी जाए, इसके लिए शिक्षक एक सहयोगी के रूप में कार्य करे। पाठ्यचर्या को सही रूप में पहुँचाने के लिए पाठ्यपुस्तक महत्त्वपूर्ण साधन है। अतः बदलती पाठ्यचर्या के अनुरूप ही पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन कर राज्य सरकार द्वारा नवीन पाठ्यपुस्तक तैयार कराई गई है।

पाठ्यपुस्तक तैयार करने में यह ध्यान रखा गया है कि पाठ्यपुस्तक सरल, सुगम, सुरुचिपूर्ण, सुग्राह्य एवं आकर्षक हो, जिससे विद्यार्थी सरल भाषा, चित्रों एवं विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इनमें उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात् कर सकें। साथ ही वह अपने सामाजिक एवं स्थानीय परिवेश से जुड़े तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव, संवैधानिक मूल्यों के प्रति समझ एवं निष्ठा बनाते हुए एक अच्छे नागरिक के रूप में अपने आप को स्थापित कर सके।

शिक्षकों से मेरा विशेष आग्रह है कि इस पुस्तक को पूर्ण कराने तक ही सीमित नहीं रखें, अपितु पाठ्यक्रम एवं अपने अनुभव को आधार बनाकर इस प्रकार प्रस्तुत करें कि बालक को सीखने के पर्याप्त अवसर मिलें एवं विषय शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.) उदयपुर पाठ्यपुस्तक विकास में सहयोग के लिए उन समस्त राजकीय एवं निजी संस्थानों, संगठनों यथा एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, राज्य सरकार, बिहार सरकार, उत्तराखण्ड सरकार, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर, विद्याभवन उदयपुर का पुस्तकालय एवं लेखकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशकों तथा विभिन्न वेबसाइट्स के प्रति आभार व्यक्त करता है जिन्होंने पाठ्यपुस्तक निर्माण में सामग्री उपलब्ध कराने एवं चयन में सहयोग दिया। हमारे प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्था, संगठन और वेबसाइट का नाम छूट गया हो तो हम उनके आभारी रहते हुए क्षमा प्रार्थी हैं। इस संबंध में जानकारी प्राप्त होने पर आगामी संस्करणों में उनका नाम शामिल कर लिया जाएगा।

पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु श्री कुंजीलाल मीणा, शासन सचिव, प्रारंभिक शिक्षा, श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा एवं आयुक्त राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, श्री बाबूलाल मीणा, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, श्री सुवालाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं श्री बी. एल. जाटावत, आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, जयपुर,

www.rajteachers.com

राजस्थान सरकार का सतत् मार्गदर्शन एवं अमूल्य सुझाव संस्थान को प्राप्त होते रहे हैं। अतः संस्थान हृदय से आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनिसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से किया गया है। इसमें सेम्युअल एम., चीफ यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर, सुलग्ना रॉय, शिक्षा विशेषज्ञ एवं यूनिसेफ से संबंधित अन्य सभी अधिकारियों के सहयोग के लिए संस्थान आभारी है। संस्थान उन सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों का, जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य संपादन में सहयोग रहा है, उनकी प्रशंसा करता है।

मुझे इस पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है, साथ ही यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और अध्ययन–अध्यापन एवं विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास की एक प्रभावशाली कड़ी के रूप में कार्य करेगी।

विचारों एवं सुझावों को महत्त्व देना लोकतंत्र का गुण है। अतः राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर सदैव इस पुस्तक को और श्रेष्ठ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करेगा।

निदेशक
राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

www.rajteachers.com

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक : विनीता बोहरा, निदेशक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर

मुख्य समन्वयक : नारायण लाल प्रजापत, उपनिदेशक, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

समन्वयक : दीपिका पंड्या, व्याख्याता, रा.रा.शै.अ.प्र.सं, उदयपुर

लेखकगण : डॉ. विमलेश कुमार पारीक, अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि., तेजावाला, सांगानेर, जयपुर **(संयोजक)**
सीताराम शर्मा, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., लूलवा, मसूदा, अजमेर
विद्याराम गुर्जर, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., केकींदड़ा, पाली
डॉ. मदन गोपाल लढा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., लूणकरनसर, बीकानेर
जगजितेंद्र सिंह, प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि., गेगा का खेड़ा, भीलवाड़ा
डॉ. मूलचंद बोहरा, प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि., सियाणा, बीकानेर
नरेश कुमार जैन, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. कासीमपुर, धौलपुर
डॉ. सुजाता शर्मा, व्याख्याता, रा.उ.मा.वि., चाकसू, जयपुर
रणछोड़ लाल डामोर, व्याख्याता, रा.वरि.उपा.संस्कृत विद्यालय, बडला खेरवाड़ा, उदयपुर
बद्रीविशाल व्यास, प्रधानाध्यापक, रा.उ.प्रा.वि., बड़ाबाग, जैसलमेर
नरेंद्र वासु, वरिष्ठ अध्यापक, रा.मा.वि., जेठवाई, जैसलमेर

आवरण एवं सज्जा : डॉ. जगदीश कुमावत, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

चित्रांकन : योगेश अमाना, अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि, उपली ओड़न, नाथद्वारा

तकनीकी सहयोग : हेमन्त आमेटा, व्याख्याता, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : सिमेटिक्स माइनिंग प्रा.लि., देहरादून, (उत्तराखण्ड)

नि:शुल्क वितरण हेतु

www.rajteachers.com

शिक्षकों से...

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुःगुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुःसाक्षात् परब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

समय के साथ बदलाव स्वाभाविक है। समय–समय पर आए शैक्षिक सुधारों के सुझावों को ध्यान में रखते हुए यह पुस्तक तैयार की गई है। यह पारंपरिक भाषा शिक्षण की कई सीमा से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। इसलिए पाठ्यसामग्री का चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषाई विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है।

पाठ्यपुस्तक में पाठ्यसामग्री चयन में राजस्थानी परिवेश को प्रधानता दी गई है। सामग्री चयन करते समय संवैधानिक मूल्यों, जेंडर संवेदनशीलता, विशेष योग्यजन, स्वच्छता, स्वास्थ्य आदि मुद्दों को भी ध्यान में रखा गया है। पाठों के माध्यम से देश भक्ति, जीवदया, जल संरक्षण, प्रकृति प्रेम, मानवीय संवेदना, स्वावलंबन, नैतिक मूल्यों, पर्यावरण संरक्षण आदि को विकसित करने की कोशिश की गई, जिनसे बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सके। पाठ्यपुस्तक में हिंदी की कविता, कहानी, प्रेरक प्रसंग, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, निबंध, व्यंग्य, जीवनी, एकांकी, पत्र, आत्मकथा आदि विधाओं का समावेश किया गया है। बच्चों के स्तर व रुचि को ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध लेखकों–कवियों की स्थापित रचनाएँ ली गई हैं। पाठ्यपुस्तक के प्रति विद्यार्थी के अपनेपन को और सघन बनाने के लिए पाठों के अतिरिक्त रोचक सामग्रियाँ भी दी गई हैं जो बच्चों में पढ़ने के प्रति ललक, पुस्तकालय से जुड़ाव, विद्यार्थी की जानकारी और जिज्ञासा को बढ़ाने वाली हैं जो 'केवल पढ़ने के लिए' शीर्षक से दी गई हैं। उक्त सामग्री मूल्यांकन प्रक्रिया से मुक्त है। शिक्षण के क्रम में पाठ्यसामग्रियों की चर्चा अवश्य की जानी चाहिए।

गतिविधियाँ इस प्रकार से बनाई गई हैं कि जिससे बच्चों को रटने की अपेक्षा समझने, करके सीखने, ज्ञान के अन्य बाह्य स्रोतों (अभिभावक, जन प्रतिनिधि, विषयवेत्ता, पुस्तकालय, समाज, आधुनिक तकनीकी) से सीखने हेतु प्रेरित किया गया है। कई अभ्यास प्रकृति, समाज, विज्ञान, इतिहास आदि विषयों में विद्यार्थी की जिज्ञासा को नए आयाम देते हैं। पाठ पर केंद्रित अभ्यास प्रश्नों में प्रश्नों के विविध प्रकारों का समावेश किया गया है जो जगत को समझने, बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से रूबरू कराने तथा विषयवस्तु को समझने में मदद करते हैं।

'भाषा की बात' में व्याकरण के विभिन्न बिंदुओं को सहज, सरल और व्यावहारिक रूप में बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। साथ ही भाषा की बारीकियों को भी समझाने का प्रयास किया गया है। बच्चे स्वयं रचना कर सकें इसलिए सृजनात्मक गतिविधियों को भी 'सृजन' स्तम्भ में जोड़ा गया है।

www.rajteachers.com

पाठ से आगे विषयवस्तु से संबद्ध अतिरिक्त ज्ञान, ज्ञान को व्यवहार में उतारना, कौशल विकास आदि को समाहित किया गया है। बच्चे को पाठ्यपुस्तक से परे समाज व दुनिया से जोड़ने की कोशिश की गई है। कल्पना, चिंतन, विश्लेषण व निर्णय लेने की क्षमता बच्चे में विकसित हो सके, ऐसी गतिविधियों का भी समावेश है। भाषा के बदलते रूपों का भी परिचय करवाया गया है।

भाषा का दायित्व चिंतन, मनन, विश्लेषण, तर्क, निर्णय लेना आदि कौशल विकसित करना ही नहीं बल्कि नैतिक, चरित्रवान, सुयोग्य नागरिक तैयार करना भी है। इसके लिए पाठ के अंत में एक–दो विचार दिए गए हैं जो एन.सी.एफ की भावनानुसार बहुभाषिकता को बढ़ावा देने एवं विषयों की दीवार को नीचा करने की ओर बढ़ाया गया एक कदम है।

पाठ्यपुस्तक की अपनी सीमाएँ हैं। पाठ्यपुस्तक में दी गई गतिविधियाँ संकेत रूप में हैं। ऐसी गतिविधियाँ और बनाएँ तथा अपने अनुभवों से नई गतिविधियाँ बनाकर बच्चों के ज्ञान को समृद्ध करें। व्याकरण में भाषा का जो बिंदु उठाया गया है, उस बिंदु को शिक्षक पूरा पढ़ाएँ, जैसे– विशेषण के किसी एक भेद पर बात की गई है तो वहाँ विशेषण से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी दी जाए, ऐसी आप से अपेक्षा की जाती है।

आप से अनुरोध है कि इस पाठ्यपुस्तक में किसी प्रकार की त्रुटि अथवा सुझाव ध्यान में आए तो निदेशक, राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर को भिजवाएँ ताकि आगामी संस्करणों को और बेहतर बनाया जा सके।

www.rajteachers.com

अनुक्रमणिका

क्र.स.	पाठ का शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	सादर नमन (कविता)		1
2.	लव–कुश (कहानी)		4
	स्वामी विवेकानन्द (केवल पढ़ने के लिए)		10
3.	इसे जगाओ (कविता)	भवानीप्रसाद मिश्र	11
4.	शरणागत की रक्षा (कहानी)	कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'	14
5.	बेणेश्वर की यात्रा (यात्रा संस्मरण)		19
6.	मित्रता (निबंध)	रामचंद्र शुक्ल	24
7.	बस की यात्रा (व्यंग्य–लेख)	हरिशंकर परसाई	31
8.	चंद्रशेखर आज़ाद (जीवनी)	मन्मथलाल गुप्त	36
	अशफ़ाक उल्ला खाँ का पत्र (केवल पढ़ने के लिए)		42
9.	केवट का प्रेम (कविता)	तुलसीदास	43
10.	छोटा जादूगर (कहानी)	जयशंकर प्रसाद	46
11.	ये भी धरती के बेटे हैं (एकांकी)	ओमप्रकाश आदित्य	52
	सीखना इनसे भी (केवल पढ़ने के लिए)		57
12.	वन–श्री (कविता)	गोपालसिंह 'नेपाली'	58
13.	भारत की मनस्विनी महिलाएँ (पत्र)	सत्यनारायण लाल	62
14.	रक्त और हमारा शरीर (निबंध)	यतीश अग्रवाल	69
	कृमि नियंत्रण कार्यक्रम (केवल पढ़ने के लिए)		75
15.	अरावली की आत्मकथा (आत्मकथा)	शिव मृदुल	76
16.	राजस्थानी काव्य (दोहा, सोरठा)	सूर्यमल्ल मीसण, नानूराम संस्कर्ता, कृपाराम	81
	चेतावणी रा चूंग्ट्या (केवल पढ़ने के लिए)	केसरीसिंह बारहठ	84

www.rajteachers.com

पाठ 1

सादर नमन

जिसने पहला दीप जलाकर
अँधियारे को ललकारा है
उजियारे के उस सपूत को
सादर नमन हमारा है।

जिसने पहला पाँव बढ़ाकर
पथ का रूप सँवारा है
निर्जन वन के उस पथिक को
सादर नमन हमारा है।

जिसने पहला हाथ बढ़ाकर
सबको दिया सहारा है
मँझधारों के उस माँझी को
सादर नमन हमारा है।

जिसने पहला शूल हटाकर
फूलों को सत्कारा है
मानवता के उस माली को
सादर नमन हमारा है।

जिसने पहला तिलक लगाकर
जय का मंत्र उचारा है
मातृभूमि के उस शहीद को
सादर नमन हमारा है।

शब्दार्थ

निर्जन	–	सुनसान, जहाँ लोग नहीं रहते	माँझी	–	केवट, मल्लाह
शूल	–	काँटे	सत्कारा	–	आदर किया, सम्मान किया
ललकारा	–	चुनौती दी	मँझधार	–	बीच धार, प्रवाह के बीच

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. उजियारे का सपूत किसे कहा गया है?
2. मानवता का माली किसे बताया गया है?
3. कविता में किसे नमन किया गया है?

लिखें

उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(सहारा, पहला, जय, तिलक)

1. जिसने .... हाथ बढ़ाकर सबको दिया .... है।
2. जिसने पहला .... लगाकर .... का मंत्र उचारा है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. कवि ने किन–किन को सादर नमन किया है?
2. कविता में कौन–से माँझी को नमन किया गया है?
3. आपके अनुसार इस कविता का 'सादर नमन' के अतिरिक्त और क्या शीर्षक हो सकता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. 'जिसने पहला दीप जलाकर अँधियारे को ललकारा है' यहाँ पहला दीप जलाने से क्या आशय है?
2. 'मानवता का माली' पद में 'माली' शब्द का क्या आशय है?
3. 'पहला शूल हटाकर फूलों को सत्कारा है' का आशय स्पष्ट कीजिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'जिसने सबसे पहले चुनौती स्वीकार कर विजय दिलवाई है, प्राण न्योछावर करने वाले मातृभूमि के उस वीर को हमारा सादर नमस्कार है।' उक्त भाव जिन पँक्तियों में है, उन्हें लिखकर व्याख्या कीजिए।
2. अच्छे कार्य करने वाले व्यक्ति के प्रति हमारी भावनाएँ कैसी होती हैं ? उदाहरण सहित लिखिए।

भाषा की बात

1. कविता में 'सादर' शब्द आया है। सादर शब्द 'आदर' में 'स' जोड़ने पर (स+आदर = सादर) बना है। इसका अर्थ होता है– आदर सहित। नीचे लिखे शब्दों में 'स' जोड़कर नए शब्द बनाइए और उनके

अर्थ लिखिए –

प्रेम, विनय, हर्ष, परिवार, कुशल

2. जिसने पहला पाँव बढ़ाकर पथ का रूप सँवारा है।
वाक्य में रेखांकित शब्द का अर्थ है बढ़ा करके।
जब किसी वाक्य में दो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हों तथा उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले संपन्न हुई हो तो पहले संपन्न होने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है। इसे 'कर' प्रत्यय से पहचाना जाता है।
आप भी कविता में से पूर्वकालिक क्रिया शब्द छाँटकर लिखिए।

पाठ से आगे

1. इस कविता में 'सादर नमन हमारा है' बार–बार आया है। आप किन–किन लोगों के लिए 'सादर नमन हमारा है' लिखना चाहेंगे और क्यों? लिखिए।
2. इस कविता को याद करके बाल–सभा में सुनाएँ।

सृजन

1. कविता में प्रत्येक चरण के अंत में 'सादर नमन हमारा है' लिखा हुआ है। आप भी ऐसे चरण जोड़कर कविता को आगे बढ़ाइए।
2. इसी भाव की कोई अन्य कविता ढूँढ़कर 'मेरा संकलन' में लिखिए।
3. गद्य में कर्ता, कर्म और क्रिया के क्रम को ध्यान में रखा जाता है और पद्य में लय और तुक मिलाई जाती है। गद्य और पद्य में मुख्य रूप से यही अंतर होता है। आप भी दी गई पद्य पंक्तियों को गद्य में बदलकर लिखिए–

(1) हम पंछी उन्मुक्त गगन के पिंजरबद्ध न गा पाएँगे।
(2) हम भारत के भरत खेलते शेरों की संतान से।
(3) सबसे प्यारा जग से न्यारा भारत देश हमारा है।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

मेरे हृदय में केवल एक अभिलाषा बाकी है कि मैं अपनी मातृभूमि का रज कण बनूँ।

पाठ 2

लव-कुश

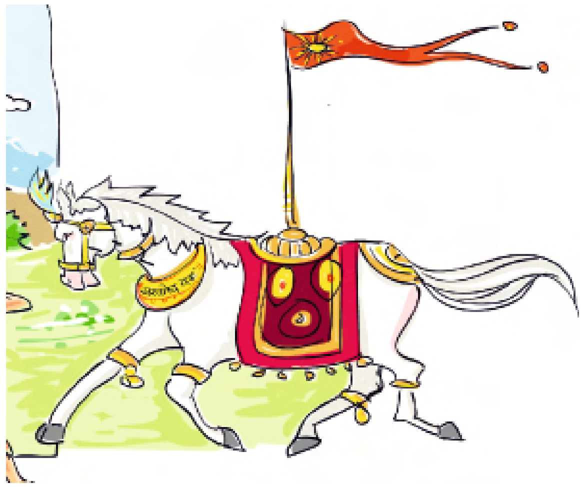

लव और कुश बड़े होनहार बालक थे। उनका जन्म तमसा नदी के किनारे वाल्मीकि आश्रम में हुआ था। वे अपनी माता सीता के साथ इसी आश्रम में रहते थे। बाल्यकाल में स्वयं महर्षि वाल्मीकि ने उनका पालन–पोषण किया तथा उन्हें संपूर्ण विद्याओं का ज्ञान दिया।

लव–कुश में क्षत्रिय के सभी गुण विद्यमान थे। छोटी–सी अवस्था में वे शस्त्र चलाना सीख गए थे। बाण चलाने में तो वे बहुत ही निपुण थे। उनका निशाना अचूक था। वे बड़े वीर और साहसी थे।

गुरु वाल्मीकि उनको नित्यप्रति रामायण की कथा सुनाया करते थे। उन्होंने रामायण की कथा कंठस्थ कर ली थी। रामायण की कथा का गान करना, गुरु की आज्ञा का पालन करना और मुनि कुमारों के साथ खेलना उनका नित्यकर्म था।

एक दिन सीता ने आश्रम के बाहर कुछ शोर सुना तो उस तरफ दौड़ीं। रास्ते में ही कुश मिल गया। उसने उन्हें बताया कि आश्रम में एक सुंदर घोड़ा आ गया है। उसे हमने पकड़ लिया है और एक पेड़ से बाँध दिया है। ''घोड़ा! किसका घोड़ा? यहाँ कैसे आ गया? चल देखूँ तो!'' कहती हुई सीता कुश के साथ उस स्थान पर पहुँची। घोड़ा सोने के आभूषणों से सज्जित था। उसकी गर्दन में एक स्वर्णपत्र लटक रहा था। स्वर्णपत्र पर अंकित था, 'यह राजा रामचंद्र के अश्वमेध यज्ञ का अश्व है।' यह देखकर सीता घबरा गई। सीता ने कहा, ''तुम इसे शीघ्र छोड़ दो।''

लव ने कहा ''हम इसे नहीं छोड़ेंगे, यह बहुत सुंदर है।''

''तुम नहीं जानते इसके पीछे सेना होगी'' सीता ने कहा।

''कोई भी क्यों न हो। हम इसे नहीं छोड़ेंगे। इसे हमने पकड़ा है। यह हमारा है।'' कुश बोला।

सीता ने भय दिखाते हुए कहा–''इसे छोड़ दो नहीं तो युद्ध होगा।''

''हम युद्ध से नहीं डरते।'' लव ने निडर होकर उत्तर दिया।

''हम पुरुषार्थी हैं। आपने ही तो हमें शिक्षा दी है कि पुरुषार्थी युद्ध से भी नहीं डरते। फिर आप हमें भय क्यों दिखा रही हैं?'' कुश ने लव के स्वर में स्वर मिलाकर कहा।

सीता धर्म संकट में पड़ गई। वह महर्षि वाल्मीकि को बुलाने चली गई। क्या पिता पुत्र में युद्ध होगा? सीता अज्ञात अनर्थ की आशंका से सिहर उठी।

www.rajteachers.com

'सीता के जाने के बाद एक सैनिक वहाँ आया। वह लव से बोला ''बालक, यहाँ अश्वमेध का अश्व तो नहीं आया ? ''

कुश ने उत्तर दिया–''देखते नहीं, वह पेड़ से क्या बँधा है?'' सैनिक घोड़े की तरफ बढ़ा। लव ने उसे ललकारा ''घोड़ा मत खोलना। इसे हमने पकड़ लिया है, यह हमारा है।''

कैसी बातें करते हो, बालको! यह भी कोई खेल है। अरे! यह राजा राम के अश्वमेध यज्ञ का अश्व है। इसे वही पकड़ सकता है जो राम से युद्ध करने को तैयार हो। 'तुरंत ही कुश ने उत्तर दिया,–'हमें भय क्या दिखाता है रे!'

सैनिक को बालकों की बातें बालहठ लगीं। वह घोड़ा खोलने के लिए आगे बढ़ा। कुश ने उससे कहा, ''देखो सैनिक हम नहीं चाहते कि तुम हमारे बाणों से मारे जाओ। इसलिए घोड़ा खोलने का प्रयास मत करो। चुपचाप लौट जाओ।'' सैनिक नहीं माना।

लव–कुश ने युद्ध के लिए ललकारा। सैनिक ने लव–कुश पर एक बाण छोड़ा। लव ने बाण से दो टुकड़े कर दिए। दोनों ओर से बाण चलने लगे। अंत में लव–कुश ने सैनिक को हरा दिया। उन्होंने सैनिक के दोनों हाथ पीछे की ओर बाँध दिए। फिर उससे कहा, 'जाकर अपने सेनापति से कहो कि सेना लेकर लौट जाए और किसी दूसरे घोड़े का प्रबंध कर ले।' सैनिक चला गया।

लव–कुश सेना को रोकने के लिए चल दिए। सामने से उन्हें एक विशाल सेना आती दिखाई दी। आगे–आगे रथ पर सेनानायक सवार था। राम ने लक्ष्मण के पुत्र चंद्रकेतु को अश्व की रक्षा का भार सौंपा था। वह इस सेना का नायक था।

लव–कुश को देखकर चन्द्रकेतु रथ से उतर कर उनके पास आया और बोला, "तुम राम के अश्वमेध के अश्व को शीघ्र छोड़ दो अथवा मेरे साथ युद्ध करो।"

"वीर! हम वाल्मीकि के शिष्य हैं, हम कायर नहीं हैं। हम यूँ ही अश्व को नहीं छोड़ेंगे। हमसे युद्ध करो और छुड़ा लो।" लव ने जृम्भकास्त्र छोड़ा। सारी सेना मूर्तिवत हो गई। इधर सीता महर्षि वाल्मीकि के पास पहुँचकर घटना के बारे में बता ही रही थी कि एक तपस्वी आया और हाँफते हुए बोला, ''महर्षि शीघ्रता कीजिए। लव–कुश के बाणों से वीर लक्ष्मण मूर्छित हो गए हैं।''

सीता यह सुनते ही व्याकुल हो उठी। महर्षि वाल्मीकि थोड़ा मुस्कुराए। फिर सीता से बोले, "दुःखी मत हो बेटी, जो कुछ हो रहा है, शुभ ही है।''

उधर अयोध्या से कुछ दूरी पर विशाल यज्ञशाला बनी थी। आवश्यक तैयारियाँ चल रही थीं। राम प्रसन्न थे कि अश्वमेध यज्ञ का अश्व अब तक बिना रोक–टोक के बढ़ा चला जा रहा था। इतने में एक सैनिक घबराया हुआ यज्ञशाला में आया। राम को सादर सिर झुकाकर बोला, "महाराज, सारे देश का भ्रमण करने के बाद अश्व अयोध्या लौट रहा था, तब वाल्मीकि आश्रम के लव और कुश नामक दो बालकों ने उसे पकड़ लिया। हमने उन्हें समझाया, वे नहीं माने। आखिर युद्ध करना पड़ा। वे साधारण बालक नहीं हैं, महाराज! उनके बाणों से हमारी सेना के अनेक वीर मूर्छित हो गए। वीर लक्ष्मण भी मूर्छित हो गए हैं।"

यह सुनते ही राम रथ पर सवार हो महर्षि वाल्मीकि के आश्रम पहुँचे। वे दोनों बालकों से बोले, ''मुनि बालको! मेरे अश्व को शीघ्र छोड़ दो।'' पर बालक कहाँ मानने वाले थे! राम से भी युद्ध करने को तैयार हो गए। इतने में सीता महर्षि वाल्मीकि को लेकर वहाँ पहुँची। राम को सामने देखकर वाल्मीकि ने कहा, "लव–कुश, तुम मुझसे अपने पिता के बारे में जानना चाहते थे। यही तुम्हारे पिता हैं, अयोध्या के राजा राम।'' यह सुनकर राजा राम ने लव–कुश को बाहों में भर लिया। मिलन के इस अद्भुत दृश्य को देखकर वाल्मीकि के नेत्रों से हर्ष के आँसू बह निकले।

www.rajteachers.com

शब्दार्थ

होनहार	–	अच्छे लक्षणों वाला	सिहरना	–	काँपना
ललकारना	–	चुनौती देना	अश्वमेध	–	एक प्रसिद्ध यज्ञ
अनर्थ	–	बुरा होना, नुकसान	यज्ञशाला	–	यज्ञ करने का स्थान

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

स्वर्णपत्र, आश्रम, वाल्मीकि, महर्षि

सोचें और बताएँ

1. लव–कुश कहाँ रहते थे?
2. लव–कुश के गुरुजी का क्या नाम था?
3. लव–कुश के पिता कौन थे?

लिखें

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लव–कुश किस शस्त्र को चलाने में निपुण थे?
2. आश्रम में किसका घोड़ा आ गया था?
3. "मुनि बालको, मेरे अश्व को शीघ्र छोड़ दो।" यह किसने किससे कहा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लव–कुश के दैनिक क्रिया कलाप क्या थे ?
2. कैसे पता चला कि आश्रम में आया घोड़ा अश्वमेध यज्ञ का है ?
3. राम प्रसन्न क्यों थे?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. सीता कब और क्यों संकट में पड़ गई?
2. लव–कुश और सैनिक के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

1. लव–कुश में दोनों पद प्रधान हैं क्योंकि दोनों पद संज्ञा हैं। **जिस समास में दोनों पद प्रधान हों उसे द्वंद्व समास कहते हैं।** उनका समास विग्रह करने पर योजक चिह्न के स्थान पर 'और' शब्द लिखा जाता है जैसे लव और कुश।
   आप भी ऐसे आठ पद लिखिए जिनमें दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर बीच में 'और' शब्द आता हो।
2. 'लक्ष्मण' तत्सम शब्द है। 'लक्ष्मण' का तद्भव शब्द 'लखन' होता है। नीचे लिखे तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए ।

www.rajteachers.com

तत्सम शब्द

स्वर्ण, अष्ट, गृह, चंद्र, मूर्ति

इस तरह के अन्य तत्सम शब्द छाँटकर उनके तद्भव रूप लिखिए।

संस्कृत के जो शब्द मूल रूप में हिंदी में प्रयुक्त होते हैं, वे तत्सम शब्द कहलाते हैं। मूल रूप से संस्कृत से आए, मगर अब कुछ बदलाव के साथ हिंदी में प्रयुक्त शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं– जैसे 'नासिका' व 'दुग्ध' तत्सम हैं और उनसे बने शब्द क्रमशः 'नाक' और 'दूध' तद्भव है।

3. विराम का अर्थ होता है– रुकना। हम बातचीत करते समय भावों–विचारों के अनुरूप बीच–बीच में रुकते हैं। **भाषा में बीच–बीच में रुकने के लिए कुछ विशेष चिह्न होते हैं। उन्हें विराम–चिह्न कहते हैं।** कुछ विराम–चिह्नों का परिचय इस प्रकार है –

क्र.स.	चिह्न	नाम	प्रयोग का आधार
1	।	पूर्णविराम	इसे वाक्य पूरा होने पर लगाते हैं।
2	;	अर्द्धविराम	जहाँ पूर्ण विराम से आधा रुकना हो।
3	,	अल्पविराम	जहाँ पूर्ण विराम का एक चौथाई समय रुकना हो।
4	?	प्रश्नवाचक	कुछ पूछने का भाव होने पर।
5	–	योजक	जहाँ एक शब्द को दूसरे शब्द से जोड़ने की अपेक्षा हो।
6	!	विस्मयादि बोधक	हर्ष, शोक, आश्चर्य या दुःख प्रकट करने वाले शब्द के बाद।
7	––	विवरण चिह्न	विवरण देने के लिए।
8	" "	उद्धरण चिह्न	किसी के कथन पर।
9	' '	अवतरण चिह्न	किसी नाम की ओर ध्यानाकर्षण अपेक्षित हो तो उस अंश के लिए यह चिह्न लगता है।

उचित विराम–चिह्न लगाकर पुनः लिखिए–

लव–कुश ने चन्द्रकेतु से कहा वीर हम वाल्मीकि के शिष्य हैं तुम्हारा परिचय क्या है

पाठ से आगे

1. रामायण की कथा का गान करना, गुरु की आज्ञापालन करना और मुनि कुमारों के साथ खेलना लव–कुश का दैनिक कार्य था। आप दिनभर क्या–क्या कार्य करते हैं? लिखिए।
2. यदि लव–कुश अश्व को सैनिक के कहने पर छोड़ देते तो क्या होता ?
3. आपके अनुसार बच्चों में कौन–कौनसे गुण होने चाहिए?

तब और अब

पुराना रूप	सुन्दर	झण्डा	युद्ध
मानक रूप	सुंदर	झंडा	युद्ध

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

हे अर्जुन! तुम्हारा कर्म का ही अधिकार है। कर्म के फल में तुम्हारा अधिकार कभी नहीं है। अर्थात हमें बिना फल की अपेक्षा करते हुए कर्म करना चाहिए।

केवल पढ़ने के लिए

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद बेलूर मठ के निर्माण कार्य और शिक्षादान के कार्य में बहुत व्यस्त थे। निरंतर भाग–दौड़ और कठिन श्रम करने के कारण वे अस्वस्थ हो गए थे। चिकित्सकों ने उन्हें जलवायु परिवर्तन तथा विश्राम करने पर जोर दिया। विवश होकर वे दार्जिलिंग चले गये। वहाँ उनके स्वास्थ्य में धीरे–धीरे सुधार हो रहा था। तभी उन्हें समाचार मिला कि कोलकाता में प्लेग व्यापक रूप से फैल गया है। प्रतिदिन सैकड़ों लोगों की मृत्यु हो रही है। यह दुखद समाचार सुनकर क्या महाप्राण विवेकानंद स्थिर रह सकते थे? वे तुरंत कोलकाता लौट आए और उसी दिन उन्होंने प्लेग रोग में आवश्यक सावधानी बरतने का जनसाधारण को उपदेश दिया। अपने साथ तमाम संन्यासियों और ब्रह्मचारियों को लेकर वे रोगियों की सेवा में जुट गए। कोलकाता में भय तथा आंतक का राज्य फैला था। स्त्री–पुरुष अपने बच्चों को लेकर प्राण बचाने के उद्देश्य से भागे जा रहे थे। ब्रिटिश सरकार ने प्लेग रोग से बचाव के संबंध में कठोर नियम जारी कर दिया था। उससे लोगों में भारी असंतोष था। इस परिस्थिति का सामना करने की भारी चुनौती स्वामी जी के सामने थी। इस कार्य में कितने धन की आवश्यकता होगी और वह कहाँ से आएगा, इस बात की चिंता करते हुए किसी गुरुभाई ने स्वामी जी से प्रश्न किया, ''स्वामी जी, रुपये कहाँ से आएँगे?'' स्वामी जी ने तत्काल उत्तर दिया, ''यदि आवश्यकता हुई तो मठ के लिए खरीदी गई जमीन बेच डालेंगे। हजारों स्त्री–पुरुष हमारी आँखों के सामने असहनीय दुःख सहन करेंगे और हम मठ में रहेंगे? हम संन्यासी हैं, आवश्यकता होगी तो फिर वृक्षों के नीचे रहेंगे, भिक्षा द्वारा प्राप्त अन्न–वस्त्र हमारे लिए पर्याप्त होगा।''

स्वामी जी ने एक बड़ी–सी जमीन किराये पर ली और वहाँ पर कुटिया निर्माण की। जाति, वर्ण का भेद छोड़ प्लेग के असहाय मरीजों को वहाँ पर लाकर उत्साही कार्यकर्तागण सेवा कार्य में रत हुए। स्वामी जी स्वयं भी उपस्थित रहकर सेवा कार्य करने लगे। शहर की गंदगी साफ करना, औषधियों का वितरण करना, दरिद्र नारायणों की अति उत्साह से सेवा करने में सभी कार्यकर्ता मन से लग गए। 'यत्र जीवः तत्र शिवः' मंत्र के ऋषि विवेकानंद अपनी सेहत की परवाह न करते हुए स्वदेशवासियों को शिक्षा देने लगे कि नर को नारायण मान कर सेवा करना मानव धर्म है।

www.rajteachers.com

पाठ 3

इसे जगाओ

भई, सूरज
ज़रा इस आदमी को जगाओ!
भई, पवन
ज़रा इस आदमी को हिलाओ।
यह आदमी जो सोया पड़ा है,
जो सच से बेख़बर
सपनों में खोया पड़ा है।
भई, पंछी
इसके कानों पर चिल्लाओ!
भई, सूरज! ज़रा इस आदमी को जगाओ!
वक्त पर जगाओ,
नहीं तो जब बेवक्त जागेगा यह
तो जो आगे निकल गए हैं
उन्हें पाने घबरा के भागेगा यह।
घबरा के भागना अलग है
क्षिप्र गति अलग है
क्षिप्र तो वह है
जो सही क्षण में सजग है
सूरज इसे जगाओ।
पवन इसे हिलाओ।
पंछी इसके कानों पर चिल्लाओ।

भवानीप्रसाद मिश्र

www.rajteachers.com

शब्दार्थ

पवन	—	हवा, वायु	वक्त	—	समय
बेख़बर	—	अनजान	क्षिप्र	—	तेज, तीव्र
सजग	—	जागा हुआ, चौकन्ना	ज़रा	—	थोड़ा

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. कविता में किसे जगाने के लिए कहा गया है?
2. पंछी से क्या आग्रह किया गया है?
3. पवन से क्या आग्रह किया गया है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. 'भई, सूरज' वाक्यांश में 'भई' संबोधन का प्रकार है–

   (क) औपचारिक (ख) आत्मीय (ग) आदरसूचक (घ) श्रद्धासूचक ( )

2. कविता में 'क्षिप्र' कहा गया है–

   (क) जो घबरा कर भागता है (ख) जो तेज गति से चलता है

   (ग) जो अवसर नहीं चूकता है (घ) जो क्षण भर को सजग रहता ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. इस कविता में कवि सोए हुए को जगाने का अनुरोध क्यों करता है?
2. बेवक्त जागने का क्या परिणाम होता है?
3. इस कविता में कवि ने किस–किससे सोए हुए आदमी को जगाने का आग्रह किया है?
4. घबराकर भागना क्षिप्र गति से अलग कैसे है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. 'जो सच से बेखबर है, सपनों में खोया पड़ा है' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए?
2. कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

भाषा की बात

1. सूची एक व दो के समान अर्थ वाले शब्दों का मिलान कीजिए

सूची–एक	सूची–दो
अग्नि	नभ, गगन, व्योम
आकाश	आग, पावक, अगन
पेड़	जल, वारि, तोय,
पानी	पुत्र, सुत, तनय
बेटा	वृक्ष, दरख्त, विटप

2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए

   वक्त   सोना   सच   आगे

3. 'भई, सूरज, इसे जगाओ' पंक्ति में 'भई' शब्द का प्रयोग किया गया है। बोलचाल की हिंदी में अक्सर 'भई' शब्द संबोधन के लिए उपयोग में लिया जाता है। नीचे दिए उदाहरण को पढ़कर आप भी ऐसे तीन वाक्य लिखिए; जैसे– भई, तुम भी तो यह काम कर सकते थे।

4. अंतर बताइए

   (क) ज़रा–जरा   (ख) राज़–राज

पाठ से आगे

1. 'इसे जगाओ' कविता में कवि क्या यह कहना चाहता है कि आदमी सपने न देखें? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

2. कविता में सूरज, हवा और पक्षी प्रकृति के इन तीन अवयवों का वर्णन हुआ है। हम इनसे किन गुणों को सीख सकते हैं ?

यह भी करें

'इसे जगाओ' कविता सरल व सहज शब्दों में सपनों में खोए रहने वाले आदमी को वास्तविकता से परिचित करवाकर जागरूक बनाने का संदेश देती है। कवि अपने संदेश के लिए प्रकृति को माध्यम बनाता है। आप भी सरल भाषा में ऐसी कविता की रचना करें जो भूले–भटकों को राह दिखा सके।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

न ऋते श्रांतस्य सख्याणःदेवाः।
बिना कष्ट उठाए देवता भी सहायता नहीं करते।

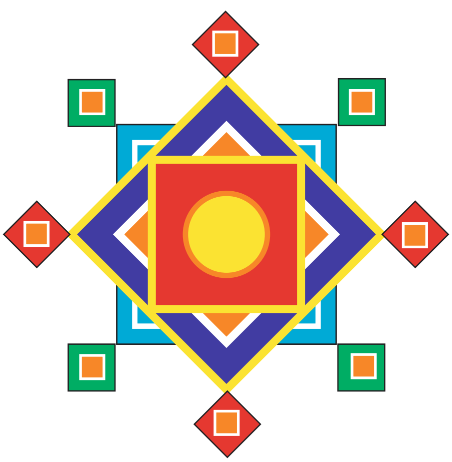

www.rajteachers.com

पाठ 4

शरणागत की रक्षा

''मैं आपकी शरण आया हूँ, महाराज!''

रणथंभौर के राणा हमीर अपने दरबार में बैठे अपना राज–काज देख रहे थे कि किसी ने पुकारा, ''मैं आपकी शरण आया हूँ, महाराज!''

हमीर ने दृष्टि ऊपर की तो देखा कि एक मुसलमान योद्धा उनके सामने था। सिर उसका झुका हुआ और गला व्यथा से भर्राया हुआ था।

''कौन हो तुम?'' हमीर ने पूछा।

''महाराज मैं दुखिया हूँ, मेरे प्राण संकट में हैं, आपकी शरण आया हूँ।''

''मेरा नाम माहिमशाह, काम सिपहगिरी, बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का खादिम हूँ। एक मामूली बात पर बादशाह नाराज़ हो गए और मेरे लिए फाँसी का हुक्म दे दिया। वे घड़ियाँ नज़दीक थीं, जब फाँसी का फंदा दम घोट देता और मेरी लाश को चील और कुत्तों के लिए फेंक दिया जाता कि मैं जेल से फरार हो गया और अब अपने प्राणों की रक्षा के लिए आपकी शरण में हाज़िर हूँ। मेरी रक्षा कीजिए महाराज!''

हमीर ने गौर से माहिमशाह को देखा। माहिम बहुत घबराया हुआ था। ''दिल्ली और रणथंभौर के बीच तो राजपूतों के कई राज्य हैं, तुम उनमें क्यों नहीं गए, माहिम?'' हमीर ने गंभीरता से पूछा।

और भी दीन होकर माहिम ने कहा, ''महाराज, मैं सबके दरवाजे गया, सबने मुझे सहानुभूति दी, पर कोई शरण न दे सका, क्योंकि मैं दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलजी का भगोड़ा हूँ और मुझे शरण देकर कोई उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहता।''

हमीर ने अपने सलाहकारों को देखा और अनुत्साहित पाया। उनकी राय थी, ''महाराज, माहिमशाह की तलवार आज आपकी शरण में है, पर कल तक वह हमारे खून की प्यासी थी। हम उसे अपनी छाया में लेकर दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्योता क्यों दें?''

''यह दिल्ली के तख्त की लपलपाती क्रोधाग्नि को न्योता देने की बात नहीं है, सरदारो! यह कर्तव्य का प्रश्न है, आन का प्रश्न है। जब माहिम इस द्वार से लौटेगा, तो स्वर्ग में हमारे पूर्वज क्या सोचेंगे? क्या उन्हें स्वर्ग के सुख–साज में काँटों की चुभन का अनुभव न होगा?'' हमीर ने आवेश में पूछा।

www.rajteachers.com

सरदारों ने कहा, ''क्षमा करें महाराज। आपकी बात परम पवित्र है, पर कर्तव्य की भी एक सीमा है।''
''कर्तव्य की सीमा?'' कड़क कर हमीर ने पूछा, ''कर्तव्य की सीमा है कर्तव्य–पालन। कर्तव्य के पालन में सुख मिलेगा या दुःख, जय होगी या पराजय, यह दुकानदारी की वृत्ति राजपूतों को शोभा नहीं देती। माहिम शरणार्थी है, शरणार्थी की रक्षा राजपूत का कर्तव्य है। यह कर्तव्य हमें पूरा करना है, फिर इससे दिल्ली का बादशाह नाराज़ हो या दुनिया का बादशाह।''

सामंत–सरदार भी अब महाराज की भावधारा में बहकर, व्यवहार–बुद्धि से दूर, भावना के क्षेत्र में पहुँच गए थे। उनके मुँह से निकला, ''धन्य है महाराज!''

हमीर ने कहा, ''माहिमशाह, रणथंभौर अब तुम्हारा घर है। आराम से यहाँ रहो और विश्वास रखो कि अब किसी की हिम्मत नहीं जो तुम्हारी तरफ तिरछी आँखों से देखे। कोई कष्ट हो तो हमें कहना, जाओ।''

कानों–कान यह उड़ती खबर दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन खिलज़ी तक पहुँची तो वह तमतमा उठा, ''हमीर की यह हिमाकत कि मेरे चोर को आसरा दे।''

''क्या तुम नहीं जानते, हमीर! जो तुमने माहिम को अपनी छत दी? खैर, मैं भूलों को माफ़ करना जानता हूँ। कोई बात नहीं, माहिम को अपनी देखरेख में मुझे सुपुर्द करो और अपने कसूर की माफ़ी माँगो।''
अलाउद्दीन का यह संदेश हमीर के पास पहुँचा तो वह मुस्कुराया। उसने लिखा, ''माहिम को शरण दी है, कोई नौकर नहीं रखा है। अपना सर्वस्व लुटाकर भी शरणागत की रक्षा करना हमारे संस्कार हैं। सपने में भी उम्मीद न रखिए कि माहिम को मैं आपके दरवाजे लाऊँगा। आप जो मुनासिब समझें, कीजिए।''
जवाब क्या था, एक पलीता था, जिसने खिलजी के बारूद में आग लगा दी और उसने कुछ दिन बाद ही अपनी फ़ौजों के साथ रणथंभौर का किला घेर लिया।

''लड़ाई–झगड़े से क्या फायदा, हमीर! ला, माहिम को मुझे सौंप दे।'' खिलजी का यह आखिरी संदेश था।

''लड़ाई से मैं नहीं डरता और जीवन की आखिरी घड़ी तक माहिम की रक्षा करूँगा।'' हमीर का यह आखिरी उत्तर था।

दूसरे दिन रण दुंदुभि बज उठी। ऊँची पहाड़ी पर बना रणथंभौर का किला और चारों ओर फैली शाही फ़ौजें। एक तरफ अपने बादशाह के लिए लड़ने वाली फ़ौजें तो दूसरी तरफ अपनी आन पर मर मिटने वाले सिपाही। एक तरफ भरपूर साधन तो दूसरी तरफ भरपूर आन। लड़ाई क्या थी? यह बात की बाजी और यह बाजी जिसका निशाना एक आदमी के प्राण और इस एक प्राण के लिए हज़ारों प्राण, सरसों के दानों की तरह हथेली पर।

दोनों तरफ हज़ारों योद्धा काम आए। बादशाह की ताकत जितनी छीजती, दिल्ली उसे पूरा कर देती, पर हमीर की शक्ति धारा की जो लहर बह जाती, फिर न लौटती। हर टूटती तलवार सौ को निन्यानवे करती और हर गिरता सिपाही हज़ार को नौ सौ निन्यानवे। व्यय के रास्ते खुले हुए थे, आय के बंद! कारूँ का ख़जाना और कुबेर का कोष भी यों कब तक टिक पाता!

हमीर उस दिन कुछ सोच रहे थे कि माहिमशाह आकर खड़े हो गए। ''कहिए, शाह साहब, क्या बात है?'' हमीर ने कहा।

माहिमशाह को चुप देखकर हमीर ने पूरी गंभीरता से कहा, ''शाह साहब, यह लड़कों का खेल नहीं, युद्ध है। फिर क्या आप नहीं जानते कि मैं राजपूत हूँ। जो वचन दे चुका हूँ, उसे मरते दम तक निभाऊँगा। इस लड़ाई में आपकी बहादुरी का चमत्कार देखकर मैं बहुत खुश हूँ। हार–जीत तो किस्मत के दो किनारे हैं, इनकी फिक्र न कीजिए।''

लड़ाई चलती रही। सामान और सिपाही घटते रहे। एक दिन भंडारी ने खबर दी, ''आज खाने का सामान खत्म है।''

रणथंभौर के किले में एक सभा हुई कि अब क्या हो? माहिमशाह ने बहुत खुशामद की, वह बहुत गिड़गिड़ाया कि उसे बादशाह को सौंपकर सुलह कर ली जाए, पर उसके प्रस्ताव का समर्थक वहाँ कोई न था। सच्चाई यह है कि हमीर और उनके साथियों के सामने यह प्रश्न ही न था कि हम कैसे बचें। उनकी विचार दिशा तो केवल यह थी कि हम कैसे लड़ें? भावुकता का ऐसा ज्वार विश्व के इतिहास में शायद ही और कहीं आया हो।

फ़ैसला हुआ कि कल किले का द्वार खोल दिया जाए और जमकर युद्ध हो। इस युद्ध का स्पष्ट अर्थ था, आत्माहुति, सर्वस्व समर्पण। जीत की कामना सिपाही को उत्साह देती है, तो विजय की आशा उसे बल। कामना और आशा के झूले पर इधर से उधर झूलने वाले ये सिपाही न थे। इन्हें झूलना नहीं, झूमना था, इन्हें बुझना नहीं, जूझना था।

अब वे निश्चिंत थे, जैसे उन्हें जो करना था, कर चुके थे। रात को वे सब सो रहे थे, सुबह जल्दी उठने के लिए और सुबह उनको जल्दी उठना था, हमेशा को सोने के लिए। ऐसी जीवंत नींद रात के सितारों ने फिर नहीं देखी, यह वे आपस में अब भी कहा करते हैं।

किले का द्वार खोल दिया गया और रणथंभौर के योद्धा रण में कूद पड़े। रण था यह दिल्ली की फ़ौजों के लिए, रणथंभौर वालों के लिए तो आत्मदान का यज्ञ था। माहिम और हमीर साथ–साथ आगे बढ़े और काल बनकर बरसे। दूसरे सिपाही भी खून की आखिरी बूँद तक लड़े।

रणथंभौर की ये शहादतें, ये बलिदान, ये कुर्बानियाँ वीरता के इतिहास में अपना जोड़ नहीं रखतीं और आज सदियों बाद भी उनसे अगरबत्तियों–सी जीवन के सौरभ की भीनी एवं प्रेरक सुगंध आ रही है।

क्या आत्मा की अमरता का ऐसा विश्वास और मृत्यु का इतना मनोरम विवरण इतिहास के किसी और पृष्ठ में भी इतने प्रदीप्त रूप में मिलता है?

–कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

शब्दार्थ

भगोड़ा	–	भागा हुआ	अनुत्साहित	–	उत्साहरहित
हिमाकत	–	हिम्मत, साहस	मुनासिब	–	उचित
खुशामद	–	मान–मनवार, मनाना	खादिम	–	नौकर

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. हमीर कहाँ के राणा थे?
2. युद्ध से पहले माहिमशाह हमीर के सामने क्यों खड़ा हुआ?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. "महाराज मैं दुखिया हूँ, मेरे प्राण संकट में है, आपकी शरण आया हूँ।" किसने कहा–
   (क) हमीर ने (ख) अलाउद्दीन ने
   (ग) माहिमशाह ने (घ) सलाहकारों ने ( )
2. "यह कर्तव्य हमें पूरा करना है, फिर इससे दिल्ली का बादशाह नाराज हो या दुनिया का बादशाह।" किसने कहा–
   (क) हमीर ने (ख) अलाउद्दीन ने
   (ग) माहिमशाह ने (घ) सलाहकारों ने ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. माहिमशाह किसका भगोड़ा था?
2. माहिमशाह किसकी शरण में आया ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. राजा हमीर ने अपने सलाहकारों को अनुत्साहित क्यों पाया?
2. राजा हमीर ने कर्तव्यपालन के बारे में सलाहकारों से क्या कहा?
3. राजा हमीर ने अलाउद्दीन को भेजे संदेश में क्या लिखा?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. रणथंभौर किले में हुई सभा में माहिमशाह ने राजा हमीर से क्या खुशामद की?
2. राजा हमीर ने शरणागत की रक्षा के लिए क्या–क्या कुर्बानियाँ दीं?

भाषा की बात

1. ''हमीर ने अपने सलाहकारों को देखा तो अनुत्साहित पाया।'' वाक्य में 'अनुत्साहित' शब्द अन्+उत्साहित से बना है। आप भी 'अन्' उपसर्ग लगाकर पाँच शब्द बनाइए।
2. जिस प्रकार इतिहास में इक प्रत्यय जुड़ने से ऐतिहासिक बना है। इसी प्रकार 'इक' प्रत्यय लगाकर नए शब्द बनाइए।
3. नीचे समश्रुति भिन्नार्थक शब्द दिए गए हैं। इनको वाक्यों में प्रयोग कर इनके अर्थ में अंतर स्पष्ट कीजिए–

   सूत–सुत, पथ्य–पथ, धन्य–धान्य, उदार–उद्धार।

पाठ से आगे

1. कक्षा में हमीर, माहिमशाह और अलाउद्दीन खिलजी का संवाद कराएँ।
2. इसी प्रकार की ऐतिहासिक कहानियाँ जिसमें शरणागत की रक्षा का प्रसंग हो, का संकलन कर "मेरा संकलन" में जोड़िए।
3. आपके अनुसार हमीर द्वारा माहिमशाह को शरण देना उचित है या अनुचित? तर्क सहित लिखिए।

कल्पना करें

राणा हमीर यदि माहिमशाह को शरण नहीं देते, तो क्या होता?

तब और अब

पुराना रूप	अलाउद्दीन	क्यौं	योद्धा
मानक रूप	अलाउद्दीन	क्यों	योद्धा

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

सरणागत कहुँ जे तजहिं, हित अनहित अनमानि।
ते नर पाँवर पापमय, तिनहिं बिलोकत हानि।।

पाठ 5

बेणेश्वर की यात्रा

मैं ने गत वर्ष अख़बार में पढ़ा था बेणेश्वरधाम! यहाँ माघ शुक्ल एकादशी से कृष्ण पंचमी तक मेला भरता है। गुजरात, मध्यप्रदेश तथा राजस्थान के लोग इसमें भाग लेते हैं। समाचार बहुत ही रोचक था। मेरे मन में यह मेला देखने की प्रबल इच्छा जाग्रत हो उठी। 'हाँ' कहते साल बीत गया। मैंने तैयारी तो कर ही रखी थी। आखिर माघ शुक्ल एकादशी नजदीक आ ही गई। मैं बेणेश्वरधाम के लिए रवाना हुआ।

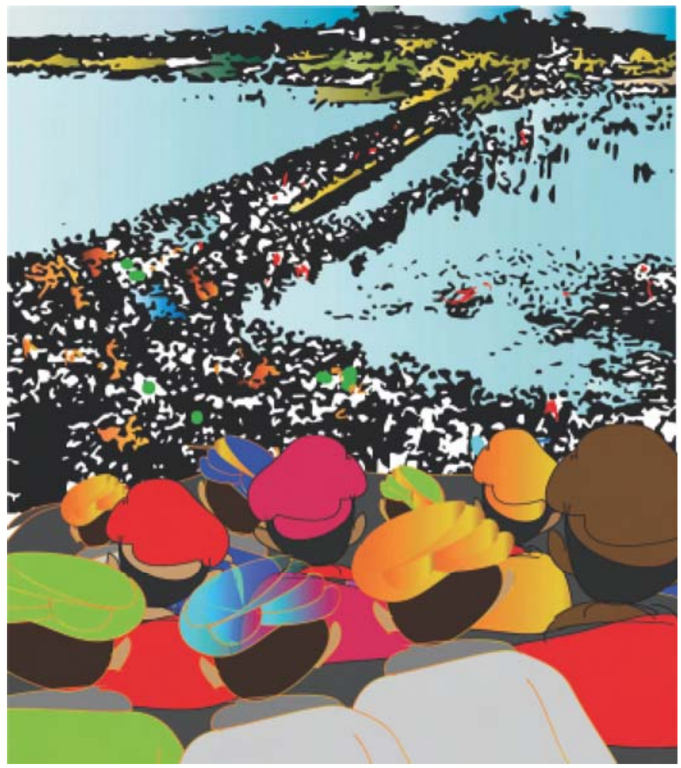

चाँदनी रात थी। मैं बस में सवार था। बस अरावली की पहाड़ियों को चीरती हुई बेणेश्वरधाम की ओर बढ़ रही थी। यह तीर्थ स्थान डूँगरपुर और बाँसवाड़ा ज़िलों की सीमा पर स्थित है। इसे आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है।

बस बाएँ ओर मुड़ी। 'मावजी महाराज नी जै' की आवाज़ के साथ मेरी नींद खुल गई। लोग आपस में बातें कर रहे थे।

"अरे, हाबलो आवीग्यू! हवै तो बेणेश्वर धाम सो किलोमीटर रइ ग्यू।"

"यह तो सोम, जाखम तथा माही नदियों के संगम पर बने एक टापू पर स्थित है न?"

"इयाँ बणैला शिवजी ना मंदर नै 'बेणका ईश्वर' कएं हैं!"

"अरे, इसलिए तो इस स्थान का नाम बेणेश्वर पड़ा है!"

सब हँस पड़े। कुछ ही देर में साबला आ गया। बस रुक गई। आज माघ शुक्ल एकादशी है। आज से मेला शुरू हो रहा है। यह दस दिन तक चलेगा। पंचमी को पूरा होगा। मुख्य मेला पूर्णिमा को रहता है।

मैं बेणेश्वर टापू पर पहुँचा। यह लगभग 240 बीघा क्षेत्र में फैला हुआ टापू है। यहाँ कई मंदिर हैं। मेरी नज़र शिलालेखों पर पड़ी।

इसके बाद मैंने शिव मंदिर देखा। इसका निर्माण डूँगरपुर के महारावल आसकरण ने लगभग 500 साल पहले करवाया था। यह बहुत पुराना हो गया था, इसलिए इसकी मरम्मत करवाई गई थी।

www.rajteachers.com

कहते हैं—इसी मंदिर में बैठकर मावजी महाराज ने अपना 'चोपड़ा' लिखा था। मावजी इस क्षेत्र के प्रसिद्ध संत हुए हैं। इनका जन्म अठारहवीं शताब्दी में साबला (डूँगरपुर) में हुआ था। लोग इनको कृष्ण का अवतार मानते हैं। मावजी महाराज ने सोमसागर, प्रेमसागर, मेघसागर, रतनसागर एवं अनंतसागर नामक पाँच ग्रंथों की रचना की है। इनको वागड़ी भाषा में 'चोपड़ा' कहा जाता है। उनके चोपड़े में अनेक भविष्यवाणियाँ लिखी हुई हैं। ऐसा विश्वास है कि इस चोपड़े की भविष्यवाणियाँ अब तक सही साबित हुई हैं। मुझे यह भी बताया गया कि मावजी की मुख्य गादी साबला में है। मावजी के बाद उनकी पुत्रवधू जनकुँवरी गादी पर बैठी। वह लगभग 80 साल तक गादीपति रही।

उन्होंने ही हरि मंदिर (कृष्ण मंदिर) बनवाया था। कहा जाता है कि यह वह स्थान है जहाँ मावजी महाराज बैठकर अपनी साधना करते, बाँसुरी बजाते और गायें चराते थे। बेणेश्वर टापू पर वागड़ क्षेत्र के लोगों ने ब्रह्माजी का मंदिर भी बनवाया है। इस प्रकार यहाँ त्रिदेव (बह्मा, विष्णु, महेश) के मंदिर हैं। इनके अलावा यहाँ अन्य देवों के मंदिर भी बने हुए हैं।

साबला गादी के महंत जी ने हरिमंदिर पर झंडा फहराकर मेले की शुरुआत की। चारों तरफ मावजी महाराज की जय–जयकार हो रही थी।

बेणेश्वर टापू पर चहल–पहल बढ़ गई थी। आदमी ही नहीं औरतें भी! बालक ही नहीं बालिकाएँ भी! जवान ही नहीं बूढ़े भी! गरीब ही नहीं अमीर भी! सब तरह के लोग थे। अब तो यहाँ विदेशी पर्यटक भी खूब आने लगे हैं।

मैं यहाँ एक दिन रुककर लौट जाना चाहता था; किंतु यहाँ के अनोखे वातावरण ने मुझे पूर्णिमा तक रुकने के लिए मजबूर कर दिया। मेला स्थल पर दुकानें और मनोरंजन के भरपूर साधन थे। दुकानों में खेती और गृहस्थी के लिए आवश्यकता की वस्तुएँ थीं। वहाँ बच्चों के लिए गुब्बारे और खिलौने, धनुष और तीर, झूले–चकरी और सर्कस, मदारी तथा जादू के खेल भी थे। सब उनका आनंद ले रहे थे। मेले में पुलिस विभाग के कर्मचारी तथा बालचर अपनी सेवाएँ दे रहे थे।

इस मेले में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम चल रहे थे। उनमें अलग–अलग संस्कृति की झलक थी। सभी धर्मों के प्रति सम्मान था। खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। यहाँ तीरंदाजी, गैर नृत्य एवं रासलीला के कार्यक्रम लोगों के लिए विशेष आकर्षण के केंद्र थे। उनके कलाकारों की रंग–बिरंगी भड़कीली पोशाकें सबका ध्यान खींच रही थीं। आदिवासी लड़के–लड़कियाँ समूह में लोक गीत गा रहे थे। ये गीत वागड़ी भाषा में थे। चाहे वे गीत मुझे समझ में न आए हों; किंतु उनके सुरीले स्वर को मैं अभी तक नहीं भुला पाया हूँ। उन गीतों में उनके सीधे–सादे जीवन की झलक दिखती है।

यह स्थान डूँगरपुर ज़िले की साबला पंचायत समिति में स्थित है। अतः इस मेले की सारी व्यवस्था उसी की ज़िम्मेदारी है। इसमें डूँगरपुर और बाँसवाड़ा ज़िले के प्रशासन का पूरा सहयोग रहता है। मुझे पता ही नहीं लगा और पूर्णिमा आ गई।

धूम–धाम से महंतजी की सवारी निकली। गाजे–बाजे, ढोल–ढमाके, इकतारा, तंबूरा, ढोलक, मंजीरे आदि की धुन सुनते ही बनती थी। रंग–बिरंगी पताकाएँ थीं। सवारी सोम–माहीसागर संगम स्थल पर आबूदरा नामक स्थान पर पहुँची। महंतजी हरि मंदिर में पधारे। वहाँ उन्होंने पूजा–अर्चना की।

मुझे किसी ने बताया था कि यहाँ की रग–रग में यह पंक्ति रची–बसी है। ''माहीसागर नु पाणी नें मावजी नीं वाणी।'' एक बार फिर आकाश मावजी के गगनभेदी जयकारों से गूँज उठा।

पूर्णिमा के दिन आदिवासियों की संख्या सबसे अधिक थी। कई लोगों के हाथों में 'सउड़ी' थी। उसमें उनके परिवार के उन लोगों के 'फूल' (अस्थियाँ) थे, जिनका बीते वर्ष में निधन हो गया था। उन्होंने संगम–स्थल पर अपनी युगों पुरानी परम्परा के अनुसार उन अस्थियों को प्रवाहित किया। उसके बाद उन्होंने स्नान किया, खाना बनाकर खाया और घर लौट गए।

मैं भी बेणेश्वरधाम की मीठी यादों को लेकर लौट आया।

"बेणेश्वर में बेण (बाँस) के पेड़ अधिक होते थे।
कहते हैं कि यहाँ दैत्यराज बलि ने यज्ञ किया था।"

शब्दार्थ

प्रबल	– दृढ़, ताकतवर	कएं	– कहते हैं
टापू	– जमीन का वह भाग जो चारों ओर से जल से घिरा हो।		
शिलालेख	– पत्थरों पर लिखे गए लेख	प्राचीन	– बहुत पुराना
जन समूह	– लोगों का समूह	संगम	– मिलने का स्थान
हवै	– अब	सो	– छह
हाबलो	– साबला (जगह का नाम)	आवीग्यू	– आ गया
रइ ग्यू	– रह गया	इयाँ	– यहाँ
बणैला	– बना हुआ	मंदर	– मंदिर

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. बेणेश्वर धाम का मेला कब भरता है?
2. मेले में कौन–कौनसे प्रदेश के लोग आते हैं?
3. मावजी का जन्म कहाँ हुआ था?

लिखें

नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(साबला, पूर्णिमा, प्रेम सागर, बेणेश्वरधाम)

1. बेणेश्वर का मुख्य मेला .... को भरता है।
2. .... को आदिवासियों का कुंभ कहा जाता है।
3. मावजी महाराज का जन्म .... में हुआ था।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बेणेश्वर किन–किन नदियों पर स्थित है?
2. शिव मंदिर किसने और कब बनवाया था?
3. मेले की सारी व्यवस्थाएँ किसके निर्देशन में होती हैं?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मावजी महाराज द्वारा रचित ग्रंथों के नाम लिखिए।

www.rajteachers.com

2. मावजी के बाद गादी पर कौन बैठी?
3. मेले की शुरुआत कैसे होती है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मेले में आदिवासियों की संख्या पूर्णिमा के दिन सबसे अधिक क्यों होती है? कारण सहित उत्तर लिखिए।
2. बेणेश्वर मेले का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

भाषा की बात

1. बालक ही नहीं बालिकाएँ भी! जवान ही नहीं बूढ़े भी! गरीब ही नहीं अमीर भी! सब तरह के लोग थे। वाक्य में 'ही.......... भी' का प्रयोग हुआ है। आप भी ऐसे पाँच वाक्य बनाइए जिसमें 'ही......... भी' का प्रयोग हुआ हो।
2. मावजी महाराज द्‌वारा लिखित पाँच ग्रंथों को 'चोपड़ा' कहा जाता है। दिवंगत लोगों की अस्थियों को 'फूल' कहा जाता है। मिट्‌टी से निर्मित छोटे बर्तन को 'सउड़ी' कहा जाता है, जिसमें आदिवासी अपने पूर्वजों की अस्थियाँ रखते हैं। आँचलिक भाषा में ऐसे अनेक शब्द प्रचलित होते हैं जो एक विशेष अर्थ को व्यक्त करते हैं। अपनी भाषा से ऐसे कुछ शब्दों का चयन कर उनके अर्थ लिखिए।
3. 'मुझे पता ही नहीं लगा और पूर्णिमा आ गई।' इस बात को हम इस प्रकार भी लिख सकते हैं–'मुझे पता ही नहीं लगा। पूर्णिमा आ गई।' इस प्रकार के वाक्यों को संयुक्त वाक्य कहा जाता है। संयुक्त वाक्य में वाक्यों को 'और' 'तथा' 'या' आदि से जोड़ा जाता है। आप भी इसी प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।
4. 'मिश्र वाक्य' भी वाक्य का एक भेद है। आप अपने शिक्षक से मिश्र वाक्य के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।

पाठ से आगे

1. आपने अब तक कौन–कौनसे मेले देखे हैं? किसी एक मेले का वर्णन कीजिए।
2. कल्पना कीजिए कि आप परिवार के साथ मेला घूमने गए हो। वहाँ भीड़–भाड़ में आप अपने परिवार से बिछुड़ गए। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

यह भी करें

1. बेणेश्वर में बेण के पेड़ अधिक होते थे। कहा जाता है कि यहाँ दैत्यराज बलि ने यज्ञ किया था। दैत्यराज बलि की अंतर्कथा ढूँढ़कर पढ़िए।
2. आप कभी बेणेश्वर जाएं तो मावजी महाराज द्‌वारा लिखित ग्रंथों को संग्रहालय में पढ़िए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

औरों को हँसते देखो मनु, हँसों और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत करलो, जीवन सफल बनाओ।

www.rajteachers.com

पाठ 6

मित्रता

जब कोई युवा पुरुष अपने घर से बाहर निकलकर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में आती है। यदि उसकी स्थिति बिल्कुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान–पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका हेल–मेल हो जाता है। यह हेल–मेल बढ़ते–बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरंभ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार करने योग्य रहता है। हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले, चाहे राक्षस बनाए, चाहे देवता।

ऐसे लोगों के साथ रहना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों के साथ रहना और बुरा है जो अपनी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। दोनों अवस्थाओं में जिस बात का भय रहता है, उसका पता युवकों को प्रायः बहुत कम रहता है। यदि विवेक से काम लिया जाए तो यह भय नहीं रहता, पर युवा पुरुष प्रायः विवेक से कम काम लेते हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि लोग एक घड़ा लेते हैं तो उसके सौ गुण–दोषों को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी–ही–अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं। हँसमुख चेहरा, बातचीत का ढंग, थोड़ी चतुराई या साहस – ये ही दो–चार बातें

www.rajteachers.com

किसी में देखकर लोग चटपट उसे अपना बना लेते हैं। हम लोग यह नहीं सोचते हैं कि मैत्री का उद्देश्य क्या है, क्या जीवन के व्यवहार में उसका कुछ मूल्य भी है। यह बात हमें नहीं सूझती कि यह ऐसा साधन है, जिससे आत्मशिक्षा का कार्य बहुत सुगम हो जाता है। एक प्राचीन विद्वान का वचन है, ''विश्वासपात्र मित्र से बहुत रक्षा रहती है। जिसे ऐसा मित्र मिल जाए उसे समझना चाहिए कि खजाना मिल गया।'' विश्वासपात्र मित्र जीवन की एक औषध है। हमें अपने मित्रों से यह आशा रखनी चाहिए कि वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे, दोषों और त्रुटियों से हमें बचाएँगे, हमारे सत्य, पवित्रता और मर्यादा के प्रेम को पुष्ट करेंगे, जब हम कुमार्ग पर पैर रखेंगे, तब वे हमें सचेत करेंगे, जब हम हतोत्साह होंगे, तब हमें उत्साहित करेंगे। सारांश यह है कि हमें उत्तमता से जीवन निर्वाह करने में हर तरह से सहायता देंगे। सच्ची मित्रता में उत्तम वैद्य की–सी निपुणता और परख होती है। अच्छी–से–अच्छी माता का–सा धैर्य और कोमलता होती है। ऐसी ही मित्रता करने का प्रयत्न व्यक्ति को करना चाहिए।

छात्रावस्था में मित्रता की धुन सवार रहती है। मित्रता हृदय से उमड़ पड़ती है। पीछे के जो स्नेह बंधन होते हैं, उनमें न तो उमंग रहती है, न उतनी खिन्नता। बाल मैत्री में जो मग्न करने वाला आनंद होता है, वह और कहाँ? कैसी मधुरता और कैसी अनुरक्ति होती है, कैसा आपसी विश्वास होता है! हृदय से कैसे–कैसे उद्गार निकलते हैं! वर्तमान कैसा आनंदमय दिखाई पड़ता है और भविष्य के संबंध में कैसी लुभाने वाली कल्पनाएँ मन में रहती हैं। कितनी जल्दी बातें लगती हैं और कितनी जल्दी मानना होता है।

'सहपाठी की मित्रता' इस उक्ति में हृदय के कितने भारी उथल–पुथल का भाव भरा हुआ है; किंतु जिस प्रकार युवा पुरुष की मित्रता स्कूल के बालक की मित्रता से दृढ़, शांत और गंभीर होती है, उसी प्रकार हमारी युवावस्था के मित्र बाल्यावस्था के मित्रों से कई बातों में भिन्न होते हैं। मैं समझता हूँ कि मित्र चाहते हुए बहुत–से लोग मित्र के आदर्श की कल्पना मन में करते होंगे; पर इस कल्पित आदर्श से तो हमारा काम जीवन की झंझटों में चलता नहीं। सुंदर प्रतिभा, मनभावनी चाल और स्वच्छंद प्रकृति, ये ही दो–चार बातें देखकर मित्रता की जाती है, पर जीवन संग्राम में साथ देने वाले मित्रों में इनसे कुछ अधिक बातें चाहिए। मित्र केवल उसे नहीं कहते, जिसके गुणों की तो हम प्रशंसा करें, हम स्नेह न कर सकें, जिससे अपने छोटे–छोटे काम ही हम निकालते जाएँ, पर भीतर–ही–भीतर घृणा करते रहें। मित्र सच्चा पथ प्रदर्शक के समान होना चाहिए। जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें। मित्र भाई के समान होना चाहिए, जिसे हम अपना प्रीति–पात्र बना सकें। हमारे और हमारे मित्र के बीच सच्ची सहानुभूति होनी चाहिए। ऐसी सहानुभूति जिससे एक के हानि–लाभ को दूसरा अपना हानि–लाभ समझे।

मित्र का कर्तव्य इस प्रकार बताया गया है, ''उच्च और महान कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, मान बढ़ाना और साहस दिलाना कि तुम अपनी सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ।'' यह कर्तव्य उसी से पूरा होगा, जो दृढ़ चित्त और सत्य संकल्प का हो। इससे हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए जिनमें हमसे अधिक आत्मबल हो। हमें उनका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा

www.rajteachers.com

था। मित्र हों तो प्रतिष्ठित और शुद्ध हृदय के हों, मृदुल और पुरुषार्थी हों, शिष्ट और सत्यनिष्ठ हों, जिससे हम अपने को उनके भरोसे पर छोड़ सकें और यह विश्वास कर सकें कि उनसे किसी प्रकार का धोखा न होगा।

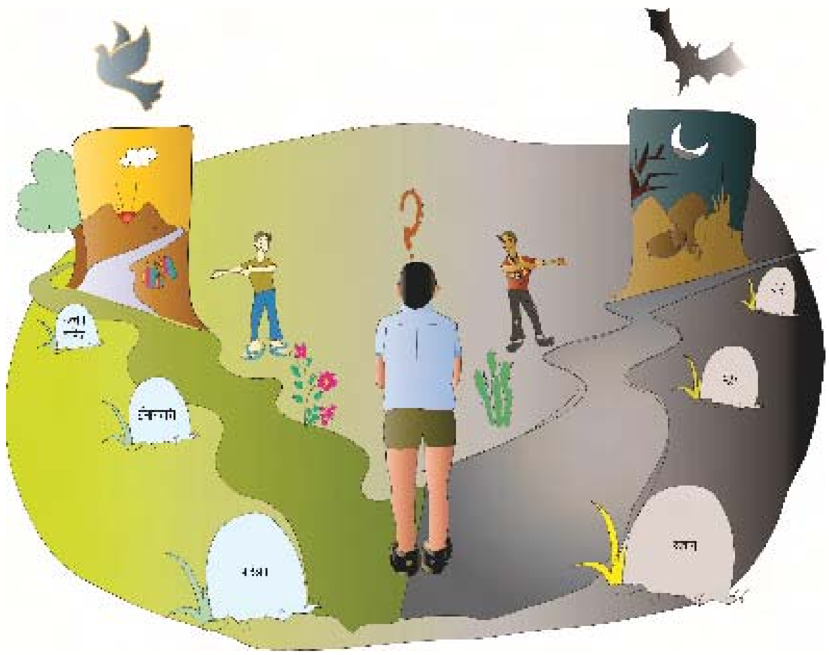

जो बात ऊपर मित्रों के संबंध में कही गई है, वही जान–पहचान वालों के संबंध में ठीक है। जान–पहचान के लोग ऐसे हों, जिनसे हम कुछ लाभ उठा सकते हों, जो हमारे जीवन को उत्तम और आनंदमय बनाने में कुछ सहायता दे सकते हों, यद्यपि उतनी नहीं जितनी गहरे मित्र दे सकते हैं। मनुष्य का जीवन थोड़ा है, उसमें खाने के लिए समय नहीं। यदि क, ख और ग हमारे लिए कुछ नहीं कर सकते हैं, न कोई बुद्धिमानी या विनोद द्वारा हमें ढाढ़स बँधा सकते हैं, न हमारे आनंद में सम्मिलित हो सकते हैं, न हमें कर्तव्य का ध्यान दिला सकते हैं, तो ईश्वर हमें उनसे दूर ही रखे।

आजकल जान–पहचान बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है। कोई भी युवा पुरुष ऐसे अनेक युवा पुरुषों को पा सकता है, जो उसके साथ थियेटर देखने जाएँगे, नाच–रंग में जाएँगे, सैर सपाटे में जाएँगे, भोजन का निमंत्रण स्वीकार करेंगे। यदि ऐसे जान–पहचान के लोगों से कुछ हानि न होगी, तो लाभ भी न होगा। पर यदि हानि होगी तो बड़ी भारी होगी।

कुसंग का ज्वर सबसे भयानक होता है। यह केवल नीति और सद्वृत्ति का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि का भी क्षय करता है। किसी युवा पुरुष की संगति यदि बुरी होगी तो वह उसके पैरों में बंधी चक्की के समान होगी, जो उसे दिन–रात अवनति के गड्ढे में गिराती जाएगी और यदि अच्छी होगी तो सहारा देने वाली बाहु के समान होगी, जो उसे निरंतर उन्नति की ओर उठाती जाएगी। इंग्लैंड के एक विद्वान को युवावस्था में राज दरबारियों में जगह नहीं मिली। इस पर ज़िंदगीभर वह अपने भाग्य को सराहता रहा। बहुत–से लोग तो इसे अपना दुर्भाग्य समझते, पर वह अच्छी तरह जानता था कि वहाँ वह बुरे लोगों की संगति में पड़ता जो उसकी आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होते। बहुत–से लोग ऐसे होते हैं, जिनके घड़ीभर के साथ से भी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, क्योंकि उनके ही बीच में ऐसी–ऐसी बातें कही जाती हैं जो कानों में नहीं पड़नी चाहिए। चित्त पर ऐसे प्रभाव पड़ते हैं, जिनसे उसकी पवित्रता का नाश होता है। बुराई

अटल भाव धारण करके बैठती है। बुरी बातें हमारी धारणा में बहुत दिनों तक टिकती हैं। इस बात को प्रायः सभी लोग जानते हैं कि भद्दे व फूहड़ गीत जितनी जल्दी ध्यान पर चढ़ते हैं, उतनी जल्दी कोई गंभीर या अच्छी बात नहीं। एक बार एक मित्र ने मुझसे कहा कि उसने लड़कपन में कहीं से बुरी कहावत सुनी थी, जिसका ध्यान वह लाख चेष्टा करता है कि न आए, पर बार–बार आता है। जिन भावनाओं को हम दूर रखना चाहते हैं, जिन बातों को हम याद करना नहीं चाहते, वे बार–बार हृदय में उठती हैं और बंधती हैं। अतः तुम पूरी चौकसी रखो, ऐसे लोगों को साथी न बनाओ जो अश्लील, अपवित्र और फूहड़ बातों से तुम्हें हँसाना चाहें। सावधान रहो। ऐसा न हो कि पहले–पहल तुम इसे एक बहुत सामान्य बात समझो और सोचो कि एक बार ऐसा हुआ, फिर ऐसा न होगा। अथवा तुम्हारे चरित्रबल का ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि ऐसी बातें बकने वाले आगे चलकर आप सुधर जाएँगे। नहीं, ऐसा नहीं होगा। जब एक बार मनुष्य अपना पैर कीचड़ में डाल देता है, तब यह नहीं देखता कि वह कहाँ और कैसी जगह पैर रखता है। धीरे–धीरे उन बुरी बातों में अभ्यस्त होते–होते तुम्हारी घृणा कम हो जाएगी। पीछे तुम्हें उनसे चिढ़ न मालूम होगी, क्योंकि तुम यह सोचने लगोगे कि चिढ़ने की बात ही क्या है। तुम्हारा विवेक कुंठित हो जाएगा और तुम्हें भले–बुरे की पहचान न रह जाएगी। अंत में होते–होते तुम भी बुराई के भक्त बन जाओगे। अतः हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का सबसे अच्छा उपाय यही है कि बुरी संगति की छूत से बचो। एक पुरानी कहावत है –

''काजर की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय।
एक लीक काजर की लागि है पे लागि है।''

–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

शब्दार्थ

हतोत्साह	–	जिसमें उत्साह न रहा हो।	पथ प्रदर्शक	–	रास्ता दिखाने वाला।
निष्कलंक	–	बेदाग, निर्दोष	खिन्नता	–	दुख
विवेक	–	भले–बुरे की पहचान	परिणत	–	बदल जाना
धुन	–	लगन			

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. छात्रावस्था में किसकी धुन सवार रहती है?
2. लेखक ने कौन–से ज्वर को सबसे भयानक बताया है?
3. हमारे आचरण पर किसका प्रभाव पड़ता है?

www.rajteachers.com

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. जीवन की औषध है–
   (क) अकूत धन (ख) उच्च पद
   (ग) सुंदर रूप (घ) विश्वासपात्र मित्र ( )
2. सुग्रीव ने मित्र के रूप में चुना–
   (क) राम को (ख) बालि को
   (ग) रावण को (घ) अंगद को ( )
3. हृदय को उज्ज्वल और निष्कलंक रखने का उपाय है–
   (क) खूब सोना (ख) भरपूर भोजन
   (ग) एकाकी रहना (घ) बुरी संगति से बचना ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

(क) युवा पुरुष प्राय : ....से कम काम लेते हैं।

(ख) सच्ची मित्रता में उत्तम......................की–सी निपुणता और परख होती है।

(ग) आजकल ....बढ़ाना कोई बड़ी बात नहीं है।

(घ) मित्र सच्चा.................................के समान होना चाहिए, जिस पर हम पूरा विश्वास कर सकें।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. जीवन की सफलता किस पर निर्भर करती है?
2. कुसंग के ज्वर को सबसे भयानक क्यों कहा गया है?
3. पाठ के अनुसार किस प्रकार की बातें जल्दी ध्यान पर चढ़ती है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. सच्ची मित्रता की क्या विशेषता होती है?
2. मित्र बनाने में कैसी सावचेती जरूरी है?
3. हमें अपने मित्रों से क्या आशा रखनी चाहिए?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. मित्र का क्या कर्तव्य बताया गया है?
2. हम बुराई के भक्त कैसे बन जाते हैं?
3. आशय स्पष्ट कीजिए – 'काजर की कोठरी में कैसो हू सयानो जाय, एक लीक काजर की लागि है पे लागि है।'

भाषा की बात

1. कम खर्च करने वाला = मितव्ययी
   इसी प्रकार आप भी नीचे दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखिए –
   (क) जो नीति का ज्ञाता हो
   (ख) जिस पर विश्वास किया जाए

(ग) जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो
(घ) दूसरों को राह दिखाने वाला
(ड.) जो पका हुआ न हो
(च) जो मन को अच्छा लगता हो

2. निम्नलिखित शब्दों का समास विग्रह कर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
कच्ची मिट्‌टी, जीवन निर्वाह, स्नेह बंधन, उथल–पुथल, जीवन–संग्राम

3. 'अपरिपक्व' शब्द में मूल शब्द परिपक्व है। 'अ' उपसर्ग जुड़ने से नया शब्द बन गया – 'अपरिपक्व'। आप नीचे दिए गए शब्दों को पढ़कर मूल शब्द व उपसर्ग पहचानकर लिखिए।

उपसर्ग युक्त शब्द
अपवित्र
कुमार्ग
अपरिमार्जित
कुसंग

'अ' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए – शिक्षा, चल, योग्य, कारण, सह्य, सफल, शुद्ध।

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए

अवनति	कमाना
मित्र	रूठना
प्रशंसा	बुराई
शुद्ध	दूर

5. नीचे दिए गए रेखांकित पदों के कारक पहचानकर उनके नाम लिखिए–
(क) वे उत्तम संकल्पों से हमें दृढ़ करेंगे।
(ख) वह अपने भाग्य को सराहता रहा।
(ग) एक बार एक मित्र ने मुझसे यह बात कही।
(घ) वह धरती पर गिर पड़ा।

उक्त कारक चिह्न लगाकर आप भी एक–एक नया वाक्य बनाइए।

पाठ से आगे

1. 'मेरा प्रिय मित्र' विषय पर एक निबंध लिखिए।
2. जीवन में अच्छे लोग भी मिलते हैं और बुरे भी। ऐसी किसी घटना का वर्णन कीजिए, जिसमें आपके किसी मित्र ने आपको अच्छा कार्य करने हेतु प्रेरित किया हो।
3. पाठ में सुग्रीव एवं श्री राम की मित्रता का संदर्भ आया है। ऐसे ही अन्य उदाहरण तलाशिए, जिसमें मित्रता का आदर्श प्रस्तुत किया गया हो।
4. ऐसी 10 विशेषताओं की सूची बनाइए; जिनको आप अपने मित्र में पाना चाहते हैं? इस बात पर भी

www.rajteachers.com

मनन करें कि क्या अपने मित्रों के प्रति आप इन मानकों पर खरा उतरते हैं।

यह भी करें

1. आपके कई मित्र होंगे जिनके साथ आप रोज पढ़ते–खेलते हैं। कुछ मित्र ऐसे भी होंगे जो अन्य शहरों–गाँवों में रहते हैं। ऐसे मित्रों से आप पत्र, दूरभाष अथवा नवीन तकनीकी साधन; जैसे–एसएमएस, ई–मेल, सोशल नेटवर्क आदि के माध्यम से संपर्क में रहते होंगे। कहीं दूर रहने वाले ऐसे ही किसी मित्र को पत्र लिखकर उसे मित्रता के महत्त्व से अवगत करवाइए।
2. मित्रता से संबंधित किसी रोचक कविता अथवा कहानी तलाश कर उसे बाल सभा में सुनाइए।

यह भी जानें

आपने दैनिक पत्रों व बाल पत्रिकाओं में 'बाल पत्र मित्र क्लब' के बारे में पढ़ा होगा। यह मित्रता पत्रों के माध्यम से दो दूर रहने वाले बच्चों को जोड़ देती है। आप भी ऐसे ही किसी 'बाल पत्र मित्र क्लब' के सदस्य बनकर पत्रों के माध्यम से अपने विचारों–अनुभवों को साझा करें।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

सो अत्थे जो हत्थे तो मित्तं जंणिरन्तरं वसणे।
तं रुअं जत्थ गुणा तं विष्णाणं जींह धम्मो।।
धन वही है जो हस्तगत है, मित्र वही जो निरंतर विपत्ति में साथ देता है,
रूप वही है, जहाँ गुण है और विज्ञान वही है, जहाँ धर्म है।

www.rajteachers.com

पाठ 7

बस की यात्रा

हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन मिला देती है। सुबह घर पहुँच जाएँगे। हममें से दो को सुबह काम पर हाज़िर होना था इसलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना जरूरी था। लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते। क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं? नहीं, बस डाकिन है।

बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफ़र नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है!

बस कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस से जा रहे थे। हमने उनसे पूछा ''यह बस चलती भी है?'' वह बोले– ''चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी।'' हमने कहा ''वही तो हम देखना चाहते हैं। अपने आप चलती है यह? हाँ जी, और कैसे चलेगी?'' गजब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है। हम आगा–पीछा करने लगे। डॉक्टर मित्र ने कहा ''डरो मत चलो । नई–नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। हमें बेटों की तरह प्यार से गोद में लेकर चलेगी।''

हम बैठ गए। जो छोड़ने आए थे, वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हैं। उनकी आँखें कह रही थीं ''आना–जाना तो लगा ही रहता है। आया है, सो जाएगा, राजा, रंक, फकीर। आदमी को कूच करने के लिए एक निमित्त चाहिए।''

इंजन सममुच स्टार्ट हो गया। ऐसा, जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं। काँच बहुत कम बचे थे। जो बचे थे, उनसे हमें बचना था। हम फ़ौरन खिड़की से दूर सरक गए। इंजन चल रहा था। हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

बस सचमुच चल पड़ी और हमें लगा कि यह गाँधीजी के असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के वक्त अवश्य जवान रही होगी। उसे ट्रेनिंग मिल चुकी थी। हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था।

www.rajteachers.com

पूरी बस सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौर से गुज़र रही थी। सीट का बॉडी से असहयोग चल रहा था। कभी लगता, सीट बॉडी को छोड़कर आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। आठ–दस मील चलने पर सारे भेदभाव मिट गए। यह समझ में नहीं आता था कि सीट में हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है।

एकाएक बस रुक गई। मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली डालकर इंजन में भेजने लगा। अब मैं उम्मीद कर रहा था कि थोड़ी देर बाद बस कंपनी के हिस्सेदार इंजन को निकालकर गोद में रख लेंगे और उसे नली से पेट्रोल पिलाएँगे, जैसे माँ बच्चे के मुँह में दूध की शीशी लगाती है।

बस की रफ़्तार अब पंद्रह–बीस मील हो गई थी। मुझे उसके किसी हिस्से पर भरोसा नहीं था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टेयरिंग टूट सकता है। प्रकृति के दृश्य बहुत लुभावने थे। दोनों तरफ़ हरे–भरे पेड़ थे। जिन पर पक्षी बैठे थे। मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकराएगी। वह निकल जाता तो दूसरे पेड़ का इंतज़ार करता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी।

एकाएक फिर बस रुकी। ड्राइवर ने तरह–तरह की तरकीबें की, पर वह चली नहीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हो गया था, कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे – "बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो इत्तफ़ाक की बात है।"

क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया के नीचे वह बस बड़ी दयनीय लग रही थी। लगता, जैसे कोई वृद्धा थककर बैठ गई हो। हमें ग्लानि हो रही थी कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया तो इस बियाबान में हमें इसकी अंत्येष्टि करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार साहब ने इंजन खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई थी। धीरे–धीरे वृद्धा की आँखों की ज्योति जाने लगी। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे खड़ी हो जाती और कहती– "निकल जाओ, बेटी! अपनी तो वह उम्र ही नहीं रही।"

www.rajteachers.com

एक पुलिया के ऊपर पहुँचे ही थे कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। वह बहुत ज़ोर से हिलकर थम गई। अगर स्पीड में होती तो उछलकर नाले में गिर जाती। मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ़ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा। वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी जान हथेली पर लेकर इसी बस से सफ़र कर रहे हैं। उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है। सोचा, इस आदमी के साहस और बलिदान भावना का सही उपयोग नहीं हो रहा है। इसे तो किसी क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना चाहिए। अगर बस नाले में गिर पड़ती और हम सब मर जाते तो देवता बाँहें पसारे उसका इंतज़ार करते। कहते ''वह महान आदमी आ रहा है जिसने एक टायर के लिए प्राण दे दिए। मर गया, पर टायर नहीं बदला।''

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चली। अब हमने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी थी। पन्ना कभी भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी। लगता था, ज़िंदगी इसी बस में गुजारनी है और इससे सीधे उस लोक को प्रयाण कर जाना है। इस पृथ्वी पर उसकी कोई मंज़िल नहीं है। हमारी बेताबी, तनाव खत्म हो गए। हम बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए। चिंता जाती रही। हँसी–मज़ाक चालू हो गया।

– हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ

वृद्धावस्था	–	बुढ़ापा	हाज़िर	–	उपस्थित
इत्तफ़ाक	–	संयोग	मंजिल	–	लक्ष्य
उत्सर्ग	–	बलिदान	क्षीण	–	कमजोर
ग्लानि	–	मानसिक शिथिलता, दुःख, खेद	रफ़्तार	–	गति
श्रद्धा	–	आदरपूर्ण आस्था या विश्वास	सफ़र	–	यात्रा
बियाबान	–	सुनसान जंगल	प्रयाण	–	प्रस्थान ,जाना

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. लेखक व उसके मित्र ने क्या तय किया?
2. लोगों ने बस के लिए क्या सलाह दी?
3. लेखक व उसके मित्र सुबह घर क्यों पहुँचना चाहते थे?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. समझदार आदमी के शाम वाली बस से सफ़र नहीं करने की वजह थी–

(क) खराब रास्ता (ख) डाकुओं का आतंक

(ग) अधिक किराया (घ) खटारा बस ( )

2. बस को देखने पर लेखक के मन में भाव उमड़ा –

(क) दया का (ख) श्रद्धा का (ग) प्रेम का (घ) घृणा का ( )

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बस कैसी थी?
2. बस के काँचों की क्या हालत थी?
3. रवाना होने के बाद बस पहली बार क्यों रुकी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. लेखक व उसके मित्रों को छोड़ने आने वालों के चेहरे पर कौनसे भाव थे?
2. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धा भाव से देखा।" लेखक के मन में यह भाव क्यों जगा?
3. लेखक को ऐसा क्यों लगा जैसे सारी बस ही इंजन है?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. लेखक रास्ते में आने वाले पेड़ों को दुश्मन क्यों समझ रहा था?
2. 'गज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।" लेखक को बस के अपने आप चलने पर हैरानी क्यों हुई?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए –

   अवज्ञा, इत्मीनान, क्रांतिकारी, हिस्सेदार, प्रयाण

2. 'आया है, सो जाएगा, राजा, रंक, फकीर' एक लोकोक्ति है। हम आपसी बातचीत में अक्सर ऐसी लोकोक्तियों का प्रयोग करते हैं। शिक्षक/शिक्षिका की मदद से ऐसी कुछ लोकोक्तियों को कॉपी में लिखकर उनके अर्थ जानिए।

3. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए –

   (क) आगे–पीछे करना (ख) जान हथेली पर रखना

4. श्रद्धा शब्द का वर्तनी विश्लेषण – श्+र्+अ+द्+ध्+आ है। आप भी निम्नलिखित शब्दों का वर्तनी विश्लेषण कर लिखिए–

   क्षीण प्रयाण उत्सर्ग वृद्धावस्था

पाठ से आगे

1. सविनय अवज्ञा व असहयोग आंदोलन के नेतृत्वकर्ता कौन थे? इन आंदोलनों का क्या उद्देश्य था?
2. आपके पास भी किसी यात्रा के खट्टे–मीठे अनुभव होंगे। अपने अनुभवों को लिखिए।

यह भी करें

1. हरिशंकर परसाई हिंदी के नामी व्यंग्यकार हुए हैं। उन्होंने व्यंग्य विधा को अपनी सशक्त रचनाओं से समृद्ध किया। पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों से परसाई जी की अन्य रचनाओं को पढ़िए।
2. कल्पना कीजिए यदि बस जीवित प्राणी होती, बोल सकती तो अपनी बुरी हालत व कष्टों को किन शब्दों में प्रकट करती?
3. यातायात के कई साधन होते हैं, जैसे–बस, रेल, वायुयान, जलयान। आपने कौन–कौनसे साधनों का उपयोग किया है? लिखिए।

यह भी जानें

बढ़ती सड़क दुर्घटनाएँ व वाहनों से पर्यावरण प्रदूषण हम सबके लिए बड़ी चिंता का विषय है। वाहनों से प्रदूषण को रोकने के लिए नियमित 'प्रदूषण जाँच' करवानी चाहिए। व्यक्तिगत रूप से निजी वाहनों की जगह सरकारी परिवहन सेवाओं के उपयोग को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। साइकिल जैसे प्रदूषण रहित साधनों का उपयोग भी पर्यावरण संरक्षण में मदद का एक कदम हो सकता है।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

Time is Tide, wait for none.

समय एक प्रवाह है, जो किसी की प्रतीक्षा नहीं करता।

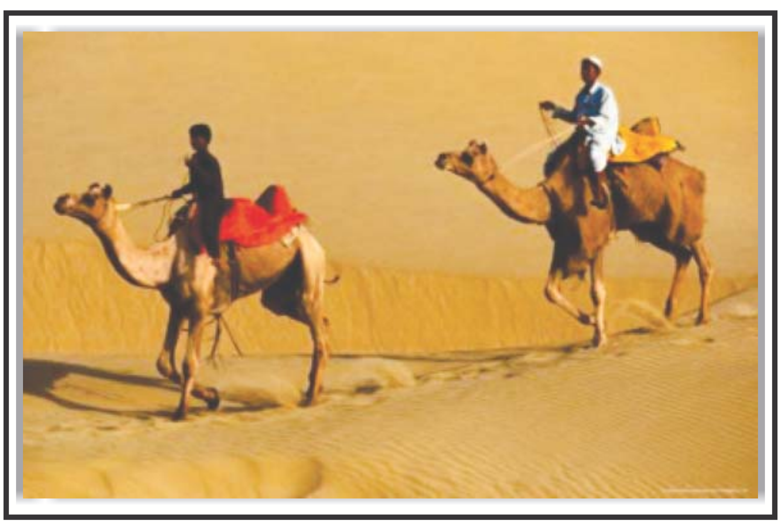

पाठ 8

चंद्रशेखर आज़ाद

आज़ादी किसे अच्छी नहीं लगती। चाहे पिंजड़े में बंद पक्षी हो, चाहे रस्सी से बँधा हुआ पशु। सभी परतंत्रता के बंधनों को तोड़ फेंकना चाहते हैं। फिर मनुष्य तो पशुओं की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और संवेदनशील होता है। उसे गुलामी की जंजीर सदा ही खटकती रहती है। सभी देशों के इतिहास में आज़ादी के लिए अपने प्राणों की बलि देने वाले वीरों के उदाहरण हैं।

1947 ई. के पूर्व भारत परतंत्र था। तब अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के प्रयत्न बराबर होते रहते थे। 1857 ई. में ऐसा ही सामूहिक संघर्ष भारतीय लोगों ने किया था। उसके बाद भी यह संघर्ष निरंतर चलता रहा। जनता में आज़ादी की चिनगारी सुलगाने का काम प्रायः क्रांतिकारी किया करते थे। अंग्रेज़ों को भारत से किसी भी प्रकार निकाल बाहर करने के लिए वे कटिबद्ध थे। ऐसे क्रांतिकारियों को जब भी अंग्रेज़ी सरकार पकड़ पाती, उन्हें फाँसी या कालेपानी की सजा देती।

भारत माँ की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले ऐसे क्रांतिकारियों में चंद्रशेखर आज़ाद का नाम अग्रगण्य है।

बचपन से ही वे बहुत साहसी थे। वे जिस काम को करना चाहते उसे करके ही दम लेते थे। एक बार वे लाल रोशनी देने वाली दियासलाई से खेल रहे थे। उन्होंने साथियों से कहा कि एक सलाई से जब इतनी रोशनी होती है तो सब सलाइयों को एक साथ जलाए जाने से न मालूम कितनी रोशनी होगी। सब साथी इस प्रस्ताव पर खुश हुए, पर किसी की हिम्मत नहीं पड़ी कि इतनी सारी सलाइयों को एक साथ जलाए, क्योंकि रोशनी के साथ सलाई में तेज आँच भी होती है। एक सलाई की आँच झेलना तो कोई बात नहीं थी, पर सब सलाइयों की आँच एक साथ झेलने का खतरा कौन मोल लेता? इस पर चंद्रशेखर सामने आए और उन्होंने कहा कि मैं एक साथ सब सलाइयों को जलाऊँगा। उन्होंने ऐसा ही किया। तमाशा तो खूब हुआ। उनका हाथ भी जल गया; पर उन्होंने उफ् तक नहीं की। जब लड़कों ने उनके हाथ को देखा तो मालूम हुआ कि उनका हाथ बहुत जल गया है। सब लड़के उपचार के लिए दौड़ पड़े, पर चंद्रशेखर के चेहरे पर पीड़ा का

कोई भाव न था और वे खड़े–खड़े मुस्कुरा रहे थे।

प्रारंभ में चंद्रशेखर को संस्कृत पढ़ने के लिए काशी भेजा गए, पर उनका मन वहाँ नहीं लगा और वे भागकर अपने बाबा के घर अलीपुर स्टेट पहुँच गए। यहाँ पर उन्हें भीलों से मिलने का मौका मिला, जिनसे उनकी खूब घनिष्ठता हो गई। उन्होंने उनसे धनुष–बाण चलाना सीखा और थोड़े ही दिनों में वे अच्छे निशानेबाज हो गए। उनके बाबा ने जब यह बात सुनी तो उन्हें फिर काशी भेज दिया, जिससे कि कम से कम उन भीलों का साथ तो छूटे।

इस बार वे काशी में टिक गए। काशी में धार्मिक लोगों की ओर से संस्कृत के छात्रों के लिए आवास तथा भोजन की मुफ़्त व्यवस्था थी। ऐसे ही एक स्थान पर रहकर चंद्रशेखर संस्कृत व्याकरण पढ़ने लगे। इसमें भी उनका मन नहीं लगता था। स्वभाव से उन्हें एक जगह टिककर बैठना भी अच्छा नहीं लगता था। इस कारण वे कभी–कभी गंगा में घंटों तैरते, तो कभी कथा बाँचने वालों के पास बैठकर रामायण, महाभारत और भागवत की कथा सुनते थे। वीरों की गाथाएँ उन्हें बहुत पसंद थीं।

चंद्रशेखर जब दस–ग्यारह वर्ष के थे तब जलियाँवाला बाग का भयंकर हत्याकांड हुआ, जिसमें सैकड़ों निरपराध भारतीयों को गोली का शिकार होना पड़ा। जलियाँवाला बाग चारों ओर से ऊँची–ऊँची दीवारों से घिरा एक मैदान था। यहाँ का रास्ता बहुत ही सँकरा था। एक दिन जलियाँवाला बाग में सभा हो रही थी। उसमें ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भाषण हो रहे थे। सभा चल रही थी कि सेना की एक टुकड़ी के साथ अंग्रेज़ जनरल डायर वहाँ आया और उसने बिना कहे–सुने निहत्थी भीड़ पर गोलियाँ चलवाना शुरू कर दिया। कोई एक हज़ार आदमी मारे गए और कई हज़ार घायल हो गए। सारे भारत में क्रोध की लहर दौड़ गई। आज़ाद ने भी इस दर्दनाक घटना का वर्णन सुना। यद्यपि उनकी अवस्था छोटी ही थी तो भी भारतीय राजनीति में उनकी रुचि जग गई और वे भी अंग्रेज़ों के विरुद्ध कुछ कर दिखलाने के उपाय सोचने लगे।

उन्हीं दिनों ब्रिटिश युवराज एडवर्ड भारत आने को थे। काशी आने का भी उनका कार्यक्रम था। कांग्रेस ने तय किया कि उनका बहिष्कार किया जाए। इस संबंध में जब गाँधीजी ने आंदोलन चलाया तो आज़ाद भी इसमें कूद पड़े। यद्यपि वे अभी बालक ही थे, फिर भी पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उनसे कचहरी में मजिस्ट्रेट ने पूछा–

''तुम्हारा नाम क्या है?''

उन्होंने अकड़ कर बताया, ''आज़ाद''।

''तुम्हारे बाप का नाम क्या है?''

''स्वाधीनता''

''तुम्हारा घर कहाँ है?''

''जेलखाना।''

मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दी, ''इसे ले जाओ और पंद्रह बेंत लगाकर छोड़ दो।''

उन दिनों बेंत की सजा देने का ढंग बहुत ही क्रूरतापूर्ण था। इस घटना का उल्लेख जवाहरलाल

नेहरू ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार किया है, ''उसे, नंगा करके बेंत लगाने वाली टिकठी से बाँध दिया गया। बेंत एक–एक कर उसकी पीठ पर पड़ते और उसकी चमड़ी उधेड़ डालते, पर वह हर बेंत के साथ चिल्लाता, ''महात्मा गाँधी की जय।'' वह लड़का तब तक नारा लगाता रहा, जब तक वह बेहोश न हो गया।'' इस घटना के बाद ही चंद्रशेखर नामक वह बालक 'आज़ाद' के नाम से विख्यात हो गया।

उन्हीं दिनों भारत के क्रांतिकारी अपना संगठन बना रहे थे। चंद्रशेखर आज़ाद उनसे अधिक प्रभावित हुए और वे भी दल में शामिल हो गए। क्रांतिकारियों का कहना था कि अंग्रेज अहिंसात्मक रीति से नहीं मानेंगे। उनको भय दिखाकर छोड़ने के लिए मज़बूर करना होगा। चंद्रशेखर आज़ाद जिस क्रांतिकारी दल के सदस्य बने, वह बड़ा था और सारे भारत में उनकी शाखाएँ फैली थीं।

क्रांतिकारी दल के सामने बहुत–सी व्यावहारिक समस्याएँ थीं। सबसे बड़ी समस्या यह थी कि संगठन के लिए धन कहाँ से मिले। इसलिए दल की ओर से सन् 1925 ई. में उत्तरप्रदेश में 'काकोरी' स्टेशन के निकट चलती गाड़ी को रोककर सरकारी खज़ाना लूट लिया गया।

इस घटना के होते ही ब्रिटिश सरकार की ओर से गिरफ्तारियाँ होने लगीं, पर आज़ाद गिरफ्तार न हो सके। उन्हें पकड़ने के लिए बड़ा इनाम घोषित किया गया। आज़ाद ने भी ठान लिया था कि मुझे कोई जीवित नहीं पकड़ सकेगा, मेरी लाश को ही गिरफ्तार किया जा सकता है। वे आस–पास के स्थानों में छिपे रहे और गोली चलाने का अभ्यास करते रहे।

'काकोरी–षड्यंत्र' के मुकदमे में रामप्रसाद बिस्मिल, रोशनसिंह, अशफ़ाकउल्ला और राजेंद्र लाहिड़ी को फाँसी हो गई।

अब उत्तर भारत के क्रांतिकारी दल के नेतृत्व का पूरा भार आज़ाद पर आ पड़ा। उन्हें इस संबंध में भगतसिंह आदि कई योग्य साथी मिले। संगठन का काम जोरों से होने लगा। इन्हीं दिनों ब्रिटिश सरकार ने विलायत से साइमन की अध्यक्षता में एक आयोग भेजा। जब यह आयोग लाहौर पहुँचा तो सभी दलों ने इसके विरुद्ध प्रदर्शन किया। इस प्रदर्शन में वयोवृद्ध नेता लाला लाजपतराय को लाठी की खतरनाक चोटें आईं। इन्हीं चोटों के कारण कुछ दिनों के बाद उनका प्राणांत हो गया। इससे देश का वातावरण बहुत विक्षुब्ध हो गया। चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु आदि ने यह तय किया कि लालाजी की हत्या के लिए ज़िम्मेदार स्काट या सैंडर्स को मार डालना चाहिए। 07 सितम्बर, 1928 ई. को इन लोगों ने पुलिस सुपरिंटेंडेट सैंडर्स को गोलियों से भून डाला। पर इनमें से कोई भी पकड़ा न जा सका।

सरदार भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने सरकार की दमन–नीति का विरोध करने के लिए 08 अप्रैल, 1929 को सेंट्रल लेजिस्लेटिव असेंबली के मंच पर बम फेंका। इंकलाब ज़िंदाबाद का नारा लगाते हुए वे गिरफ्तार हो गए। अंग्रेज़ सरकार ने उनको लाहौर जेल में फाँसी दे दी।

आज़ाद ने आज़ादी की जंग जारी रखी। 27 फरवरी 1931 की बात है। दिन के दस बजे थे। आज़ाद और सुखदेव राज इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में बैठे थे। इतने में दो पुलिस अधिकारी वहाँ आये। उनमें से एक आज़ाद को पहचानता था। उसने दूर से आज़ाद को देखा और लौटकर खुफिया पुलिस के सुपरिंटेंडेंट

नॉट बावर को उसकी खबर दे दी। नॉट बावर इसकी खबर पाते ही तुरंत मोटर द्वारा अल्फ्रेड पार्क में पहुँचा और आज़ाद से दस गज के फासले पर उसने मोटर रोक दी। पुलिस की मोटर देखकर आज़ाद का साथी तो बच निकला, किंतु वे स्वयं वहीं रह गए। नॉट बावर आज़ाद की ओर बढ़ा। दोनों तरफ से एक साथ गोलियाँ चलीं। नॉट बावर की गोली आज़ाद की जाँघ पर लगी तो आज़ाद की गोली नॉट बावर की कलाई पर, जिससे उसकी पिस्तौल छूटकर गिर पड़ी। उधर और भी पुलिस वाले आज़ाद पर गोली चला रहे थे। हाथ से पिस्तौल छूटते ही नॉट बावर एक पेड़ की ओट में छिप गया। आज़ाद के पास हमेशा काफी गोलियाँ रहती थीं, जिनका इस अवसर पर उन्होंने खूब उपयोग किया। नॉट बावर जिस पेड़ की आड़ में था, आज़ाद मानो उस पेड़ को छेदकर नॉट बावर को मार डालना चाहते थे।

पूरे एक घंटे तक दोनों ओर से गोलियाँ चलती रहीं। कहते हैं, जब आज़ाद के पास गोलियाँ खत्म होने लगीं, तो अंतिम गोली उन्होंने स्वयं अपने को मार ली। इस प्रकार वह महान योद्धा मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति देकर सदा के लिए सो गया। अपनी यह प्रतिज्ञा उन्होंने अंत तक निभाई कि वे कभी जिंदा नहीं पकड़े जाएँगे।

जब आज़ाद का शरीर बड़ी देर तक निस्पंद पड़ा रहा तब पुलिस वाले उनकी ओर आगे बढ़े। आज़ाद का आंतक इतना था कि उन्होंने पहले एक गोली मृत शरीर पर मारकर निश्चय कर लिया कि वे सचमुच मर गए हैं।

आज़ाद जिस स्थान पर शहीद हुए, वहाँ उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है। वहाँ जाने वाला हर व्यक्ति उस वीरात्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता है, जिसने अपनी जन्मभूमि की पराधीनता की बेड़ियों को काटने के लिए अपना जीवन सहर्ष बलिदान कर दिया।

—मन्मथनाथ गुप्त

शब्दार्थ

कचहरी	न्यायालय	क्रूरतापूर्ण	निर्दयता पूर्ण
मजिस्ट्रेट	न्यायाधीश	स्वाधीनता	आज़ादी, स्वतंत्रता
विक्षुब्ध	व्याकुलतापूर्ण, परेशान	अहिंसात्मक	हिंसारहित, शांतिपूर्वक
पुलिस सुपरिंटेंडेंट	पुलिस अधिकारी	षड्यंत्र	साजिश

www.rajteachers.com

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. क्रांतिकारियों ने सरकारी खज़ाना किस उद्‌देश्य से लूटा था?
2. अंग्रेज़ क्रांतिकारियों को पकड़कर किस प्रकार की सजा देते थे?
3. चंद्रशेखर को संस्कृत पढ़ने के लिए कहाँ भेजा गया?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. क्रांतिकारियों में अपने प्राणों की आहुति देने वाले अग्रगण्य थे–
   (क) अज्ञेय (ख) चंद्रशेखर आज़ाद
   (ग) राजेन्द्र लाहिड़ी (घ) इनमें से कोई नहीं ( )
2. मजिस्ट्रेट ने कचहरी में चंद्रशेखर से पिता का नाम पूछा तो चंद्रशेखर ने अपने पिता का नाम बताया–
   (क) पंडित सीताराम (ख) राम प्रसाद बिस्मिल
   (ग) स्वाधीनता (घ) स्वतंत्रता ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. 07 सितम्बर, 1928 ई. को इन लोगों ने................. को गोलियों से भून डाला।
2. मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दी, ''इसे ले जाओ और...................लगाकर छोड़ दो?

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. आज़ाद ने धनुष–बाण चलाना किससे सीखा था?
2. जलियाँवाला बाग हत्याकांड का आज़ाद पर क्या प्रभाव पड़ा ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. क्रांतिकारी दल के सामने क्या समस्या थी ?
2. आज़ाद की किस घटना से नेहरू जी प्रभावित हुए थे ?
3. काकोरी षड्‌यंत्र के मुकदमे में किस–किस को फाँसी की सजा हुई थी।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कचहरी में मजिस्ट्रेट व आज़ाद के संवाद को अपने शब्दों में लिखिए।
2. उस घटना का वर्णन कीजिए जिससे बालक चन्द्रशेखर की बहादुरी प्रदर्शित होती है ?

भाषा की बात

1.(क) धर्म शब्द मे 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर धार्मिक बनता है। आप भी ऐसे शब्द छाँटकर मूल शब्द व प्रत्यय अलग–अलग लिखिए।

(ख) 'इक' प्रत्यय जुड़ने पर मूल शब्द के आरम्भिक अक्षर में आए परिर्वतन की जानकारी प्राप्त कीजिए।

2. पाठ में कई विशेषण शब्द आए हैं, उन्हें सूचीबद्‌ध कीजिए।

www.rajteachers.com

3. इन शब्दों को पढ़िए– संयोग, संविधान। इन दोनों शब्दों में अनुस्वार (ˉ) का प्रयोग हुआ है। वास्तव में ये सम्+योग, सम्+विधान हैं। इन्हें सन्योग, सम्विधान लिखना ठीक नहीं है। य, र, ल, व, श, ष, स, ह इन आठ वर्णों से पूर्व यदि सम् उपसर्ग जुड़ा हो तो ये 'सं' द्वारा ही दर्शाए जाते हैं, जैसे– संयोग, संरचना, संसार आदि।

इसी नियम को ध्यान में रखकर निम्नलिखित शब्दों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए–

सम्+शय

सम्+हारक

सम्+स्मरण

सम्+शोधन

पाठ से आगे

1. चन्द्रशेखर 'आज़ाद' के जीवन से आपको क्या सीखने को मिला? अपने विचार लिखिए।
2. हमारे देश में आज़ाद की तरह अन्य कई क्रांतिकारी हुए हैं, उनकी जानकारी ऐसी सारणी बनाकर भरिए –

क्रांतिकारी का नाम	किए गए विशेष कार्य/योगदान

3. "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूँगा।" यह नारा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने दिया था। आप भी ऐसे नारे और उन्हें देने वाले महापुरुषों के नाम लिखिए।

यह भी करें

स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारियों के चित्रों का संग्रह कर 'मेरा संकलन' में लगाएँ।

तब और अब

पुराना रूप	विरुद्ध	वयोवृद्ध	नहीँ	गोलियाँ
मानक रूप	विरुद्ध	वयोवृद्ध	नहीं	गोलियों

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

संकट आने पर धर्म, धैर्य तथा सत्य का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

www.rajteachers.com

केवल पढ़ने के लिए

अशफ़ाक उल्ला खाँ का पत्र

मेरे प्यारे देशवासियो!

भारत माता को आज़ाद करवाने के लिए रंगमंच पर हम अपनी भूमिका अदा कर चुके हैं। गलत किया या सही, हमने जो भी किया, स्वतंत्रता पाने की भावना से प्रेरित होकर किया। हमारे अपने निंदा करें या प्रशंसा, लेकिन हमारे दुश्मनों तक को हमारी हिम्मत और वीरता की प्रशंसा करनी पड़ी। कुछ लोग कहते हैं कि हमने गुलामी को न सहा और देश में आतंकवाद फैलाना चाहा पर यह सब गलत है। हमारे कितने ही साथी आज भी आज़ाद हैं, फिर भी हमारे किसी साथी ने कभी भी किसी नुकसान पहुँचाने वाले तक पर गोली नहीं चलाई। हिंसा करना हमारा उद्देश्य नहीं था। हम तो आज़ादी हासिल करने के लिए देश में क्रांति लाना चाहते थे।

सरकार भी अंग्रेजों की और जज भी अंग्रेज़ों के, फिर न्याय की माँग किससे करें। जजों ने हमें निर्दयी, बर्बर, मानवता पर कलंक आदि विशेषणों से पुकारा है। हमारे शासकों की क़ौम के जनरल डायर ने निहत्थों पर गोलियाँ चलवाईं। बच्चों, बूढ़ों, स्त्री–पुरुषों सब पर दनादन गोलियाँ दागी गईं। तब इंसाफ़ के इन ठेकेदारों ने अपने भाई बंधुओं को किन विशेषणों से संबोधित किया था। फिर हमारे साथ ही यह सुलूक क्यों ?

हिंदुस्तानी भाइयो! आप चाहे किसी भी धर्म या संप्रदाय के मानने वाले हों, देश के काम में साथ रहो। आपस में व्यर्थ न लड़ो। रास्ते चाहे अलग हों, लेकिन उद्देश्य तो सबका एक ही है। सभी कार्य एक ही उद्देश्य की पूर्ति के साधन हैं। एक होकर देश की नौकरशाही का मुकाबला करो। अपने देश को आज़ाद कराओ।

देश के 7 करोड़ मुसलमानों में मैं पहला मुसलमान हूँ, जो देश की आज़ादी के लिए फाँसी पर चढ़ रहा हूँ। यह सोचकर मुझे गर्व महसूस होता है।

सभी को मेरा सलाम। हिंदुस्तान आज़ाद हो। सब खुश रहें।

आपका भाई,
अशफ़ाक

अशफ़ाक उल्ला खाँ 'हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' के संस्थापकों में से एक थे, जिनका उद्देश्य सशस्त्र संघर्ष कर भारत माँ को आज़ाद कराना था। जब उन्हें काकोरी कांड में फाँसी की सज़ा सुनाई गई, तब उन्होंने कहा कि यह एक विडंबना है कि जो हमें सालों से लूटते आए हैं, वे हमें लूट के अपराध में सज़ा सुना रहे हैं। काकोरी कांड में चार क्रांतिकारियों को फाँसी हुई – रामप्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह और राजेंद्र लाहिड़ी।

अशफ़ाक उल्ला खाँ ने यह पत्र फाँसी के तख़्ते पर चढ़ने से तीन दिन पहले लिखा। वे शब्द जो उन्होंने फाँसी के तख्ते पर चढ़ते हुए बोले थे, आज भी हमारे कानों में गूँज रहे हैं – ''मैंने कभी किसी आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रंगे। मेरा इंसाफ़ ख़ुदा के सामने होगा।''

पाठ 9

केवट का प्रेम

चौपाई–बरबस राम सुमंत्रु पठाए। सुरसरि तीर आपु तब आए।।
मॉँगी नाव न केवटु आना। कहइ तुम्हार मरमु मैं जाना।।
चरण कमल रज कहुँ सब कहई। मानुष करनि मूरि कछु अहई।।
छुअत सिला भई नारि सुहाई। पाहन तें न काठ कठिनाई।।
तरनिउ मुनि घरिनी होइ जाई। बाट परइ मोरि नाव उड़ाई।।
एहिं प्रतिपालउँ सब परिवारू। नहिं जानउँ कछु अउर कबारू।।
जौं प्रभु पार अवसि गा चहहू। मोहि पद पदुम पखारन कहहू।।

छन्द– पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं।
मोहि राम राउरि आन दसरथ सपथ सब साची कहौं।।
बरु तीर मारहुँ लखन पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं।।

सोरठा–सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे
बिहसे करुनाएन, चितइ जानकी लखन तन।।

चौपाई–कृपासिंधु बोले मुसुकाई। सोई करु जेंहि तव नाव न जाई।।
बेगि आनु जल पाय पखारू। होत विलम्बु उतारहि पारू।।
जासु नाम सुमिरत एक बारा। उतरहिं नर भवसिंधु अपारा।।
सोइ कृपालु केवटहि निहोरा। जेहिं जगु किय तिहुं पगहु ते थोरा।।
केवट राम रजायसु पावा। पानि कठवता भरि लेई आवा।।
अति आनंद उमगि अनुरागा। चरन सरोज पखारन लागा।।
बरसि सुमन सुर सकल सिहाहीं। एहि सम पुण्यपुंज कोई नाहीं।।

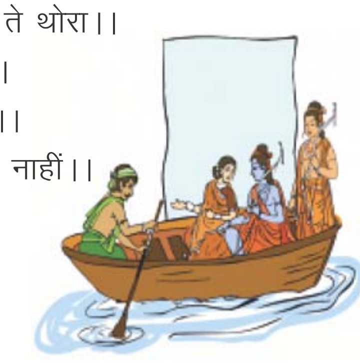

दोहा– पद पखारि जलु पान करि, आपु सहित परिवार।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लेइ पार।।

–तुलसीदास (श्रीरामचरितमानस से)

www.rajteachers.com

शब्दार्थ

बरबस	–	मुश्किल में, लाचार	सुरसरि	–	गंगा
मरमु	–	मर्म, रहस्य	मूरि	–	जड़ी–बूटी
पाहन	–	पत्थर	तरनिउ	–	नाव भी
घरिनी	–	घरवाली, पत्नी	कबारू	–	काम–धंधा
पदुम	–	कमल	चितइ	–	देखकर
भवसिंधु	–	संसार रूपी सागर	रजायसु	–	राजा की आज्ञा
थोरा	–	कम	सरोज	–	कमल
अनुरागा	–	प्रेम	सुर	–	देवता
सुमन	–	फूल	बैन	–	वचन
पितर	–	पूर्वज	मुदित	–	प्रसन्न

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. श्रीराम के पैरों की धूल का क्या प्रभाव था?
2. केवट श्रीराम को बिना पैर धोए नाव पर क्यों नहीं बैठाना चाहता था?

लिखें

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. प्रस्तुत पाठ तुलसीदास के किस ग्रंथ से लिया गया है ?
2. यह पाठ कौनसी भाषा में लिखा गया है?
3. अहल्या किस ऋषि की पत्नी थी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. केवट श्रीराम के चरण कमलों की रज का कौनसा रहस्य जानता था ?
2. श्रीराम के पैर धोकर केवट प्रसन्न क्यों हो गया था ?
3. केवट लक्ष्मण जी के क्रोध से भी क्यों नहीं डरता था ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. इस पाठ में केवट का श्रीराम के प्रति अगाध प्रेम प्रकट हुआ है, कैसे? लिखिए।
2. 'केवट का प्रेम' पाठ श्रीराम की उदारता का सुंदर उदाहरण है, कैसे? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।

भाषा की बात

1. जब एक शब्द के कई समानार्थी शब्द आते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। जैसे– इस पाठ में पत्थर के अर्थ में 'सिला' व 'पाहन' शब्द प्रयुक्त हुए हैं। कमल शब्द के अर्थ में 'पदम' व 'सरोज'।

निम्नांकित शब्दों के सही पर्यायवाची समूह चुनकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।

गंगा – सागर, जलनिधि, रत्नाकर

पैर – पुष्प, कुसुम, प्रसून, सुमन

समुद्र – देवनदी, भागीरथी, जाह्नवी

संसार – पद, चरण, पाँव, पग

फूल – जग, जगत, लोक

आप अन्य शब्दों का चयनकर उनके पर्यायवाची लिखिए।

2. ध्यान से पढ़िए–

तुलसी–सा कवि, मीराँ–सी भक्तिन

यहाँ समानता बताने के लिए दो शब्दों 'सा' और 'सी' का प्रयोग किया गया है। आप भी ऐसे ही समानता बताने वाले शब्दों का प्रयोग कर वाक्य बनाइए–

(1) राम–सा

(2) सीता–सी

(3) आकाश–सा

3. कोष्ठकों में लिखे वर्णों से नए शब्द बनाइए। आप वर्णों, मात्राओं की आवृत्ति कर सकते हैं।

स	ह	ा
य	त	ी

जैसे – ताता, तात, सीता.............

पाठ से आगे

1. यदि आप केवट के स्थान पर होते तो श्रीराम से क्या निवेदन करते?
2. प्रस्तुत पाठ अवधी भाषा में लिखा गया है। अवधी भाषा के संबंध में शिक्षक/शिक्षिका से जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. केवट की तरह राम के अन्य भक्तों के भी नाम जानिए।

यह भी करें

1. अहल्या उद्धार व वामन अवतार की अंतर्कथाएँ अपने गुरुजी से पूछिए।

यह भी जानें

श्रीरामचरितमानस महाकवि तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य है जिसमें श्रीराम की लीलाओं को मनुष्य के रूप में वर्णित किया है। श्रीरामचरितमानस में सात सोपान (काण्ड) हैं, जिनमें श्रीराम की लीलाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति की सुंदर व आदर्श छवि प्रस्तुत हुई है।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

कागा किसका धन हरै, कोयल किसकूं देय। मीठी वाणी बोल के, जग अपनो कर लेय।।

www.rajteachers.com

पाठ 10

छोटा जादूगर

कार्निवाल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था। मैं खड़ा था। उस छोटे फुहारे के पास, जहाँ एक लड़का चुपचाप शरबत पीने वालों को देख रहा था। उसके गले में फटे कुर्ते के ऊपर से एक मोटी–सी सूत की रस्सी पड़ी थी और जेब में कुछ ताश के पत्ते थे। उसके मुँह पर गंभीर विषाद के साथ धैर्य की रेखा थी। मैं उसकी ओर न जाने क्यों आकृष्ट हुआ। उसके अभाव में भी संपूर्णता थी। मैंने पूछा ,''क्योंजी तुमने इसमें क्या देखा?''

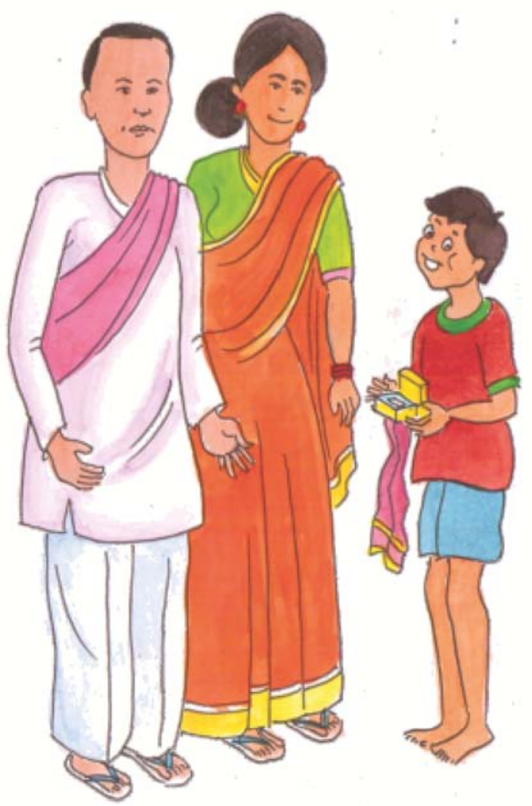

''मैंने सब देखा है! यहाँ चूड़ी फेंकते हैं। खिलौनों पर निशाना लगाते हैं। तीर से नंबर छेदते हैं। मुझे तो खिलौनों पर निशाना लगाना अच्छा मालूम हुआ। जादूगर तो बिलकुल निकम्मा है। उससे अच्छा तो ताश का खेल मैं ही दिखा सकता हूँ। उसने बड़े विश्वास में कहा, उसकी वाणी में कहीं भी बनावट नहीं थी। मैंने पूछा "और उस पर्दे में क्या हैं? वहाँ तुम गए थे?"

''नहीं, वहाँ मैं न जा सका। टिकट लगता है।''
मैंने कहा, ''तो चलो, मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ।''
मैंने मन ही मन कहा, "भाई आज के तुम्हीं मित्र रहे।''
उसने कहा, ''वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए, निशाना लगाया जाए।''

मैंने उससे सहमत होकर कहा, ''तो फिर चलो, पहले शरबत पी लिया जाए।'' उसने स्वीकार सूचक सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा, "तुम्हारे परिवार में और कौन–कौन हैं?''
''माँ और बाबूजी।''
''उन्होंने तुमको वहाँ जाने के लिए मना नहीं किया?''
"बाबू जी जेल में हैं।''
"क्यों?''
''देश के लिए।'' वह गर्व से बोला।

''और तुम्हारी माँ?
''वह बीमार है।''
''और तुम तमाशा देख रहे हो?''

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा, ''तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।''

मैं आश्चर्य से उस तेरह–चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

''हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी! माँ बीमार हैं, इसीलिए मैं नहीं गया।''
''कहाँ?''
''जेल में। जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की सेवा करूँ और अपना पेट भरूँ।''

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों तरफ बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मैं व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा, ''अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।''

हम दोनों उस जगह पर पहुँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखने वाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया, लेकिन उठाता कैसे? कुछ जेब में कुछ मेरे रूमाल में रख लिये गए।
लड़के ने कहा, ''बाबूजी, आपको तमाशा दिखाऊँगा। बाहर आइए, मैं चलता हूँ।'' वह नौ दो ग्यारह हो गया। मैंने मन ही मन कहा, ''इतनी जल्दी आँखें बदल गईं।''

मैं घूमकर पान की दुकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर–उधर टहलता, देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर–नीचे आना–जाना देखने लगा। अकस्मात किसी ने ऊपर हिंडोले से पुकारा, ''बाबूजी!''
मैंने पूछा, ''कौन?''
''मैं हूँ छोटा जादूगर।''

कलकत्ता के सुरम्य वनस्पति उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी–सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बातें हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने का खादी का झोला, साफ जाँघिया और आधी बाँहों का कुर्ता, सिर पर मैला रूमाल सूत की रस्सी से बँधा था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ कहने लगा, ''बाबूजी नमस्ते। आज कहिए तो खेल दिखाऊँ?''
''नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं।'' '' फिर इसके बाद क्या गाना–बजाना होगा, बाबू जी?''
''नहीं जी, तुम को...........क्रोध से मैं कुछ और कहने ही जा रहा था, तभी श्रीमती ने कहा, ''दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए भला कुछ मन तो बहले''। मैं चुप हो गया, क्योंकि श्रीमती जी की वाणी में वह माँ की–सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लड़के को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरंभ किया।

www.rajteachers.com

उस दिन कार्निवाल के सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डा वर काना निकला। लड़के की वाचालता से ही अभिनय हो रहा था। सब हँसते–हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था, बालक को आवश्यकता ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया है। यही तो संसार है। ताश के सब पत्ते लाल हो गए, फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े–टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने आप नाच रहे थे। मैंने कहा, ''अब हो चुका। अपना खेल बटोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।''

श्रीमती जी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल पड़ा। मैंने कहा, ''लड़के!''

''छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।''

कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमती जी ने कहा, ''अच्छा तुम इस रुपये से क्या करोगे?''

''पहले भरपेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कंबल लूँगा।'' मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा, ''ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं, उसके एक रुपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न!''

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता–कुंज देखने के लिए चल दिए। इस छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। अस्ताचलगामी सूर्य की अंतिम किरण वृक्षों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। शांत वातावरण था। हम लोग धीरे–धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे। रह–रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो आता था। सचमुच वह एक झोंपड़ी के पास कंबल कंधे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोककर उससे पूछा, ''तुम यहाँ कहाँ''?

''मेरी माँ यहीं है ना। अब उसे अस्पताल वालों ने निकाल दिया है।'' मैं उतर गया। उस झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी। छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर से डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा, ''माँ'' मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने कार्यालय में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया था। फिर भी चलते–चलते एक बार उस उद्यान को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता तो और भी...... । मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्दी लौट आना था।

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि निर्मल धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोटे जादूगर का रंगमंच सजा था। मैं मोटर रोककर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रही थी, भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर यह सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता नहीं थी। वह जब औरों को हँसाने की

चेष्टा कर रहा था, तब जैसे वह स्वयं काँप जाता था, मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल समाप्त हो जाने पर पैसे बटोर कर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण–भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा, "आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं ?" माँ ने कहा कि "आज तुरंत चले आना। मेरी अंतिम घड़ी समीप है।" अविचल भाव से उसने कहा।

"तब भी तुम खेल दिखाने चले आए।" मैंने कुछ क्रोध से कहा। "मनुष्य के सुख–दुख के माप का अपना ही साधन होता है। उसी के अनुपात से वह तुलना करता है।"

उसके मुँह पर वही परिचित तिरस्कार की रेखा फूट पड़ी। उसने कहा, "क्यों न आता?" और कुछ अधिक कहने में अब वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षणभर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा, जल्दी चलें। मोटर वाला मेरे बताए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़ी के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़ी में माँ–माँ पुकारते हुए घुसा। मैं पीछे था, किंतु स्त्री के मुँह से "बे...." निकलकर रह गया, उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर गए। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था। मैं स्तब्ध था। उस उज्ज्वल धूप में समग्र संसार जैसे जादू–सा मेरे चारों ओर नृत्य करने लगा।

–जयशंकर प्रसाद

शब्दार्थ

कार्निवाल	–	मेला	विषाद	–	उदासी / गम
तिरस्कार	–	उपेक्षा	चेष्टा	–	प्रयास
कलनाद	–	मीठी आवाज़	संपूर्णता	–	पूरापन
निर्मल	–	स्वच्छ	उद्यान	–	बगीचा
अस्ताचलगामी	–	अस्त होने वाला, सूर्यास्त होना	स्तब्ध	–	हैरान

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. छोटे जादूगर ने मेले में क्या–क्या देखा?
2. छोटा जादूगर पर्दे के पीछे क्यों नहीं गया था?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. छोटे जादूगर के पिता उन दिनों थे–
   (क) शहर में (ख) जेल में (ग) कार्निवाल में (घ) खेत में ( )
2. छोटा जादूगर अपनी माँ के लिए ले जाना चाहता था–
   (क) उपहार (ख) धन (ग) साड़ी (घ) पथ्य ( )
3. ''मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।'' इस कथन से छोटे जादूगर के व्यक्तित्व के किस पहलू का पता चलता है –
   (क) स्वार्थीपन का
   (ख) याचना की प्रवृत्ति का
   (ग) माँ के प्रति कर्तव्य निर्वाह का
   (घ) खाने–पीने की प्रवृत्ति का

अति लघूत्तरात्मक

1. छोटा जादूगर किसको कहा गया है ?
2. छोटे जादूगर ने कितने खिलौनों पर गेंद से निशाना लगाया ?

लघूत्तरात्मक

1. छोटे जादूगर के पिता जेल क्यों गए ?
2. लेखक की पत्नी ने छोटे जादूगर से क्या कहा ?
3. छोटे जादूगर का खेल उस दिन क्यों नहीं जमा ?

दीर्घ उत्तरात्मक

1. लेखक ने छोटे जादूगर की झोंपड़ी में क्या देखा ?
2. कहानी के आधार पर छोटे जादूगर की दशा का वर्णन कीजिए।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए–
   लोट–पोट होना   अंतिम घड़ी समीप आना

नौ दो ग्यारह होना आँखें बदलना

2. निम्नलिखित तत्सम शब्दों के तद्भव रूप लिखिए–

कर्ण, दुग्ध, नृत्य, रात्रि

3. निम्नलिखित शब्दों का उनके सामने लिखे अर्थ से मिलान कीजिए–

जैसे– तिरस्कार	–	उपेक्षा
समग्र		बंदीगृह
स्वीकार		रास्ता
पथ		आवास
कारावास		मंजूर
निकेतन		पूरा

पाठ से आगे

1. छोटे जादूगर की माँ अपने पुत्र के बारे में क्या सोचती होंगी ?
2. छोटे जादूगर के स्थान पर आप होते तो माँ के लिए क्या–क्या करते और कैसे?

यह भी करें

1. क्या आपने कभी जादू का खेल देखा है। एक जादूगर कौन–कौनसे खेल दिखाता है? अपने अनुभव के आधार पर लिखिए।
2. छोटे बच्चों को विभिन्न प्रकार के कामों में लगाना बालश्रम कहलाता है। बाल मजदूरी कानूनी तौर पर मना है। क्या इस कहानी में छोटे बालक का खेल दिखाना उचित माना जाएगा? अपनी कक्षा में इसकी चर्चा करें।

यह भी जानें

जयशंकर प्रसाद की 'छोटा जादूगर' कहानी का मुख्य पात्र एक तेरह–चौदह वर्षीय किशोर है। प्रेमचंद द्वारा रचित 'ईदगाह' कहानी का मुख्य पात्र भी एक बालक है। अपने विद्यालय के पुस्तकालय से 'ईदगाह' तलाश कर पढ़िए।

तब और अब

पुराना रूप	उद्यान	दिनाङ्क	ठण्डा
मानक रूप	उद्यान	दिनांक	ठंडा

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

माँ की ममता दुनिया के लिए ईश्वर का आशीर्वाद है।

www.rajteachers.com

पाठ 11

ये भी धरती के बेटे हैं

पात्र

1. पिता 2. पुत्र 3. तस्कर बालक
4. भिखारी बालक 5. जेबकतरा बालक

(मंच पर मद्‌धम प्रकाश है। पिता–पुत्र चले जा रहे हैं। पार्श्व में कुछ मिली–जुली आवाज़ें उभरती हैं। हम भूखे हैं। हम नंगे हैं। हम बेघर हैं।)

पुत्र : ये किसकी आवाज़ें, ये कैसी आवाज़ें ? सुनो पिताजी उधर सुनो, ये कौन लोग हैं? (पार्श्व में पुनः आवाज़ें)
"ओ बाबू दो पैसे दे दे। ईश्वर तेरा भला करेगा। ओ माता बासी रोटी का टुकड़ा दे दे फटा पुराना कपड़ा दे दे।"
"आगे चल, आगे बढ़, चल हट। शर्म नहीं आती है तुझको भीख माँगते!"
"फंटे में क्या, है ? कुछ नहीं। दिखाओ! घड़ियाँ ये कैसी घड़ियाँ हैं? तस्करी का धंधा करता है, अबे चरकटे।
"मेरी जेब। कट गई मेरी जेब। वो भागा। वो भागा लड़का, पकड़ो, पकड़ो!"
(दौड़ने की आवाज़)
"क्यों बे! क्यों बे, जेब काटता है, चोरी करता है।

पुत्र : सुनो पिताजी, सुना आपने। कौन लोग थे? यह क्या चक्कर है?

पिता : बेटा, ये बच्चे हैं! छोटे–छोटे बच्चे। ये बुरे काम करते हैं। कोई जेब काटता, काई भीख माँगता कोई तस्करी का धंधा करता है। पुलिस पकड़ती है इनको। ये सब समाज को दूषित करते हैं।

पुत्र : क्यों करते हैं बुरे काम ये? क्या इनके माँ–बाप नहीं हैं?
(प्रकाश उभरता है। मंच के दाएँ ओर से एक लड़का भिक्षा का पात्र लिए प्रवेश करता है,

उसके पीछे दो तीन बच्चे और हैं।)

भिखारी : हाँ, मेरे माँ–बाप हैं पर वे अंधे हैं। उनका होना, न होने से भी ज्यादा वेदनापूर्ण है।

(मंच के बाएँ ओर से जेब कतरे और तस्कर का प्रवेश, उनके पीछे भी कई बच्चे और हैं।)

जेबकतरा : मेरे तो माँ–बाप नहीं हैं। मैं अनाथ हूँ। मेरा कोई नहीं कहीं पर।

तस्कर : मेरी माँ है, पिता नहीं है।

पिता : क्या करते हो तुम सब? क्या धंधा करते हो?

भिखारी : भीख माँगता हूँ, मैं दर–दर।

जेबकतरा : मैं लोगों की जेब काटता हूँ। चोरी करता हूँ।

तस्कर : माल इधर का उधर, उधर का इधर। बड़े–बड़े तस्कर मुझसे यह काम कराकर मुझको भी टुकड़ा दो टुकड़ा दे देते हैं।

पुत्र : पर ये तो सब बुरे काम हैं।

पिता : शर्म नहीं आती तुमको यों भीख माँगते, जेब काटते, चोरी करते, तस्करी करते? डूब मरो तुम।

भिखारी : हमें पता है। भीख माँगने से मरना ज्यादा अच्छा है। लेकिन कैसे मरें छोड़कर अपने मात–पिता को, पापी पेट नहीं होता तो हम यहाँ हाथ नहीं फैलाते। दर–दर नहीं माँगते फिरते।

जेबकतरा : जेब काटकर अपना जीवन नहीं काटते।

तस्कर : गुंडों के हाथों में पड़कर ऐसे गंदे काम न करते ।

पुत्र : क्या तुमको अहसास नहीं होता तुम कितने अपमानित हो।

पिता : जनता की नज़रों में कितने गिरे हुए हो! क्या तुम भी इंसान नहीं हो?

भिखारी : हमें पता हैं, हम भी धरती के बेटे हैं।

जेबकतरा : लेकिन किस्मत के हेटे हैं।

तस्कर : गंगा–जमुना की धारा से बिछुड़ गंदगी में लेटे हैं। हमें गंदगी से निकाल लो।

तीनों : हमें गंदगी से निकाल लो।

भिखारी : हम गरीब हैं, लेकिन इतने बुरे नहीं हैं।

तस्कर : जितना लोगों ने समझा है।

जेबकतरा : हम मजबूरी के हाथों में पड़े हुए हैं।

भिखारी : हम बदकिस्मत भिक्षा के टुकड़ों पर पलकर बड़े हुए हैं।

तस्कर : हमको राह बता दे कोई। हम भूले भटके राही हैं। चौराहे पर खड़े हुए हैं।

पुत्र : क्या तुम स्कूल नहीं जाते हो?

तस्कर : हम अनपढ़ हैं। हमें क्या पता स्कूल किसे कहते हैं।

भिखारी : काँटे ही जिंदगी है हमारी। हमें क्या पता सुंदर फूल किसे कहते हैं?

जेबकतरा : हम भँवरों में फंसे हुए हैं। हम क्या जाने जग में फूल किसे कहते हैं।

पुत्र : क्या तुम पढ़ने के इच्छुक हो?

तस्कर : हाँ, हाँ, हाँ, कौन नहीं पढ़ना चाहेगा। अनपढ़ लोगों का जीवन है, पशुओं जैसा।

जेबकतरा : पढ़कर–लिखकर कौन नहीं बढ़ना चाहेगा।

भिखारी : उन्नति के ऊँचे शिखरों पर कौन नहीं चढ़ना चाहेगा।
पिता : ऐसा अगर सोचते हो तो बुरे काम क्यों करते हो फिर ?
भिखारी : और क्या करें ?
तस्कर : कहाँ जाएँ हम ?
जेबकतरा : कैसे जीएँ ?
पिता : काम करो कुछ। काम करो कुछ।
जेबकतरा : सब कहते हैं काम करो कुछ, काम करो कुछ। लेकिन कोई काम करने के लिए नहीं देता।
भिखारी : कोई ऐसा धनी नहीं है जो हम पर कुछ खर्च कर सके। हमको जिंदगी दे सके। जीवन की रोशनी दे सके।
तस्कर : सबको अपनी पड़ी हुई है। कौन दूसरों की सुनता है।
जेबकतरा : फूल बीनने वाले हैं सब, काँटे कौन यहाँ चुनता है।
पुत्र : कौनसा काम तुम कर सकते हो ?
तस्कर : जो मिल जाए।
पुत्र : जो मिल जाए!
जेबकतरा : जैसा भी हो। हम घर–घर सब्जी बेचेंगे।
तस्कर : जूतों पर पालिश कर लेंगे।
भिखारी : हम घर में नौकर रह लेंगे। कपड़े धोएँगे। बरतन माजेंगे। घर को साफ रखेंगे। पर हमको अपनाए कोई। हमें सुधरने का अवसर दे। (पुत्र पिता की ओर देखता है।)

पुत्र : इन्हें ले चलो, इन्हें ले चलो। इन्हें स्कूल में भर्ती कर दो। इन्हें काम दे देंगे घर का। काम करेंगे, पढ़ेंगे–लिखेंगे। इनका जीवन सुधर जाएगा।
पिता : ये भिखमंगे, चोर, उचक्के इनको कैसे घर ले जाएँ!
पुत्र : नहीं पिताजी, ये नफ़रत के पात्र नहीं हैं। लाचारी ने इनको ऐसा बना दिया। ये भी भारत के बच्चे हैं। इनमें मुझमें फ़र्क नहीं है। आप धनी हैं। इनका जीवन सुधर गया तो सब आपके गुण गाएँगे। पढ़–लिखकर अच्छे कामों में लगकर ये भी भारत माँ के सच्चे बच्चे

कहलाएँगे। इन्हें ले चलो।

(पुत्र पिता से आग्रह करते हुए मचलता है। पिता के चेहरे पर हलकी मुसकान आती है।)

पिता : अच्छा तुम सब मेरे साथ चलोगे? जो काम तुम्हें मैं दूँगा, सब कर लोगे!

सब : हाँ, हाँ, बेशक आप धन्य हैं, आप धन्य हैं। आप जैसे सब धनी, उदार हो जाएँ तो कोई बच्चा भीख न माँगे, न जेब काटे। सबके दुख–सुख सब में बँट जाएँ। हम अनाथ बच्चों के सिर से मुसीबतों के ये काले बादल हट जाएँ।
हम जीवन भर सदा आपके गुण गाएँगे। भारत का झंडा हम भी अब अपने इन उज्ज्वल हाथों से फहराएँगे।

(पर्दा गिरता है।)

ओमप्रकाश आदित्य

शब्दार्थ

मद्धम	–	धीमा	पार्श्व	–	पीछे से, बगल से
अहसास	–	अनुभूति	शिखर	–	चोटी

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

किसने–किससे कहा

1. मेरी माँ है, पिता नहीं हैं।
2. पर ये तो सब बुरे काम हैं।
3. हमें पता है, हम भी धरती के बेटे हैं।
4. हमें गंदगी से निकाल लो।
5. अच्छा तुम सब मेरे साथ चलोगे? जो भी काम तुम्हें मैं दूँगा सब कर लोगे?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. तस्करी करने वाला बालक बेच रहा था–
   (अ) अफीम (ब) गाँजा (स) घड़ी (द) पेन
2. भिखारी बालक ने अपने माता–पिता के बारे में बताया –
   (अ) उसके माता–पिता नहीं थे।
   (ब) उसके माता–पिता अंधे थे।
   (स) उसके माता–पिता विकलांग थे।
   (द) उसके माता–पिता लापता थे।

www.rajteachers.com

उचित शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1. भीख माँगता हूँ मैं .... । (घर–घर / दर–दर)।
2. गंगा–जमुना की धारा से बिछुड़ गंदगी में .... हैं। (बैठे / लेटे)।
3. हम .... के हाथों में पड़े हुए हैं। (मजबूरी / गरीबी)।
4. सबको .... पड़ी है। (अपनी / मेरी)।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पिता ने जब बच्चों से उनके काम के बारे में पूछा तब तस्कर बच्चे ने क्या कहा?
2. 'हमें गंदगी से निकाल लो।' यहाँ गंदगी से क्या आशय है?
3. तस्कर बच्चे ने अनपढ़ लोगों को किसके समान बताया?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. पिता ने जीने का क्या तरीका बताया?
2. पढ़ने–लिखने के क्या लाभ बताए गए हैं?

भाषा की बात

1. पाठ में 'बदकिस्मत' और 'अनपढ़' शब्द आए हैं। बदकिस्मत 'बद' और 'किस्मत' से बना हैं। अनपढ़ शब्द 'अन' और 'पढ़' से बना हैं। यहाँ 'बद' और 'अन' शब्द के पहले जुड़े हैं। **शब्द से पहले जुड़कर नए शब्द बनाने वाले शब्दांश उपसर्ग कहलाते हैं।** अब आप भी 'बद' और 'अन' उपसर्गों से बनने वाले शब्दों की सूची बनाइए।

   अब इन शब्दों में उपसर्ग और मूल शब्द अलग–अलग करके लिखिए।
2. 'हमें पता है, हम भी धरती के बेटे हैं।' रेखांकित पद वाक्य में किसी पद के बाद लगकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल ला देते हैं, इन्हें निपात कहते हैं। ही, भी, भर, तक, मात्र आदि निपात हैं।

   आप भी निपात युक्त वाक्यों को छाँटकर लिखिए तथा निपात हटाकर वाक्य को पढ़कर देखिए की उसके अर्थ में क्या परिवर्तन हुआ है।

पाठ से आगे

1. ''हम घर–घर सब्जी बेचेंगे।' जेबकतरा बच्चे ने स्वरोजगार के रूप में सब्जी बेचना चुना। आप ऐसे कौन–कौनसे कार्यों के बारे में जानते हैं? सूची बनाएँ।
2. इन कार्यों के लिए किन–किन सामग्रियों की जरूरत होती है?
3. इन सामग्रियों के लिए कितने धन की जरूरत होती है? अनुमान लगाएँ।
4. स्वरोजगार के लिए धन कहाँ–कहाँ से उपलब्ध हो सकता है? बड़ों से पूछकर लिखिए।

यह भी करें

पाठ में सब्जी बेचने वाला, पॉलिश करने वाला बनने का उल्लेख हुआ है। ये अपने ग्राहकों को आवाज़ लगाकर बुलाते हैं। आप भी निम्नांकित धंधे वालों की आवाज़ लगाते हुए अभिनय कीजिए –

सब्जी बेचने वाला, चाय बेचने वाला, पॉलिश करने वाला, खिलौने बेचने वाला

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

अपनी गलतियों को खुले मन से स्वीकार कर उनका परिमार्जन करना चाहिए।

केवल पढ़ने के लिए

सीखना इनसे भी

आप पाठ्यपुस्तकें पढ़ते हैं। इनके अलावा भी कई अन्य माध्यम हैं जो हमें नई जानकारियाँ देते हैं। हमारा मनोरंजन करते हैं। बाल पत्रिकाएँ इनमें सबसे प्रमुख हैं। बालहंस, देवपुत्र, नंदन, चंपक, सुमन सौरभ, बालवाटिका, टाबर–टोली, चंदामामा, लोटपोट, पराग, बच्चों का देश आदि ऐसी बाल पत्रिकाएँ हैं। किताबें, पत्रिकाएँ पुस्तकालय में उपलब्ध रहती हैं। ये किताबों की दुकानों पर भी मिलती हैं। सदस्यता लेने पर डाक से घर पर भी आ जाती हैं। इन पत्रिकाओं में रोचक कहानियाँ, पहेलियाँ, चुटकुले आदि प्रकाशित होते हैं। इन में अधूरी कहानी पूरी करो, वर्ग पहेली, रंग भरो, चित्र पहचानो, सामान्य ज्ञान प्रश्नावली आदि प्रतियोगिताएँ दी जाती हैं। आप भी इनमें हिस्सा लेकर पुरस्कार जीत सकते हैं। अपनी स्वरचित रचनाएँ भेज सकते हैं। बाल पत्रिकाएँ अच्छा उपहार हैं। दोस्तों के जन्मदिवस पर इनको उपहार के रूप में भी दिया जा सकता है। दैनिक समाचार पत्र भी साप्ताहिक रूप से बच्चों के लिए अतिरिक्त परिशिष्ट प्रकाशित करते हैं।

इंटरनेट पर भी आपके लिए रोचक सामग्री मौजूद है। कविताकोश, गद्यकोश, लेखक मंच, भारत दर्शन, हिंदी समय, बाल साहित्य, फुलझड़ी आदि वेबसाइट्स पर बहुत सारी बाल कहानियाँ–कविताएँ पढ़ने के लिए उपलब्ध हैं। ऐसे माध्यमों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है।

पाठ 12

वन–श्री

जितने भी हैं इसमें कोटर
सब पंछी गिलहरियों के घर
संध्या को जब दिन जाता ढल,
सूरज चलता है अस्ताचल
कर में समेट किरणें उज्ज्वल
हो जाता है सुनसान लोक,

चल पड़ते घर को चील कोक
अंधियाली संध्या को विलोक
भर जाता है कोटर–कोटर,
बस जाते हैं पत्तों के घर
घर–घर में आती नींद उतर
निद्रा में ही होता प्रभात,
कट जाती है इस तरह रात
फिर वही बात रे वही बात
इस वसुधा का यह वन्य प्रांत
है दूर अलग एकांत शांत
हैं खड़े जहाँ पर साल बाँस,
चौपाये चरते नरम घास
निर्झर, सरिता के आस–पास
रजनी भर रो–रोकर चकोर,
कर देता है रे रोज भोर
नाचा करते हैं जहाँ मोर
है जहाँ वल्लरी का बंधन
बंधन क्या, वह तो आलिंगन
आलिंगन भी चिर आलिंगन
बुझती पथिकों की जहाँ प्यास,
निद्रा लग जाती अनायास
है वहीं सदा इसका निवास।

–गोपाल सिंह 'नेपाली'

www.rajteachers.com

शब्दार्थ

कोटर	– वृक्ष के तने का खोखला भाग	पंछी	– पक्षी
कोक	– चकवा– एक पक्षी विशेष	वसुधा	– धरती
वन्य प्रान्त	– जंगल का क्षेत्र	निर्झर	– झरना
सरिता	– नदी	भोर	– सुबह, प्रभात
वल्लरी	– बेल	पथिकों	– राहगीरों
अनायास	– बिना प्रयास के, सहज	लोक	– संसार

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

उज्ज्वल, अंधियाली, संध्या, वल्लरी

सोचें और बताएँ

1. गिलहरियों के घर किस पर बने हैं ?
2. संसार कब सुनसान हो जाता है?
3. जंगल में कौन–सा पक्षी नाचता है?

लिखें

इन वाक्यों को अपनी कॉपी में लिखकर सही वाक्य पर सही (✓) व गलत वाक्य पर गलत (✗) का निशान कोष्ठक में लगाएँ

1. पक्षी पत्तों से भी घर बनाते हैं। ( )
2. घर में नींद नहीं आती है। ( )
3. बेल पेड़ों से लिपट जाती है। ( )
4. राहगीर झरनों का पानी नहीं पीते हैं। ( )

नीचे लिखे आशय की पंक्तियाँ कविता से छाँटकर लिखिए

1. चील और चकवे घर की ओर लौट आते हैं।
1. जहाँ साल के पेड़ उगे हुए हैं।
2. यह क्रम रोजाना होता है।
3. बिना प्रयास के नींद आ जाती है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रात–भर कौन–सा पक्षी रोता है?
2. वसुधा का वन्य प्रान्त कैसा है?

www.rajteachers.com

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. पशु–पक्षी घर कब लौट आते हैं?
2. चौपाये (पशु) कैसी घास चरते है और कहाँ ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. कविता का मूल भाव अपने शब्दों में लिखिए।

भाषा की बात

1. प्यारा गोपाल बंशी बजाता है। इस वाक्य में 'गोपाल' की विशेषता 'प्यारा' शब्द बता रहा है। यहाँ 'प्यारा' शब्द विशेषण है व 'गोपाल' शब्द विशेष्य। **जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहते हैं और जिस शब्द की विशेषता बताई जाए, उसे विशेष्य कहते हैं।** विशेषण के चार भेद होते हैं–

(क) गुणवाचक विशेषण – बूढ़ा, हरा, खट्टा, मूर्ख, बीमार, पीला आदि।

(ख) संख्यावाचक विशेषण – (i) निश्चित संख्यावाचक–एक दर्जन, पाँच बच्चे आदि।
(ii) अनिश्चित संख्यावाचक–सैकड़ों रोटियाँ, कुछ लोग, खूब बातें।

(ग) परिमाणवाचक विशेषण– (i) निश्चित परिमाणवाचक– दो मीटर कपड़ा, पाँच लीटर दूध।
(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक–थोड़ा–सा पानी, ढेर सारा घी।

(घ) सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण– वह लड़का।

पाठ में से विशेषण व विशेष्य शब्दों को छाँटकर सूची बनाएँ।

2. श्रीकृष्ण और सुदामा मित्र थे। रेखांकित शब्द श्रीकृष्ण सुदामा शब्दों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त हुआ हैं। **ऐसे शब्द जो दो शब्दों, उपवाक्यों और वाक्यों को जोड़ने या अलग करने वाले हो समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं;** जैसे– इसलिए, क्योंकि, परंतु, या आदि। अब आप उचित समुच्चयबोधक अव्यय का चयनकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए–

(i) किसानों .... मजदूरों की टूटी–फूटी झोंपड़ियों में ही प्यारा गोपाल बंशी बजाता मिलेगा।
(क) क्योंकि (ख) और (ग) इसलिए (घ) लेकिन ( )

(ii) मैंने धन एकत्र करना शुरू किया .... गरीबों की सहायता कर सकूँ।
(क) और (ख) क्योंकि (ग) ताकि (घ) मगर ( )

(iii) वे धनी होते हुए भी निर्धन हैं .... वे गरीबों का शोषण करते हैं।
(क) क्योंकि (ख) तेज (ग) के बाहर (घ) धीरे–धीरे ( )

3. पाठ में कोटर–कोटर, घर–घर पद आए हैं। इस तरह संज्ञा पद दो बार आते हैं तो पूर्व पद का अर्थ 'प्रत्येक' होता है। जब संज्ञा पद दो बार आए तथा पूर्व पद का अर्थ प्रत्येक होता है तो वहाँ अव्ययीभाव समास होता है। आप भी ऐसे पाँच पद लिखिए।

- **जिस समास में द्वितीय पद प्रधान होता है तथा प्रथम पद अव्यय होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।**

www.rajteachers.com

4. नीचे लिखे शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखिए; जैसे– संध्या – प्रभात
नरम, अस्त, अंधियाली, चल

5. जैसे पंछी के समानार्थी शब्द हैं पक्षी, खग और द्विज। इसी तरह घर, सरिता, वसुधा, सूरज, रजनी के तीन–तीन समानार्थी शब्द लिखिए।

पाठ से आगे

1. जंगल हमारे लिए बहुत उपयोगी हैं, कैसे? अपने विचार लिखिए।
2. पेड़–पौधे रात में अपना भोजन क्यों नहीं बना पाते हैं? कारण लिखिए।
3. जंगल को बचाने के लिए हमें क्या–क्या करना चाहिए? लिखिए।

यह भी करें

1. अपनी कल्पना से जंगल का चित्र बनाएँ।
2. 'वृक्षारोपण' विषय पर बालसभा में अपने विचार प्रकट कीजिए।

यह भी जानें

1. पाठ में जंगल में पाए जाने वाले साल, बाँस वनस्पतियों के नाम आए हैं। वन में और कौन–कौनसी वनस्पतियाँ उगती हैं? सूची बनाएँ।

- इनमें से हमारे लिए स्वास्थ्यवर्धक औषधीय पौधे कौन–कौनसे हैं ?
- अपने से बड़ों को पूछकर सूची बनाएँ; ये कौन–कौनसी बीमारियों में कैसे उपयोग में ली जाती हैं? यहाँ नीम का उपयोग उदाहरण के रूप में दिया जा रहा है।

बीमारी का नाम –	उपयोग का तरीका
चर्मरोग –	पत्तियों को उबालकर उस पानी से स्नान करना।
फोड़े–फुंसी –	इसकी छाल को पत्थर पर घिसकर लेप करना।
शीत–पित्ती –	निम्बोली की मींजी को पीसकर गाय के घी के साथ सेवन करने से शीत पित्ती (दापड़) शांत हो जाते हैं।

- आप द्वारा बनायी सूची में से कौन–कौनसे पौधे अपने आँगन/गमले में लगाना चाहेंगे ?

तब और अब

पुराना रूप	पत्ता	शान्त	बन्धन
मानक रूप	पत्ता	शांत	बंधन

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

ईषावास्यमिदम् सवर्म्। सम्पूर्ण जगत में ईश्वर का वास है।

www.rajteachers.com

पाठ 13

भारत की मनस्विनी महिलाएँ

(बाबा का पत्र पोती के नाम)

लाल कुटीर,
आरा
दिनांक : 10.07.92

मेरी प्यारी किरण!
सस्नेह शुभाशीर्वाद।

तुम्हारा 05.07.92 को पत्र प्राप्त हुआ। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि पिछली परीक्षा में तुम्हें अच्छे अंक प्राप्त हुए हैं। और अब तुम सातवीं कक्षा में पहुँच गई हो। तुमने यह भी लिखा है कि तुम्हारी बहन रोमा और अनुज शंकर क्रमशः तीसरी और दूसरी कक्षा में आ गए। मुझे यह जानकर और भी अधिक खुशी हुई कि मेरी पोती रोमा को अपनी कक्षा में प्रथम स्थान मिला है। इस सफलता के लिए तुम सभी बच्चे–बच्चियों को बाबा की ओर से स्नेह सनी बधाई!

अब तुम्हारे पत्र का उत्तर! तुम भारत की मनस्विनी महिलाओं के विषय में कुछ जानना चाहती हो। तुम्हारी इस जिज्ञासा में अपनी पूर्वजा भारतीय महिलाओं के प्रति तुम्हारी श्रद्धा झलकती है। यह एक बड़ा ही शुभ लक्षण है। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है, तुम मनस्विनी महिलाओं के बारे में जानोगी, तो उनके सद्गुण अनायास तुम्हारे मन में आ जाएँगे। तुम्हारे जीवन में उनके क्रमशः समावेश से तुम्हारे उज्ज्वल भविष्य का पथ स्वतः प्रशस्त हो उठेगा।

भारतीय नारियाँ अनादि काल से ही अपनी विद्या, बुद्धि, कला–कुशलता, कर्मठता तथा सहिष्णुता के आधार पर मानव जीवन और जगत को अधिकाधिक सुखमय बनाने का सफल प्रयास करती हैं। साथ ही अपने त्याग, तपस्या, शौर्य, उदारता, भक्ति, वात्सल्य, जन्मभूमि प्रेम तथा अध्यात्म चिंतन से सुधी समाज के सम्मुख उच्चादर्श भी प्रस्तुत करती आ रही हैं। इनके कीर्ति कलाप से आज भी समस्त भारतीय वाङ्मय सुरभित है। हमारे पूर्वजों ने नारी को सदा पूजनीया माना है। **'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः''** कहकर उन्होंने नारी–जाति का श्रद्धापूर्वक सम्मान किया है। आज भी किसी अनजान वयस्क महिला को माताजी कहकर संबोधित करने की परंपरा विद्यमान है। यह भारतीय चिंतन और आचरण की एक सात्विक अभिव्यक्ति है।

www.rajteachers.com

नारी जाति के प्रति पुरुष वर्ग का यह श्रद्धा–सम्मान भरा आचरण अकारण नहीं, प्रत्युत सकारण है। नारी ने ही पुरुष को गृहस्थ और किसान बनाया। उसका यह प्रयत्न मानव सभ्यता तथा संस्कृति के भवन की नींव की पहली शिला प्रमाणित हुआ। स्वयं गार्हस्थ्य जीवन के केंद्र में स्थिर–स्थित रहकर भारतीय नारी ने बड़े–बूढ़ों की सेवा की, नन्हें–मुन्नों को पाला–पोसा और पति के कंधे से कंधा मिला कर पारिवारिक दायित्व का स्निग्ध निर्वहन किया। एक विस्तृत उद्यान में खिले सैकड़ों रूप रंग गंधों के हज़ार–हज़ार सुमनों की भाँति भारत की सन्नारियों ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति में विपुल वैविध्य का विधान किया है उनके प्रत्येक पक्ष को समृद्ध किया है। यह भारतीय पुरुष वर्ग का केवल आभार–स्वीकार है कि उसने शक्ति, सम्पत्ति और समृद्धि को अधिष्ठात्री देवियों के रूप में काली, लक्ष्मी और सरस्वती की प्रतिष्ठा कर रखी है और उनका पूजन–आराधना कर वह आज भी धन्य हो रहा है।

किरण, तुमने भारतीय नारियों के बारे में पूछकर मुझे फेर में डाल दिया है। स्मृति के चित्रपट पर सैकड़ों–हज़ारों जाज्वल्यमान नक्षत्रों की भाँति चमकते–दमकते नारी बिंब एक के बाद एक ऐसे उभरते–उमड़ते आ रहे हैं कि कलम उलझन में पड़ गई है। किसका वर्णन हो और किसका नहीं? सभी तो एक–से–एक बढ़कर हैं। ''को बड़–छोट कहत अपराधू'' की स्थिति है। तो फिर जैसे–जैसे चित्र उभरता है, उसका अंकन करता जाता हूँ। सब तो एक जैसी गरीयसी एवं महीयसी हैं। और पत्र में बहुत अधिक लिखा भी तो नहीं जा सकता।

तुमने गौरी का नाम सुना है। वह पार्वती, जिसने हिमाचल के घर जन्म लिया और पति रूप में शिव की प्राप्ति के लिए घोर तप किया था। अब इस आख्यान को समझने की कोशिश करो। पार्वती नारी जाति का प्रतिनिधित्व करती हैं। 'शिव' समग्र जीव–जगत् के लिए कल्याण तत्व हैं, जहाँ मानव–दानव, सुर–असुर, दैत्य–गंधर्व सब एक समान आश्रय पाते हैं। वहाँ साँप, बिच्छु, बाघ–सिंह, मूषक और मयूर सब एक साथ सानंद विचरण करते हैं। 'शिव' वह तत्त्व भी है जो विषय वासना को भस्म करने की क्षमता रखता है। ऐसी कल्याणकारी शिव शक्ति को संसार के लिए सुलभ करने के निमित्त देवी पार्वती ने सफल साधना की। तुमने सुना कि सती मरण के बाद शिवजी संसार से विमुख हो गए थे। उन दिनों जीव जगत उनसे लाभान्वित नहीं हो रहा था। माँ पार्वती ने उन्हें प्राप्त कर संसार के कल्याण की दिशा में उन्हें उन्मुख कर दिया। आज समस्त समाज माँ के रूप में उनकी पूजा करता है।

सावित्री की कथा तो तुम्हें याद ही होगी। राजमहल के लाड़ प्यार में पली उस सुकुमारी ने ससुराल की मर्यादा की रक्षा के लिए किस प्रकार सहर्ष वन्य जीवन अपना लिया था। उसने अंधे सास–ससुर की सेवा के साथ–साथ अनुपम पातिव्रत्य का आदर्श संसार के सम्मुख रखा। इस त्याग, तपस्या और निष्ठा से उसमें ऐसी अलौकिक शक्ति का स्रोत उमड़ा कि वह यमराज के फंदे से मृत पति को भी जीवित लौटा लाने में समर्थ हुई।

एक थी माता अनुसूया, महर्षि अत्रि की पत्नी। उसके पातिव्रत्य और तज्जनित शक्ति के क्या कहने! परीक्षा लेने आए त्रिदेव–ब्रह्मा, विष्णु और महेश। और बन गए उस महा महिमामयी सती की गोद में किलकते–मचलते नन्हें शिशु। यह था सती का प्रताप, भारतीय नारी की लोकोत्तर शक्ति।

अपने पुत्रों को सुशिक्षा देने वाली माताओं में एक नाम आता है माता मदालसा का। देवी मदालसा ब्रह्म ज्ञान की साकार प्रतिमा थीं। वे अपने कई बच्चों को पालने में लिटा कर लोरियाँ गाते–गाते ब्रह्मवादी बना चुकी थीं। उनकी लोरी की एक कड़ी थी :–

शुद्धोऽसि, बुद्धोऽसि, निरंजनोऽसि
संसार माया पारिवर्जितोऽसि

अंत में पति के विशेष अनुरोध पर केवल एक पुत्र लोक सेवा के लिए प्रशिक्षित किया।

विद्वत्ता के क्षेत्र में गार्गी और मैत्रेयी की महिमा आज भी गाई जाती है। शास्त्रार्थ में बड़े–बड़े धुरंधर ज्ञानी ऋषि–मुनि उनका लोहा मानते थे और किसी भी विवादास्पद विषय में उनकी वाणी प्रमाण मानी जाती थी।

राजा दशरथ की रानी कैकेयी की सूझ–बूझ और वीरता तो जगजाहिर ही है। देवासुर संग्राम में राजा दशरथ के रथ की कील निकल गई थी। यदि रथ का पहिया निकल जाता, तो पता नहीं क्या हो जाता। राजा दशरथ विरथ होकर पराजित भी हो सकते थे। जानते हो, कैकयी ने क्या किया। वह राजा के साथ उसी रथ में थी, उसने कील के स्थान पर उँगली लगा दी। रथ चलता रहा, युद्ध होता रहा। विजय राजा की हुई। तब उनका ध्यान गया कैकेयी की ओर, उसकी उँगली की ओर। वे सब कुछ समझ गए। उन्होंने रानी का आजीवन आभार माना।

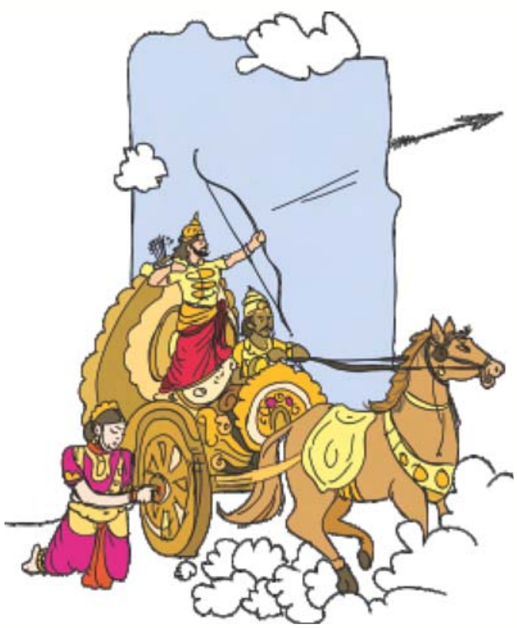

एक थी सीता। हालत यह थी कि "पलँग पीठ तजि गोद हिंडोरा। सिय न दीन्ह पग अवनि कठोरा।" ऐसी सुकुमारी, ऐसी कोमल परिस्थिति में पली–बढ़ी। किंतु जब पति को वन जाना पड़ा तो भूल गई अपनी सुख–सुविधा और चल पड़ी तपस्विनी वेश में पति की सेवा के लिए, सघन वन प्रांगण में, अपरिचितों के प्रदेश में, चौदह वर्षों तक जंगल में साथ दिया। रावण द्वारा अपहृत हुई। हज़ार–हज़ार संकट सहे, लाख–लाख साँसतें सहीं। फिर, जब अयोध्या आकर राम राजा बने तो सीता को वनवास दे दिया। और सीता को कोई शिकायत नहीं, कोई प्रतिवाद नहीं! जो मर्जी पति परमेश्वर की, वही हो। उसने आत्मबल का सहारा लिया। जंगल में जाकर कुटी छवाई। वहाँ पुत्रों के रूप में लव–कुश नामक दो अनमोल निधियाँ पायी। और वे पुत्र भी कैसे? अभी दूध के दाँत भी नहीं टूटे थे कि सीता के इन दो लालों ने, अश्वमेध के घोड़े के लिए लड़ते समय, राम की सेना के

महारथियों के दाँत खट्टे कर दिए। ऐसी थी सीता की शक्ति, ऐसी थी उस मनस्विनी की शिक्षा।

आधुनिक युग की वीर भारतीय महिलाओं में तुम रानी भवानी, अहल्याबाई, लक्ष्मीबाई इत्यादि के बारे में इतिहास में पढ़ोगी। इन नारियों ने भी अपने साहस, शौर्य तथा त्याग से अमरत्व प्राप्त किया है।

रामकृष्ण परमहंस की पत्नी माँ शारदामणि को भी भूला नहीं जा सकता। रामकृष्ण का विवाह बहुत कम उम्र में हो गया। उनकी पत्नी शारदामणि तो बहुत ही छोटी थी। शारदामणि ससुराल आकर घर की सेवा में लग गई। उनके पति को ग्राहस्थ्य के प्रति कोई आकर्षण नहीं था। वे एक काली मंदिर के पुजारी थे और वहीं रहकर माँ काली की पूजा करते थे। वे अत्यन्त तीव्र गति से अध्यात्म की ओर अग्रसर होने लगे। माँ शारदामणि का सफल ग्राहस्थ्य का मनोरथ भंग होने लगा। किंतु, यहीं उनका भारतीय चरित्र उजागर हुआ। एक भारतीय नारी अपने पति के सत्कार्य में सदा सहयोगिनी रही है। माँ शारदामणि पति की साधना में सहायिका बनकर उनकी सेवा में संलग्न हो गई। धीरे–धीरे उनमें भी आध्यात्मिक शक्ति का समावेश और विकास हुआ। रामकृष्ण के निर्वाण के बाद शारदामणि ने ही उस आश्रम का संचालन किया, जिसका निर्माण परमहंसदेव ने किया था। स्वामीजी ने विवेकानंद का निर्माण किया। आज विश्व के कोने–कोने में रामकृष्ण मिशन के रूप में उनकी कीर्ति व्याप्त है। उनकी इन महान उपलब्धियों में अवश्य ही माँ शारदामणि के प्रच्छन्न सहयोग की सुवास विद्यमान है।

यह रहा संक्षेप में तुम्हारी चिट्ठी का जवाब। तुमने अपनी बूढ़ी दादी (परदादी) के गिरते स्वास्थ्य की चर्चा की है। अब तो उनकी उम्र नब्बे वर्ष से अधिक हो गई है। उन पर विशेष ध्यान रखना। हम लोगों की उन्नति और दीर्घायु के लिए वे नित्य भगवान से प्रार्थना किया करती है। रोमा, शंकर और शंभू को तो तुम स्वयं प्यार करती हो। अपने पिताजी तथा माताजी से कहकर उनकी पढ़ाई–लिखाई तथा स्वास्थ्य आरोग्य का सुंदर प्रबंध कराती रहना।

मेरी पूजनीया माताजी से मेरा विनम्र प्रणाम निवेदित करना। शेष सभी परिजनों से मेरा शुभाशीर्वाद कहो! रोमा, शंकर, शंभु को प्यार और दुलार।

तुम्हारा बाबा,
सत्यनारायण
कुमारी किरण कौशिकी,
पथरीघाट, पटना–6

www.rajteachers.com

शब्दार्थ

अधिष्ठात्री	–	माता, देवी	सुधी	–	समझदार, बुद्धिमान
वात्सल्य	–	स्नेह (माता का संतान से प्रेम)	साँसत	–	संकट
मनस्विनी	–	उच्च विचार वाली, विदुषी	शुभ	–	कल्याणकारी
जाज्वल्यमान	–	चमकता हुआ, प्रकाशमान	सहिष्णुता	–	सहनशीलता

अभ्यास कार्य

पाठ से

उच्चारण के लिए

ब्रह्मवादी, शुभाशीर्वाद, वैविध्य, आध्यात्मिक

सोचें और बताएँ

1. किरण ने अपने पत्र में क्या पूछा था ?
2. 'मनुष्य' जैसा सोचता है, वैसा ही बनता है, कैसे ?
3. विवेकानंद जी के गुरु का नाम बताइए।

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. नारी जाति के प्रति पुरुष वर्ग ने श्रद्धा–सम्मान प्रकट किया है, क्योंकि
   (क) नारी पुरुष से अधिक बुद्धिमती होती है।
   (ख) वह रसोई का काम अधिक करती है।
   (ग) पुरुष नारी से डरता है।
   (घ) उसने भारतीय सभ्यता के विकास में विशेष योगदान दिया है।

खाली जगह भरिए

1. रामकृष्ण परमहंस की पत्नी.................................को भी भूला नहीं जा सकता।
2. पार्वती जिसने .... के घर जन्म लिया।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. यह पत्र किसने किसको लिखा है?
2. किरण दादाजी से क्या जानना चाहती थी?
3. कील के स्थान पर उँगली किसने लगाई थी?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बाबा ने अपने पोते–पोतियों को बधाई क्यों भेजी है?
2. विद्वत्ता के क्षेत्र में किस की महिमा आज भी गाई जाती है?

www.rajteachers.com

3. शिव तत्त्व क्या है? पाठ के आधार पर लिखिए।

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. पाठ में आई मनस्विनी महिलाओं को सूचीबद्ध कर उनका संक्षेप में परिचय दीजिए।
2. "मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बनता है"। इस कथन के प्रमाण में जानकारी प्राप्त कर उदाहरण लिखिए।

भाषा की बात

1. ''तुमने गौरी का नाम सुना है। उसने हिमाचल के घर जन्म लिया था।'' दूसरे वाक्य में गौरी के स्थान पर "उसने" शब्द का प्रयोग किया गया है। **संज्ञा के स्थान पर काम आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं**। सर्वनाम के छह भेद होते हैं–
   (क) पुरुषवाचक – मैं, हम, तुम, तू, वह, वे, यह, ये
   (ख) निश्चयवाचक – वे, वह
   (ग) अनिश्चियवाचक– कुछ, कोई
   (घ) संबंधवाचक – जो, जिसकी, जिसने, उसने
   (ङ) प्रश्नवाचक– कौन, क्या, कब, कहाँ, कैसे
   (च) निजवाचक– अपने, आप, स्वयं, खुद
2. प्रत्येक सर्वनाम का प्रयोग करते हुए दो–दो वाक्य अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से लिखिए।
3. जैसा कि आप जानते हैं कि किसी शब्द को बहुवचन में प्रयोग करने पर उसकी वर्तनी में बदलाव आता है; जैसे– एक खिड़की के लिए हम 'खिड़की' का प्रयोग करते हैं और एक से अधिक के लिए खिड़कियाँ।

   खिड़की शब्द की वर्तनी में बदलाव यह हुआ है कि अंत के वर्ण "की" की मात्रा दीर्घ (ई) से ह्रस्व (इ) हो गई है। ऐसे शब्दों को जिनके अंत में दीर्घ ईकार होता है, बहुवचन बनाने पर वह इकार हो जाता है, यदि शब्द के अंत में ह्रस्व इकार होता है तो उसमें परिवर्तन नहीं होता; जैसे– नीति–नीतियाँ।

   आप नीचे दिए शब्दों का वचन बदलकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए–

उँगली	तैयारी
ताली	देवियों
ज़िम्मेदारियाँ	स्वाभिमानियों

पाठ से आगे

1. देवासुर संग्राम की अंतर्कथा जानिए।
2. यदि सीता के स्थान पर आप होते तो राम के वनगमन पर क्या करते? लिखिए।
3. इस पाठ में हमने प्राचीन विदुषी महिलाओं के बारे में पढ़ा है। ऐसी ही आधुनिक विदुषी महिलाओं की जानकारी प्राप्त कर लिखिए।

www.rajteachers.com

यह भी करें

1. आपकी जानकारी में ऐसी महिलाएँ अवश्य होंगी, जिन्होंने समाज के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। उनका नाम व उनके द्वारा किए गए कार्य की तालिका इस प्रकार बनाइए –

महिलाओं के नाम	किए गए कार्य

2. महिला और पुरुष का समाज के विकास में बराबर महत्त्व है। इस विषय पर बाल सभा में अपने विचार प्रकट कीजिए।

तब और अब

पुराना रूप	ब्रह्म	चञ्चल	खट्टा
मानक रूप	ब्रह्‌म	चंचल	खट्‌टा

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

A woman' s life is a history of the affections.

एक नारी की जिंदगी वत्सलता का इतिहास है।

पाठ 14

रक्त और हमारा शरीर

दिव्या अनिल की छोटी बहन है। यों तो वह शुरू से ही कमजोर है लेकिन इधर कुछ दिनों से उसे हर समय थकान महसूस होती रहती है। मन किसी काम में नहीं लगता, भूख भी पहले से कम हो गई है। अस्पताल में उसे डॉक्टर ने देखा तो कहा, ''लगता है दिव्या के शरीर में रक्त की कमी हो गई है। जाँच कराकर देखते हैं। '' यह कहकर उन्होंने दिव्या को रक्त की जाँच के लिए पास के एक कमरे में भेज दिया। वहाँ अनिल को अपनी ही जान–पहचान की डॉक्टर दीदी दिखाई दीं।

डॉक्टर दीदी ने कहा, ''कहो अनिल, कैसे आना हुआ?''

अनिल ने बताया कि डॉक्टर ने दिव्या को खून की जाँच के लिए आपके पास भेजा है।

इतना सुनते ही डॉक्टर दीदी ने दिव्या की उँगली से रक्त की कुछ बूँदें एक छोटी–सी शीशी में डाल दीं और स्लाइड पर लगा दी। फिर अनिल से बोली, ''अनिल तुम कल अस्पताल से रिपोर्ट ले जाना।''

अगले दिन अस्पताल पहुँचकर अनिल ने डॉक्टर दीदी के कमरे के दरवाज़े पर दस्तक दी। भीतर से आवाज़ आई, ''आ जाओ।'' अनिल ने कमरे में प्रवेश किया तो पाया, डॉक्टर दीदी सूक्ष्मदर्शी द्वारा एक स्लाइड की जाँच कर रही थी। दीदी के इशारे से वह पास रखी एक कुर्सी पर बैठ गया। स्लाइड की जाँच पूरी होने पर डॉक्टर दीदी ने साबुन से हाथ धोए और तौलिए से पोंछती हुई बोली, ''अनिल, दिव्या को एनीमिया है। चिंता की बात नहीं, कुछ दिन दवा लेगी तो ठीक हो जाएगी।''

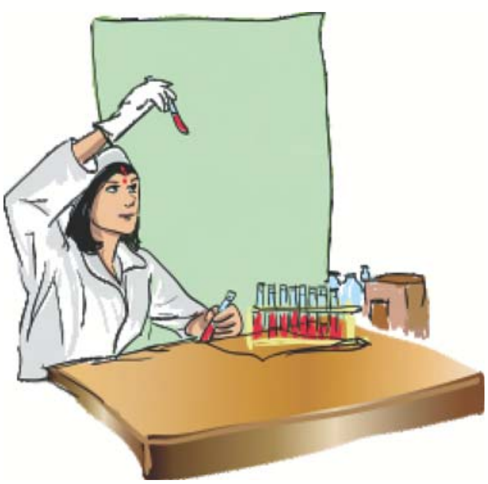

अनिल के मन में जिज्ञासा हुई वह बोला,'' दीदी एक सवाल पूछूँ?''

''हाँ, हाँ, क्यों नहीं,''डॉक्टर दीदी ने कहा

''एनीमिया से आपका क्या मतलब है दीदी ?'' उसने पूछा।

''यह जानने के लिए तुम्हें रक्त के बारे में जानना होगा, डॉक्टर दीदी ने कहा, फिर बोलीं, ''अनिल देखने में रक्त लाल द्रव के समान दिखता है, किंतु इसे सूक्ष्मदर्शी द्वारा देखें तो यह भानुमति के पिटारे से कम नहीं। मोटे तौर पर इसके दो भाग होते हैं। एक भाग वह जो तरल है, जिसे

www.rajteachers.com

हम प्लाज्मा कहते हैं। दूसरा वह जिसमें छोटे–बड़े कई तरह के कण होते हैं... कुछ लाल कुछ सफेद

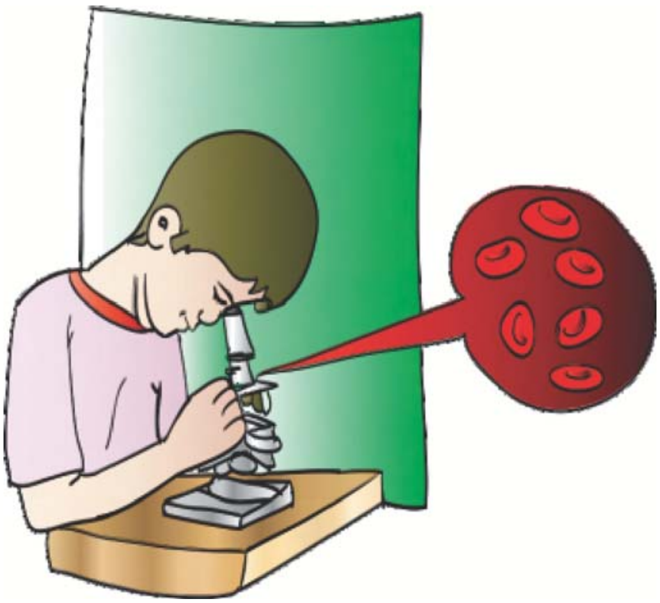

और कुछ ऐसे जिनका कोई रंग नहीं। जिन्हें बिंबाणु (प्लेटलैट कण) कहते हैं। ये कण प्लाज्मा में तैरते रहते हैं।'' इतना कहकर डॉक्टर दीदी ने सूक्ष्मदर्शी के नीचे एक स्लाइड लगाई, उसे फोकस किया और बोली, ''देखो अनिल, सूक्ष्मदर्शी द्वारा जो कण तुम्हें दिखाई दे रहे हैं, ये लाल रक्त कण हैं।''

स्लाइड देख, मानो आश्चर्य से उछल पड़ा था अनिल। रक्त की एक बूँद में इतने सारे कण! इसकी तो वह कल्पना भी नहीं कर सकता था। वह बोला, ''इन्हें देखकर तो ऐसा लग रहा है, मानो बहुत–सी छोटी–छोटी बालूशाही रख दी गई हों।''

''हाँ,'' दीदी बोली, ''लाल कण बनावट में बालूशाही की तरह ही होते हैं। गोल और दोनों तरफ अवतल, यानी बीच में दबे हुए। रक्त की एक बूँद में इनकी संख्या लाखों में होती है। यदि एक मिलीलीटर रक्त लें तो उसमें हमें चालीस से पचपन लाख कण मिलेंगे। इनके कारण ही हमें रक्त लाल रंग का नजर आता है। ये कण शरीर के लिए दिन–रात काम करते हैं। साँस लेने पर साफ हवा से जो ऑक्सीजन तुम प्राप्त करते हो, उसे शरीर के हर हिस्से में पहुँचाने का काम इन कणों का ही है। इनका जीवनकाल लगभग चार महीने होता है। चार महीने के होते–होते ये नष्ट हो जाते हैं। लेकिन एक साथ नहीं, धीरे–धीरे कुछ आज, कुछ कल, कुछ उससे अगले दिन..।''

''तब तो कुछ ही महीनों में ये खत्म हो जाते होंगे।'' अनिल ने कहा। यह सुनकर डॉक्टर दीदी मुस्कुरा उठीं, बोली ''नहीं ऐसा नहीं होता। शरीर में हर समय नए कण बनते रहते हैं जो नष्ट कणों का स्थान ले लेते हैं। हडि्डयों के बीच के भाग मज्जा में ऐसे बहुत से कारखाने होते हैं जो रक्त कण के निर्माण कार्य में लगे रहते हैं। इनके लिए इन कारखानों को प्रोटीन, लौहतत्त्व और विटामिन रूपी कच्चे माल की जरूरत होती है। ये पौष्टिक आहार हरी सब्जी, फल, दूध आदि में उपयुक्त मात्रा में होते हैं।

यदि कोई व्यक्ति उचित आहार ग्रहण नहीं करता है तो इन कारखानों को आवश्यकतानुसार कच्चा माल नहीं मिल पाता। नतीजा यह होता है कि रक्त कण बन नहीं पाते, रक्त में इनकी कमी हो जाती है। लाल कणों की इसी कमी को एनीमिया कहते हैं।

''तो क्या संतुलित आहार लेने मात्र से हम एनीमिया से बचे रह सकते हैं?'' अनिल ने सवाल किया।

दीदी बोलीं, ''हाँ यह कहना काफी हद तक सही होगा। यों तो एनीमिया बहुत से कारणों से हो सकता है, किंतु हमारे देश में इसका सबसे बड़ा कारण पौष्टिक आहार की कमी है। इसके अलावा इस रोग का एक और बड़ा कारण है पेट में कीड़ों का हो जाना। ये कीड़े प्रायः दूषित जल और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। अतः इनसे बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूरी सफाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ ही ग्रहण करें। भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धो लें और साफ पानी ही पिएँ। और हाँ, अनिल एक किस्म के कीड़े वे भी हैं जिनके अंडे जमीन की ऊपरी सतह में पाए जाते हैं। इन अंडों से उत्पन्न हुए लार्वे त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर आँतों में अपना घर बना लेते हैं। इनसे बचने का सहज उपाय है कि शौच के लिए हम शौचालय का ही प्रयोग करें और इधर–उधर नंगे पैर न घूमें।''

''दीदी, यह तो बहुत ही महत्त्वपूर्ण बात बताई आपने'', अनिल बोला। वह पलभर सोच में डूबा रहा। फिर बोला, ''आपने बताया था कि रक्त में सफेद कण और बिंबाणु (प्लेटलैट कण) भी होते हैं। शरीर में उनका क्या काम है?''

दीदी बोली, ''सफेद कण वास्तव में हमारे शरीर के वीर सिपाही हैं। जब रोगाणु शरीर पर धावा बोलने की कोशिश करते हैं तो सफेद कण उनसे डटकर मुकाबला करते हैं। जहाँ तक संभव हो पाता है रोगाणुओं को भीतर घर नहीं करने देते। संक्षेप में यों मान लो कि वे बहुत से रोगों से हमारी रक्षा करते हैं। बिंबाणुओं का काम है चोट लगने पर रक्त जमाव क्रिया में मदद करना। रक्त के तरल भाग में एक विशेष किस्म की प्रोटीन होती है और रक्तवाहिका की कटी–फटी दीवार में मकड़ी के जाले के समान एक जाला बुन देती है। बिंबाणु इस जाले से चिपक जाते हैं और इस तरह दीवार में आई दरार भर जाती है, जिससे रक्त बाहर निकलना बंद हो जाता है।''

अनिल बोला, ''दीदी, लेकिन घाव गहरा हो तो खून बहता ही चला जाता है।''

''हाँ, ऐसे समय में उस व्यक्ति को जल्दी से डॉक्टर के पास ले जाना चाहिए। जरूरत समझने पर ऐसी स्थिति से निपटने के लिए कुछ टाँके भी लगाने पड़ सकते हैं। किंतु डॉक्टर के पास पहुँचने तक के समय में चोट के स्थान पर कसकर एक साफ कपड़ा बाँध देना चाहिए। दबाव पड़ने से रक्त का बहना कम हो जाता है जो उस व्यक्ति के लिए काफी लाभप्रद सिद्ध हो सकता है। किंतु अधिक रक्त बह जाए तो उसे रक्त चढ़ाने की जरूरत भी पड़ सकती है।'' दीदी ने समझाते हुए कहा।

अनिल ने कहा, ''क्या ऐसे समय में किसी भी व्यक्ति का खून काम आ सकता है?''

दीदी बोली, ''अनिल, हर किसी का रक्त एक–सा नहीं होता। कुछ विशेष गुणों के आधार पर रक्त को चार मुख्य वर्गों में बाँट दिया गया है। जरूरतमंद व्यक्ति के रक्त समूह की जाँच करने के बाद उसे उसी रक्त समूह का रक्त चढ़ाया जाता है।''

''लेकिन जरूरत के समय यदि उस रक्त समूह का कोई व्यक्ति मिले ही नहीं तब ?'' अनिल ने पूछा।

''ऐसी आपातस्थिति के लिए ही ब्लड बैंक बनाए गए हैं। प्रायः हर बड़े अस्पताल में इस तरह के बैंक होते हैं, जहाँ इसी प्रकार के रक्त समूहों का रक्त सुरक्षित रखा जाता है। किंतु इन ब्लड बैंको में रक्त का भंडार सुरक्षित रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि समय–समय पर रक्तदान करते रहें।'' दीदी ने कहा।

''क्या मैं भी रक्तदान कर सकता हूँ?'' अनिल ने पूछा, ''नहीं, अभी तुम छोटे हो। अट्ठारह वर्ष से अधिक उम्र के स्वस्थ व्यक्ति ही रक्तदान कर सकते हैं। एक समय में उनसे लगभग 300 मिलीलीटर रक्त ही लिया जाता है। प्रायः यह समझा जाता है कि रक्तदान करने से कमजोरी हो जाएगी, किंतु यह विचार बिलकुल निराधार है। हमारा शरीर इतना रक्त तो कुछ ही दिनों में बना लेता है। वैसे भी शरीर में लगभग पाँच लीटर खून होता है। इसमें से यदि कुछ रक्त किसी जरूरतमंद व्यक्ति के लिए जीवनदान बन जाए तो इससे बड़ी बात क्या होगी।'' दीदी समझाते हुए बोली।

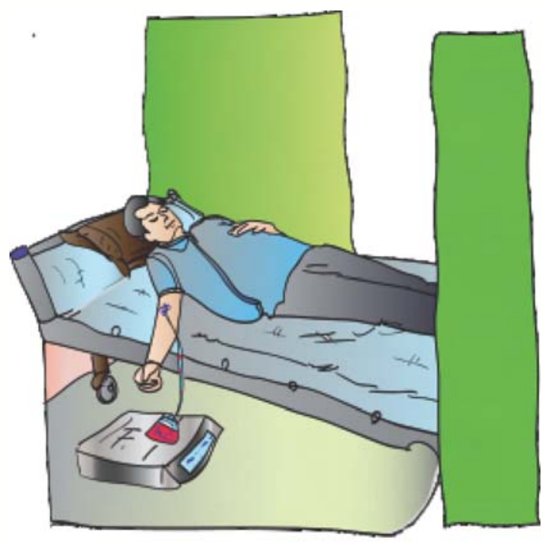

''फिर तो बड़ा होने पर मैं नियमित रूप से रक्तदान किया करूँगा'' अनिल ने कहा। ''शाबाश अनिल!'' डॉक्टर दीदी ने अनिल की पीठ ठोकते हुए कहा।

–यतीश अग्रवाल

www.rajteachers.com

शब्दार्थ

दस्तक	–	दरवाज़ा खट–खटाना
स्लाइड	–	काँच की पट्टिका
एनीमिया	–	एक बीमारी जिसमें खून की कमी हो जाती है
बालूशाही	–	मैदा की बनी एक प्रसिद्ध मिठाई
प्लाज्मा	–	जीवद्रव्य
पौष्टिक	–	शक्तिवर्धक, पुष्ट करने वाला

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. दिव्या को कौनसी बीमारी थी?
2. एक मिलीलीटर खून में कितने कण होते हैं ?
3. रक्तदान करने के लिए कम से कम कितनी उम्र होनी चाहिए?
4. रक्त के सफेद कणों को वीर सिपाही क्यों कहा जाता है?

लिखें

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. रक्त की जाँच रिपोर्ट लेने कौन गया था?
2. डॉक्टर दीदी ने खून के कितने भाग बताए थे?
3. रक्तकण कहाँ बनते रहते हैं?
4. एक स्वस्थ व्यक्ति में कितना खून होता है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. बिंबाणु क्या काम करते हैं?
2. हमें रक्त का रंग लाल क्यों दिखाई देता है?
3. एनीमिया किसे कहते हैं?
4. रक्त के बहाव को रोकने के लिए हमें क्या करना चाहिए ?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. एनीमिया रोग के क्या–क्या कारण हैं? इससे कैसे बचा जा सकता है?
2. पेट में कीड़े कैसे प्रवेश करते हैं? इनसे बचने के लिए हमें क्या–क्या करना चाहिए लिखिए।
3. ब्लड बैंक में रक्तदान करने से क्या लाभ है?

www.rajteachers.com

भाषा की बात

1. ''चार महीने के होते–होते ये नष्ट हो जाते हैं।'' इस वाक्य में 'होते–होते' का अर्थ बताया है कि चार महीने से पूर्व ही नष्ट हो जाते हैं। इस तरह के पाँच–पाँच वाक्य आप भी बनाएँ जिनमें निम्नाकिंत शब्दों का प्रयोग हो।

   बनते–बनते, पहुँचते–पहुँचते, खाते–खाते, पढ़ते–पढ़ते
2. ''अगले दिन अस्पताल पहुँचकर अनिल ने डॉक्टर दीदी के कमरे के दरवाज़े पर दस्तक दी।'' इस वाक्य में ''दस्तक देना'' मुहावरे का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ है– दरवाज़ा खटखटाना। पाठ में आए अन्य मुहावरों व लोकोक्तियों को छाँटकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।
3. ध्यान से पढ़िए–

1. मुहावरों और लोकोक्तियों (कहावत, जनश्रुति) का प्रयोग भाषा में रोचकता और प्रभाव पैदा करने के लिए किया जाता है।
2. मुहावरों का प्रयोग स्वतंत्र नहीं होता जबकि लोकोक्तियों का प्रयोग स्वतंत्र रूप से होता है।
3. मुहावरे वाक्य में प्रयुक्त होकर वाक्य का अंग बन जाते हैं, किंतु लोकोक्ति का प्रयोग वाक्य के अंत में होता है।

पाठ से आगे

1. एक व्यक्ति कितने समय पश्चात् पुनः रक्तदान कर सकता है? पता करें और लिखें।
2. चिकित्सकीय भाषा में खून के वर्ग (ग्रुप) बने हैं। जानकारी करें कि रक्त कितने वर्ग में बाँटा गया है? नाम लिखिए ।
3. आपकी जानकारी में ऐसे लोग अवश्य होंगे, जिन्होंने रक्तदान किया हो, उनकी सूची बनाइए।

कल्पना करें

यदि हमारे शरीर में रक्त ही नहीं हो तो क्या होगा?

यह भी करें

अपने आस–पास के 18 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को रक्तदान के लिए प्रेरित करें।

तब और अब

पुराना रूप	भण्डार	हड्डी	कणोँ	मेँ	सन्तुलित
मानक रूप	भंडार	हड्डी	कणों	में	संतुलित

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

आरोग्यमिच्छो परमं च लाभं।

सर्वप्रथम आरोग्य नामक परम लाभ की इच्छा करें।

www.rajteachers.com

केवल पढ़ने के लिए

कृमि नियंत्रण कार्यक्रम

कृमि क्या है ? कृमि यानि पेट के कीड़े वह परजीवी हैं, जो मिट्टी के माध्यम से फैलते हैं। यह मुख्य रूप से तीन प्रकार के हैं; गोल कृमि, विप कृमि, और हुक कृमि।

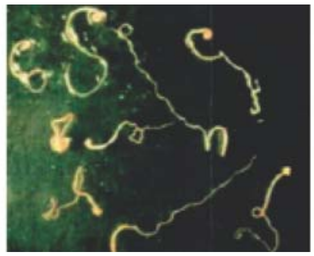

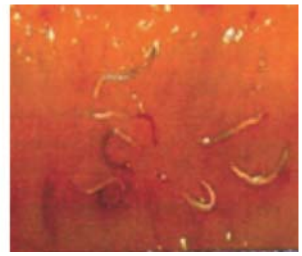

कृमियों के प्रभाव

कुपोषण	बहुत भूख ना लगना
थकान और बेचैनी	खून की कमी
शारीरिक व मानसिक नकारात्मक प्रभाव	मल में खून
पेट में दर्द, सूजन, उल्टी और दस्त	पढ़ाई में मन ना लगना

बचाव व रोकथाम के तरीके–

स्वास्थ्य शिक्षा	स्वच्छता	साफ–सफाई	कृमि नियंत्रण
कृमि संक्रमण के खतरे से बचने के लिए समुदायों को शिक्षित करें	कृमि संक्रमण को सीमित करने हेतु स्वच्छता में सुधार करना	कृमि संक्रमण को सीमित करने के लिए व्यक्तिगत साफ–सफाई में सुधार करना	संक्रमण के स्तर को कम करने के लिए कृमि नियंत्रण दवाई लेना

कृमि नियंत्रण – राज्य सरकार द्वारा संचालित (डीवर्मिंग) कार्यक्रम के अंतर्गत 1–19 वर्ष के सभी बच्चों को एल्वेंडाजॉल की निःशुल्क दवाई स्कूल व आँगनबाड़ी में दी जाती है। एल्वेंडाजॉल की एक गोली कृमि नियंत्रण में मदद करती है।

पाठ 15

अरावली की आत्मकथा

मैं अरावली पर्वत हूँ, मेरी अनेक श्रेणियाँ हैं; जिन्हें तुम अरावली पर्वतमाला कहते हो। धरती मेरी माता है। मेरा जन्म पुरा कैंब्रियन युग में हुआ था। मैं धरती माता की कोख से लगभग 70 करोड़ वर्ष पहले जन्मी विश्व के सबसे प्राचीन पर्वतमालाओं में से एक हूँ। यहाँ बहने वाली हवाओं ने यह मेरे कान में कहा है। मैंने जब से होश संभाला है, इस तथ्य को मैं भी समझने लगा हूँ। अतः मैं धरती माता का सबसे प्राचीन पर्वत हूँ।

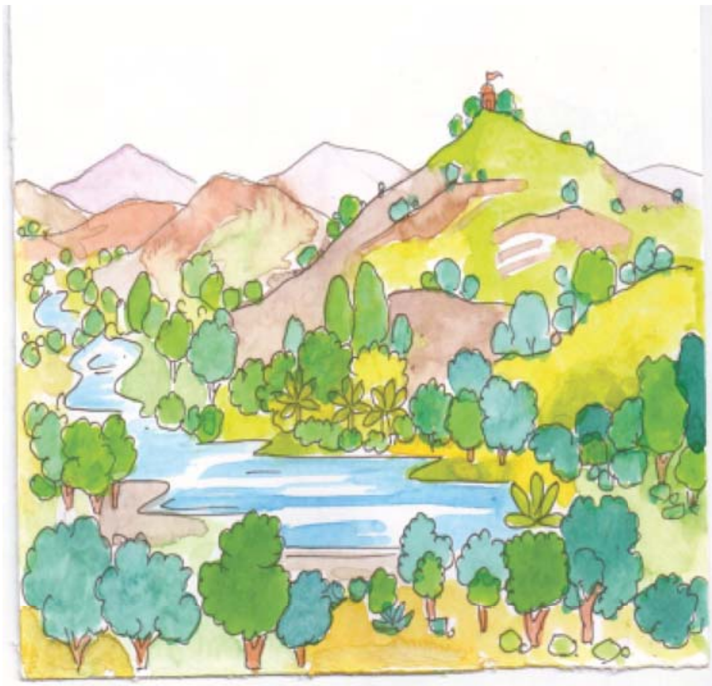

मैं जानता हूँ, धरती माता अंतरिक्ष में प्रतिपल घूम रही है। मैं भी धरती माता की गोद में प्रतिपल अंतरिक्ष में घूमता हूँ। इसके अक्ष पर घूमने को तुम घूर्णन तथा सूर्य के कक्ष में घूमने को परिभ्रमण कहते हो। धरती माता की इन दो गतियों के प्रभाव से मेरी ऊँचाई का घर्षण होता रहा है। इस कारण पिछले करोड़ों वर्षों में मेरी ऊँचाई कम हुई है; किंतु धरती माता की गोद में घूमना मुझे अच्छा लगता है।

मेरा शरीर आग्नेय चट्टानों के आड़े वलय से बना है। अतः मुझे 'आड़ावल' कहा जाता है। यह राजस्थानी भाषा का शब्द मुझे बहुत प्रिय है; क्योंकि मानव सभ्यता के आदिकाल में मैंने यह शब्द आदिवासियों के मुख से सुना था। यह बहुत प्राचीन शब्द है। उस समय आदिमानव की भाषा विकसित हो रही थी। आर्यों के रहने के कारण अंग्रेजों ने इसे 'Aryan Vally' (आर्यों की घाटी) कहा। मुझे आज आप अरावली कहते हो।

भारत मेरा निवास स्थान है। इसके पश्चिमी भाग में मेरा घर है। इसमें मैं दक्षिण से उत्तर की ओर 692 किलोमीटर की लंबाई में फैला हूँ। गुजरात के खेड़ब्रह्म से दिल्ली तक मेरा विस्तार है। राजस्थान मेरे विस्तार के मध्य में है। मेरी चौड़ाई तथा ऊँचाई दक्षिण में अधिक है। यह उत्तर की ओर कम होती जाती है। आप मेरे भौतिक स्वरूप को दक्षिणी अरावली, मध्य अरावली तथा उत्तरी अरावली के रूप में देखते हो। इसमें मुझे कुछ भी आपत्ति नहीं। यह आपके अध्ययन की सुविधा का विषय है।

www.rajteachers.com

मैं तो यह जानता हूँ कि दक्षिणी अरावली का विस्तार खेड़ब्रह्म से लेकर दक्षिणी राजस्थान के कई ज़िलों में है। डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, सिरोही, उदयपुर, चित्तौड़गढ़ तथा प्रतापगढ़ ज़िले मेरे प्रमुख क्षेत्र हैं। सिरोही ज़िले के आबू पर्वत में स्थित मेरे गुरुशिखर की ऊँचाई 1722 मीटर है। यह मेरी सबसे ऊँची चोटी है। उदयपुर के निकट जरगा की पहाड़ियों की ऊँचाई 1431 मीटर है।

मैं इन क्षेत्रों से आगे उत्तर की ओर राजसमंद, भीलवाड़ा, अजमेर तथा पाली, ज़िलों तक फैला हूँ। मेरा यह क्षेत्र मध्य अरावली कहलाता है। उससे आगे सीकर, जयपुर तथा अलवर ज़िलों तथा दिल्ली तक मेरा विस्तार है। आप इसे उत्तरी अरावली कहते हो। दिल्ली के निकट मेरी ऊँचाई घटकर 400 मीटर ही रह जाती है।

मेरा प्रांगण सदैव हरा–भरा रहता है। मेरा दक्षिणी तथा मध्य क्षेत्र सघन वनों का गढ़ है। शायद ही कोई ऐसा वृक्ष हो जो मेरे प्रांगण में न पाया जाता हो। सागवान, शीशम, नीम और आम का तो कहना ही क्या! मेरे दक्षिणी अरावली में स्थित नगर में सागवान की बहुतायत के कारण ही तो सागवाड़ा नाम पड़ा है। बाँसवाड़ा में किसी जमाने में बाँस अधिक होते थे। इस क्षेत्र में पर्वत श्रृंखलाओं की बहुतायत है। इन्हें राजस्थान के निवासी 'डूँगर' कहते हैं। अतः इस भाग में एक नगर का नाम डूँगरपुर भी है।

एक ज़माना था जब मेरे सघन वनों में अनेक चिड़ियाएँ चहकतीं थीं और मोर नाचते थे। मैंने शेरों की दहाड़ें सुनी हैं। मैंने हरिणों के झुंड को कुलाँचें भरते देखा है। उस समय मैं कितना प्रफुल्ल था, आप अनुमान नहीं लगा सकते। उस आनंद की अनुभूति में ही तो आपने मेरे क्षेत्र के आबू, कुंभलगढ़, रणथम्भौर, सरिस्का आदि क्षेत्रों को अभयारण्य घोषित किया है। 'घना पक्षी विहार' तो मेरे प्रांगण के प्राकृतिक सौंदर्य में चार चाँद लगाता है। यहाँ सर्दी की ऋतु में विदेशों से पक्षी आते हैं। यह देखकर ही तो आपने इन सभी रमणीय स्थानों को पर्यटन स्थल बना लिया है; किंतु अब वह सारा सौंदर्य दिन–ब–दिन गायब हो रहा है। शायद आपका अंधा स्वार्थ इसके लिए उत्तरदायी है। मित्रो! मेरा मन कुछ उदास है। मेरी उदासी को समझो!

मुझे मेरे भाग्य पर गर्व रहा है। मुझे प्रकृति ने धरती–धन की दृष्टि से बहुत सम्पन्न बनाया है। लोहा, जस्ता, चाँदी, ताँबा, कोयला, एस्बेस्टस, टंगस्टन आदि अनेक खनिज मेरे क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसलिए ही तो

राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहा जाता है। संगमरमर का तो कहना ही क्या! प्रकृति ने ग्रेनाइट, काले, लाल, सफेद, पीले आदि कई प्रकार के संगमरमर से मेरे क्षेत्र को नवाज़ा है। मकराना के मेरे सफेद संगमरमर से ताजमहल बना है। यह उच्च कोटि का संगमरमर है। विदेशों तक इसका निर्यात होता है। हाँ, मैं चूना पत्थर का भी भंडार हूँ। आपने सीमेंट के सर्वाधिक कारखाने मेरे दक्षिण तथा मध्य क्षेत्र में ही स्थापित किए हैं। मेरे संगमरमर तथा सीमेंट से आपने भव्य भवन खड़े कर दिए हैं। ऐसा करते हुए आप अपने आप को सभ्य मानने लगे हो। कोई बात नहीं! मानो, मैं आपको नहीं रोकता।

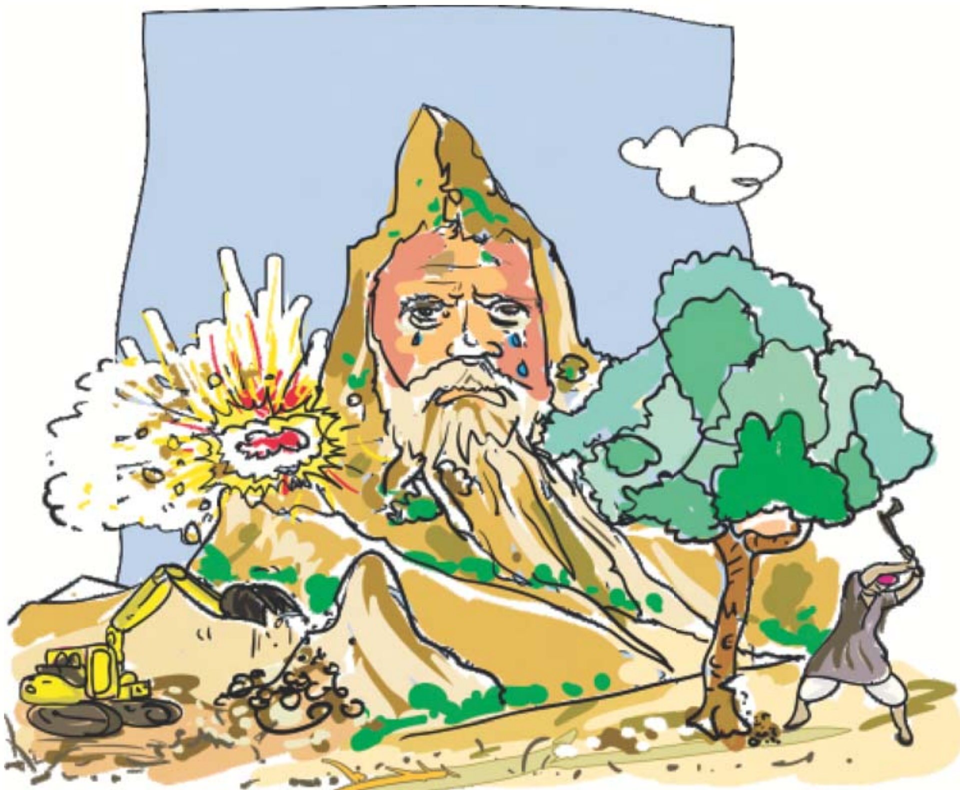

किंतु मित्रो! मेरे मन में एक पीड़ा है। आपने मेरे धरती–धन को खोदकर मुझे खोखला कर दिया है। खानें बना दी हैं। दिन–रात पर्वतों को काट रहे हो। मेरी चट्टानों पर आपके छैनी हथौड़े की चोट से मैं चीख उठता हूँ। मत काटो, मेरी चट्टानों को मत काटो! आप अपने लिए सुविधाएँ जुटाने में मेरे धरती–धन का दुरुपयोग कर रहे हो। आप वृक्ष काट रहे हो। कारखाने खड़े कर रहे हो। प्रदूषण फैला रहे हो। मेरा प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो रहा है। आपके अंधे स्वार्थ ने वन्यजीवों का जीना दूभर कर दिया है। सारा प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है। यह प्रलय को निमंत्रण है दोस्तो! कहाँ गया है आपका विवेक? ऐसा न हो कि मेरा हरा–भरा प्रांगण रेगिस्तान में बदल जाए! रोको, प्रकृति के साथ होते इस अन्याय को रोको। आप स्वयं के पाँवों पर कुल्हाड़ी मत मारो। वरना एक दिन आपको पछताना पड़ेगा।

मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको सद्बुद्धि दे।

–शिव मृदुल

शब्दार्थ

रमणीय	–	सुंदर	प्रलय	–	महाविनाश
निमंत्रण	–	बुलावा	कुलाँचे भरना	–	आनंद मग्न होकर छलाँग लगाना
झुंड	–	समूह	आपत्ति	–	एतराज
सघन	–	घना	बहुतायत	–	अधिकता
प्रफुल्ल	–	खुश, प्रसन्न	भव्य	–	विशाल

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. अरावली पर्वत का जन्म कौनसे युग में हुआ?
2. अरावली पर्वत की ऊँचाई क्यों घट रही है?
3. 'आड़ावल' किस भाषा का शब्द है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. गुरुशिखर स्थित है–
   (क) डूँगरपुर ज़िले में (ख) सिरोही ज़िले में
   (ग) उदयपुर ज़िले में (घ) जालौर ज़िले में
2. खनिजों का अजायबघर कहलाता है–
   (क) राजस्थान (ख) गुजरात
   (ग) पंजाब (घ) हरियाणा

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. ताजमहल का निर्माण किस पत्थर से हुआ है?
2. जरगा पहाड़ियों की ऊँचाई कितनी है?
3. अरावली की चौड़ाई तथा ऊँचाई किस दिशा में अधिक है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. अरावली का प्राचीन नाम 'आड़ावल' क्यों पड़ा?
2. दक्षिणी अरावली का विस्तार कौन–कौन से ज़िलों में है?
3. अरावली पर्वत में कौनसे खनिज मिलते हैं?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. अरावली क्या देखकर प्रफुल्ल होता था? पाठ के आधार पर वर्णन कीजिए।

www.rajteachers.com

2. 'किंतु मित्रो! मेरे मन में एक पीड़ा है।' अरावली पर्वत की पीड़ा को विस्तार से लिखिए।

भाषा की बात

1. चिड़ियाएँ चहकती हैं। शेर दहाड़ते हैं। इसी प्रकार अन्य पशु–पक्षियों की आवाज़ों को क्या कहते हैं? लिखिए।
2. पाठ में आए व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों को छाँटिए।
3. 'यहाँ बहने वाली हवाओं ने यह मेरे कान में कहा है।' हवा का कान में कहना भाषा का विशिष्ट प्रयोग है। प्राकृतिक घटकों को लेकर ऐसे ही कुछ अन्य वाक्य बनाइए।
4. इस पाठ में हिंदी भाषा के साथ अंग्रेजी, राजस्थानी तथा उर्दू के शब्द भी आए हैं; जैसे– 'ज़माना' उर्दू भाषा का शब्द है। ऐसे ही उर्दू, अंग्रेजी तथा राजस्थानी के शब्द छाँटिए व सूची बनाइए।

पाठ से आगे

1. 'अरावली की आत्मकथा' में आपने पढ़ा कि अंधे स्वार्थ के कारण आज पहाड़ों का प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट हो रहा है। पहाड़ों के प्राकृतिक संतुलन को बिगड़ने से बचाने के लिए हम क्या–क्या कर सकते हैं?
2. आदिवासी समाज प्रकृति के अत्यंत समीप रहा है। आदिवासियों ने प्रकृति को बचाने में कैसे मदद की है?

शिक्षक के लिए

बच्चों को 3 या 6 समूह में बाँटें। उन्हें नीचे लिखे अनुसार कार्य बाँटें।

(1) अरावली पर्वत किन–किन राज्यों में फैला हुआ है? लिखिए।

(2) अरावली पर्वत की गोद में बसे शहरों के नाम लिखिए।

(3) अरावली पर्वत में बने अभयारण्य व उनकी विशेषताएँ लिखिए।

अब इन्हें मानचित्र में दिखाते हुए प्रस्तुत कराएँ।

यह भी करें

1. आपने 'अरावली की आत्मकथा' पढ़ी। आत्मकथा हिंदी की एक महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें लेखक स्वयं अपनी कहानी कहता है। आप भी अपने बारे में कुछ लिखकर कक्षा में सुनाइए।
2. अरावली से जुड़ी कोई कविता तलाशिए और भित्ति पत्रिका में प्रकाशन हेतु शिक्षक/शिक्षिका को दीजिए।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

पेड़ लगाएँ, पेड़ बचाएँ।

पानी बचाएँ, धरती बचाएँ, देश बचाएँ।

पर्यावरण का रखें ध्यान, तभी बनेगा देश महान।

www.rajteachers.com

पाठ 16

राजस्थानी काव्य

दोहा

इला न देणी आपणी, हालरियाँ हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बड़ाई माय।।
नहँ पड़ोस कायर नराँ, हेली बास सुहाय।
बलिहारी उण देसड़ै, माथा मोल बिकाय।।
भाभी हूँ डौढ़ी खड़ी, लीधाँ खेटक रूक।
थे मनुहारौ पाहुणाँ, मेड़ी झाल बंदूक।।

— **सूर्यमल्ल मीसण**

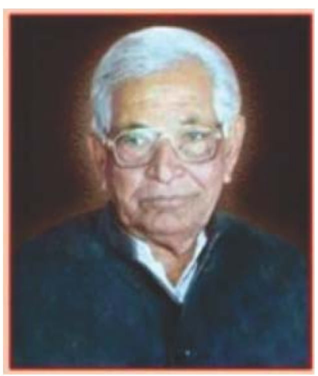

वूठ कळायण! मुरधरा पूरण आखी आस।
तो तूठ्यां रूड़ी रुतां, मौजां बारां मास।।
दे दरसण, दोरी धरा, निस–दिन जोवै बाट।
कदे कळायण आवसी, दुखड़ा देसी काट।।
तीखा तावड़िया तपै, झळ–बळ लूवां जोर।
किरसाणां रा डीकरा, खेत सुधारै खोर।।

— **नानूराम संस्कर्ता**

सोरठा

पाटा पीड़ उपाव, तन लागाँ तरवारियाँ।
बहै जीभ रा घाव, रती न ओषद राजिया।।
मुख ऊपर मीठास, घट माँही खोटा घड़ै।
इसड़ा सूं इखळास, राखीजै नहँ राजिया।।
कारज सरै न कोय, बळ प्राक्रम हीमत बिना।
हलकार्‌याँ की होय, रंग्या स्याळाँ राजिया।।
गण – औगण जिण गाँव, सुणै न कोई साँभळै।
मच्छगळागळ माँय, रहणो मुसकल राजिया।।

—**कृपाराम**

शब्दार्थ

इला	–	पृथ्वी	निस–दिन	–	रात–दिन
डौढ़ी	–	ड्योढ़ी / मुख्य द्वार	स्याळ	–	सियार
मेड़ी	–	अटारी / ऊपर कर भाग	भोत	–	बहुत
पाहुणाँ	–	मेहमान	औगण	–	अवगुण
खेटक	–	ढ़ाल	पाटा	–	पट्टी
रूक	–	तलवार	उपाव	–	उपाय
कळायण	–	काली घटा	खोटा	–	बुरा
तूठ्यां	–	प्रसन्न होने से	हेली	–	सखी
रुत	–	मौसम, ऋतु	दोरी	–	परेशान

अभ्यास कार्य

पाठ से

सोचें और बताएँ

1. पालने में वीरता का गुण कौन सिखाती है?
2. संकलित दोहे व सोरठे किस भाषा में है?
3. मरुधरा का मौसम अधिकांशतः कैसा रहता है?

लिखें

बहुविकल्पी प्रश्न

1. कवि सूर्यमल्ल मीसण ने नारी के जिस रूप को उभारा है वह है–
   (क) श्रृंगार प्रिय (ख) अबला (ग) वीर (घ) हास्य प्रिय ( )
2. कवि कृपाराम ने अपने सोरठों में संबोधित किया है–
   (क) रामिया को (ख) जीवड़ा को (ग) भानिया का (घ) राजिया को ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

1. थे मनुहारौ .... मेड़ी झाल बंदूक।
2. कदे .... आवसी, दुखड़ा देसी काट।
3. बहै .... रा घाव, रती न ओषद राजिया।
4. पूत सिखावै ...., मरण बड़ाई माय।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. वीर माता अपने शिशु को क्या सिखाती है?
2. वीर नारी कैसे पड़ोसी नहीं चाहती ?
3. ननद भाभी से क्या आग्रह करती है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. मरुधरा की आशाओं को कौन पूरा करता है?
2. रात–दिन काली घटाओं का इंतजार कौन करती है?
3. कृपाराम के अनुसार कैसे लोगों से सम्पर्क नहीं रखना चाहिए?

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

1. किस प्रकार के घावों का कोई इलाज नहीं है?
2. कार्य सिद्धि हेतु कौन से गुण जरूरी हैं?
3. किसान का परिवार कैसे मौसम में खेत में काम करता है?

भाषा की बात

1. नीचे दिये राजस्थानी शब्दों के हिंदी रूप लिखिए–
   रुत, किरसाण, डौढ़ी, मुसकल, स्याळ
2. कवि नानूराम संस्कर्ता के दोहों में खेती–बाड़ी से जुड़ी शब्दावली का प्रयोग हुआ है। अपने अंचल की स्थानीय भाषा में प्रयुक्त रसोई एवं खान–पान की शब्दावली की सूची बनाइए।
3. 'गण–औगण जिण गाँव.......।' उक्त पद में 'ग' वर्ण का दोहरान हुआ है। संकलित रचनाओं में से ऐसे चरण छाँटिए जिनमें वर्णों की आवृत्ति हुई हो।
4. दोहों में पंक्ति के अंत में तुक मिलता है। जैसे– हुलराय व माय। कृपाराम के सोरठों को पढ़कर पहचान कीजिए कि उनमें तुक का मिलान कहाँ हुआ है?

पाठ से आगे

1. राजस्थान के इतिहास से ऐसी दो नारियों के नामों का उल्लेख कीजिए जिन्होंने अपने कार्यों से वीरता का आदर्श प्रस्तुत किया हो।
2. मरुस्थलीय परिवेश में बारिश उत्सव की तरह होती है। अपने अंचल में बारिश के माहौल का वर्णन कीजिए।

यह भी करें

1. प्रस्तुत पाठ में आपने राजस्थानी भाषा के तीन कवियों की रचनाएँ पढ़ीं। अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से राजस्थानी के तीन अन्य कवियों की रचनाओं का संकलन कर अपनी डायरी में लिखिए।
2. पाठ में संकलित दोहों/सोरठों को कंठस्थ कर उनको विद्यालय की प्रार्थना सभा अथवा अन्य अवसरों पर सुनाइए।
3. पाठ में संकलित रचनाओं में से दो तीन दोहों/सोरठों का चयन कर उनको सुंदर लिखावट में चार्ट पेपर पर लिखिए व विद्यालय की भित्ति पत्रिका में प्रकाशन हेतु शिक्षक/शिक्षिका को दीजिए।

यह भी जानें

कवि कृपाराम जोधपुर राज्य के खराड़ी गाँव के निवासी खिड़िया शाखा के चारण थे। उनके पिता का नाम जगराम था। राजिया उनका सेवक था। उसे संबोधित करके ये सोरठे कहे गए हैं। ये सोरठे बहुत लोकप्रिय हैं तथा आज भी लोग बात–बात में इनका उपयोग करते हैं।

जानें, गुनें और जीवन में उतारें

Think before you speak, and look before you leave.

बोलने से पहले सोचो और चलने से पहले देखो।

केवल पढ़ने के लिए

चेतावणी रा चूंग्ट्या

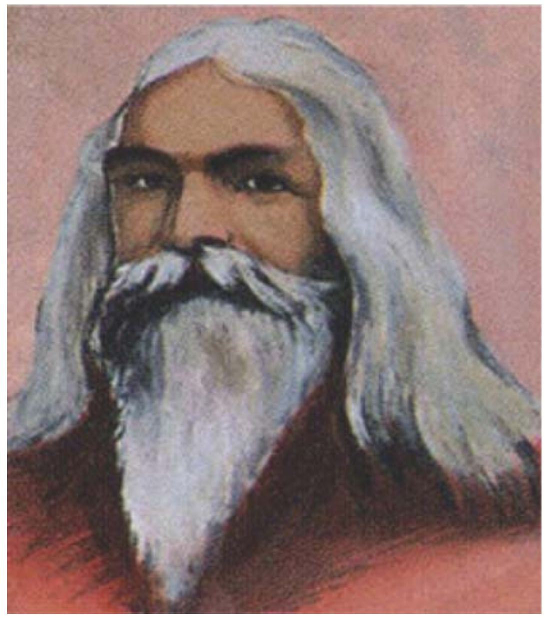

सन 1903 में तत्कालीन वॉयसरॉय लॉर्ड कर्जन ने भारत के जनमानस में अंग्रेज़ों के प्रति राजभक्ति की भावना उत्पन्न करने के लिए ब्रिटिश सम्राट के सिंहासन पर बैठने के उपलक्ष में सम्राट के प्रतिनिधि ने दिल्ली में एक विशाल दरबार बुलाया। वह चाहता था कि उसके दरबार में सभी राजा राजसी ठाट–बाट और वैभव के साथ सम्राट के प्रतिनिधि के अभिनंदन हेतु जुलूस में उपस्थित हों। स्वाभिमानी मेवाड़ के महाराणा फतह सिंह ने पहले तो अनिच्छा प्रकट की, परंतु लार्ड कर्जन के अत्यंत विनम्र आग्रह एवं चाटुकार दरबारियों के दबाव में उन्होंने भी उस दरबार में उपस्थित होना स्वीकार कर लिया और वे अपनी स्पेशल रेलगाड़ी द्वारा दिल्ली चल पड़े। मेवाड़ के महाराणा फतहसिंह को दिल्ली दरबार में जाने से रोकने के लिए केसरी सिंह बारहठ ने डिंगल में 'चेतावणी रा चूंग्ट्या' नामक 13 सोरठे रचे जो साहित्य के साथ–साथ राजस्थान के राजनीतिक इतिहास की भी निधि बने हुए हैं। इन सोरठों को पढ़कर महाराणा ने दरबार में नहीं जाने का संकल्प लिया। इस घटना ने समूचे राजस्थान में अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ एक नवीन उत्साह का संचार कर दिया। इनमें से पाँच सोरठे यहाँ पढ़ने के लिए प्रस्तुत हैं–

पग पग भम्या पहाड़, धरा छांड राख्यो धरम।
(ईसू) महाराणा मेवाड़ हिरदे बसिया हिंद रै।।

भयंकर मुसीबतों में दुःख सहते हुए मेवाड़ के महाराणा नंगे पैर पहाडों में घूमे, घास की रोटियाँ खायीं फिर भी उन्होंने हमेशा धर्म की रक्षा की। मातृभूमि के गौरव के लिए वे कभी कितनी ही बड़ी मुसीबत से विचलित नहीं हुए। उन्होंने हमेशा मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वाह किया है। वे कभी किसी के आगे नहीं झुके। इसीलिए आज मेवाड़ के महाराणा हिंदुस्तान के जन–जन के हृदय में बसे हैं।

घण घलिया घमसांण, (तोई) राण सदा रहिया निडर।
(अब) पेखँतां फरमाण, हलचल किम फतमल! हुवै।।

अनगिनत व भीषण युद्ध लड़ने के बावजूद भी मेवाड़ के महाराणा कभी किसी युद्ध से न तो

विचलित हुए और न ही कभी किसी से डरे। उन्होंने हमेशा निडरता ही दिखाई। लेकिन हे महाराणा फतह सिंह ऐसे शूरवीर कुल में जन्म लेने के बावजूद लॉर्ड कर्जन के एक छोटे से फरमान से आपके मन में किस तरह की हलचल पैदा हो गई। यह समझ से परे है।

गिरद गजां घमसांण, नहचौ धर माई नहीं।
(ऊ) मावै किम महाराण, गज दोसै रा गिरद में।।

मेवाड़ के महाराणाओं द्वारा लड़े गए अनगिनत घमासान युद्धों में इतने हाथी व सैनिक होते थे कि उनके लिए धरती कम पड़ जाती थी। आज वे महाराणा अंग्रेज़ सरकार द्वारा २०० गज के कक्ष में आयोजित समारोह में कैसे समा सकते हैं? क्या उनके लिए यह जगह काफी है?

औरां ने आसान, हांका हरवळ हालणों।
(पण) किम हालै कुल राण, (जिण) हरवळ साहाँ हाँकिया।।

अन्य राजा महाराजाओं के लिए तो यह बहुत आसान है कि उन्हें कोई हाँक कर अग्रिम पंक्ति में बैठा दे। लेकिन राणा कुल के महाराणा को वह पंक्ति कैसे शोभा देगी जिस कुल के महाराणाओं ने आज तक बादशाही फौज़ के अग्रिम पंक्ति के योद्धाओं को युद्ध में खदेड़ कर भगाया है।

नरियंद सह नजरांण, झुक करसी सरसी जिकाँ।
(पण) पसरैलो किम पाण, मान छतां थारो फता!।।

अन्य राजा जब अंग्रेज़ सरकार के आगे नतमस्तक होंगे और उसे हाथ बढ़ाकर झुककर नजराना पेश करेंगे। उनकी तो हमेशा झुकने की आदत है वे तो हमेशा झुकते आए हैं। लेकिन हे सिसोदिया महाराणा! उनकी तरह झुककर अंग्रेज़ सरकार को नजराना पेश करने के लिए तलवार सहित आपका हाथ कैसे बढ़ेगा?

केसरी सिंह बारहठ

www.rajteachers.com

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है।

समस्त भारतीय मेरे भाई बहन हैं।

मुझे अपने देश से प्रेम है और मुझे इसकी विपुल एवं विविध थातियों पर गर्व है।

मैं सदैव इसके योग्य होने के लिए प्रयत्न करूँगा/करूँगी।

मैं अपने माता–पिता, अध्यापक एवं समस्त बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी तथा प्रत्येक व्यक्ति के साथ शिष्टता का व्यवहार करूँगा/करूँगी।

मैं अपने देश एवं देशवासियों के प्रति निष्ठा बनाए रखने की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

मेरी प्रसन्नता केवल उनके कल्याण एवं समृद्धि में ही निहित है।

।। जय हिंद।।

प्रेरक प्रसंग

एक बूढ़ा आदमी, जिसके बाल सफेद हो गए थे, जमीन खोद रहा था। एक नौजवान ने उस बुजुर्ग को परिश्रम करते देखकर पूछा,''बाबा, यह क्या कर रहे हो ?''

''आम की गुठलियाँ बो रहा हूँ'' बूढ़े ने कहा

''इस उम्र में ? इसके फल कब खाओगे, बाबा ?''

''मैं फल नहीं खा सकता, तो क्या हुआ बेटे, तुम तो खा सकोगे न! मेरे तुम्हारे नाती पोते तो खाएँगे। देखो, वह अमराई मेरे दादा ने लगायी थी, तो उसके फल मैंने खाए। मैं यह आम का पौधा लगा रहा हूँ, इसके फल मेरे नाती–पोते खाएँगे।

नमाज़ समाप्त हुई। लोग आपस में गले मिल रहे हैं। बूढ़े और बच्चे सभी मगन हैं। मिठाई और खिलौनों की दुकानों का जमघट शुरू हो गया। उधर दुकानों की कतारें लगी हैं। तरह–तरह के खिलौने हैं। सिपाही और मुजरिम, राजा और वकील, भिश्ती और धोबी ! वाह, कितने सुंदर खिलौने हैं। बस, अब बोलना ही चाहते हैं! महमूद सिपाही लेता है, खाकी वर्दी और लाल पगड़ी वाला, कंधे पर बंदूक रखे हुए। मालूम होता है अभी कवायद किए चला आ रहा है। मोहसिन को भिश्ती पसंद आया है–कमर झुकी हुई है, ऊपर मशक रखी हुई है। नूरे को वकील से प्रेम है– काला चोगा, नीचे सफेद अचकन, अचकन के सामने की जेब में घड़ी, सुनहरी जंजीर, एक हाथ में कानूनी पोथा लिए हुए। मालूम होता है, अभी–अभी अदालत से बहस किए चले आ रहे हैं। ये सब दो–दो पैसों के खिलौने हैं। हामिद के पास कुल तीन पैसे हैं। वह इतने महँगें खिलौने कैसे ले ?

खिलौनों के बाद मिठाइयों का नंबर आता है। किसी ने रेवड़ियाँ ली हैं, किसी ने गुलाब जामुन। मजे से खा रहे हैं।

मिठाइयों के बाद कुछ दुकानें लोहे की चीजों की थीं। लड़कों के लिए यहाँ कोई आकर्षण नहीं था। वे सब आगे बढ़ जाते हैं। अकेला हामिद लोहे की दुकान पर रुक जाता है। कई चिमटे रखे हुए हैं। उसे खयाल आया दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटी उतारती है तो हाथ जल जाता है। अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दे तो, वह कितनी प्रसन्न होगी ! फिर उस की अंगुलियाँ कभी न जलेंगी।

मुंशी प्रेमचंद

(ईदगाह कहानी से)

www.rajteachers.com

सरिता

यह लघु सरिता का बहता जल।
कितना शीतल, कितना निर्मल,
हिमगिरि के हिम से निकल–निकल।
यह विमल दूध–सा हिम का जल,
कर–कर निनाद कल–कल, छल–छल।
यह लघु सरिता का बहता जल।

ऊँचे शिखरों से उतर–उतर
गिर–गिर, गिरि को चट्टानों पर।
कंकड–कंकड़ पैदल चलकर,
दिन–भर, रजनी भर, जीवन–भर।
धोता वसुधा का अंतस्तल
यह लघु सरिता का बहता जल।

हिम के पत्थर वे पिघल–पिघल,
बन गए धरा का वारि– विमल।
सुख पता जिससे अधिक विकल
जी–पीकर अंजलि–भर मृदु जल।
यह लघु सरिता का बहता जल।

कितना कोमल, कितना वत्सल है
जननी का वह अंतस्तल।
जिनका यह शीतल करुणा–जल,
बहता रहता युग–युग अविरल।
गंगा–यमुना, सरयू निर्मल,
यह लघु सरिता का बहता जल।।

गोपाल सिंह नेपाली

www.rajteachers.com